मुक्ति का संघर्ष

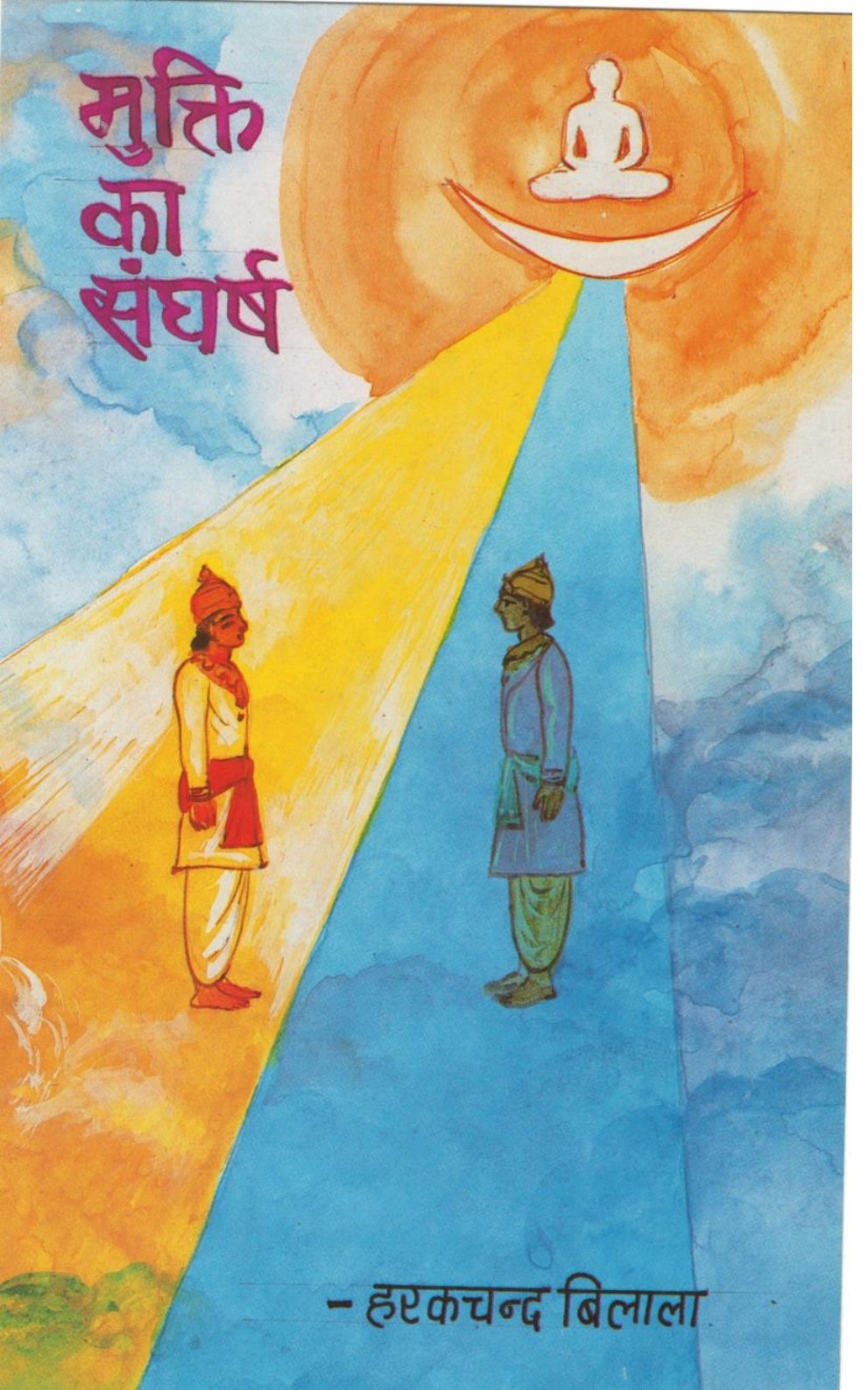

- हरकचन्द बिलाला

प्रकाशकीय

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, इन्दौर के माध्यम से श्री हरकचन्दजी बिलाला द्वारा लिखित 'मुक्ति का संघर्ष' पुस्तक के इस द्वितीय संस्करण का प्रकाशन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

प्रवचनसार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा एवं समयसार कलश टीका जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन इस ट्रस्ट के माध्यम से किया जाता है। प्रकाशन के क्षेत्र में किया गया हमारा यह प्रयास आशातीत रूप में सफल हुआ है। इस सफलता ने हमारा उत्साह बढाया है। 'मुक्ति का संघर्ष' प्रकाशन इसी का प्रतिफल है।

'मुक्ति का संघर्ष' नाटक शैली में लिखी गई कृति है, इसमें सांसारिक दुःखों से मुक्त होने का मार्ग प्रशस्त किया गया है। कृति की रचना का मुख्य आधार भैया भगवतीदास की काव्य कृति 'चेतन कर्म चरित्र' है। आशा है पाठकगण मोह का नाश कर मुक्ति पथ की ओर अग्रसर होंगे।

प्रस्तुत कृति के लेखक श्री हरकचन्दजी बिलाला सफल व्यवसायी तो हैं ही तत्त्व के गहरे अभ्यासी भी हैं। कुशल वक्ता व प्रवचनकार के रूप में भी समाज में उनका समुचित समादर है। कृति के सम्बन्ध में अधिक तो क्या लिखें लेखक ने 'अपनी बात' में इस सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की है।

पुस्तक के प्रकाशन में जिन महानुभावों ने अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया है उनके हम हृदय से आभारी हैं। साथ ही पुस्तक के लेखक श्री हरकचन्दजी बिलाला तथा प्रकाशन विभाग के प्रभारी अखिल बंसल बधाई के पात्र हैं। आप सभी इस कृति से लाभान्वित हों इसी भावना के साथ –

विनीत :

अध्यक्ष
श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट
इन्दौर (म.प्र.)

महामंत्री
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
जयपुर (राज.)

प्रस्तुत संस्करण की कीमत कम करने वाले दातारों की सूची

1. श्री हीरालाल रायचन्दजी गाँधी, मुम्बई	1000.00
2. श्रीमती श्रीकान्ताबाई ध.प. श्री पूनमचन्दजी छाबड़ा, इन्दौर	251.00
3. ब्र॰ श्री हीरालाल खुशालचन्दजी दोशी, माण्ड्वे	251.00
4. श्री शान्तिनाथ सोनाज, अकलूज	251.00
5. श्री विमलकुमारजी जैन, 'नीरू केमिकल्स', दिल्ली	251.00
6. श्रीपालजी जैन घाटोल, बाँसवाडा	200.00
7. श्रीमती पानादेवी मोहनलालजी सेठी, गोहाटी	101.00
8. श्री माणकचंदजी पाटनी, गोहाटी	101.00
9. श्रीमती गुलाबीदेवी लक्ष्मीनारायणजी रारा, शिवसागर	101.00
10. श्रीमती इन्द्रमणीदेवी स्व. आनन्दीलालजी, रामगढ़केन्ट	101.00
11. श्री शान्तिकुमारजी जैन, ग्वालियर	101.00
12. श्रीमती शकुन्तलादेवी बेराटे, आबूजा	101.00
13. श्रीमती सुभद्रा जैन, नागपुर	101.00
14. श्री शिखरचन्दजी जैन, छिन्दवाड़ा	101.00
15. श्री प्रमोद भारिल्ल, करेली	101.00
16. श्री धनराजजी जैन, अमीनगसराय	101.00
17. श्री उदयचन्दजी जैन, घुवारा	101.00
कुलराशि :	3214.00

अपनी बात

कुछ वर्ष पूर्व मन में विचार उत्पन्न हुआ था कि जीव के गुण परिणामों को पात्र बनाकर , उसके मिथ्यात्व दशा से सिद्ध-दशा तक पहुँचने की मंगल यात्रा का प्रस्तुतिकरण किया जाय। कुछ लिखना प्रारम्भ भी किया, परन्तु इस विषय में कल्पना-पृष्ठभूमि धुँधली होने के कारण कलम रुकी रही। तब किसी समय सुकवि ' भैया भगवती दास' की काव्य कृति 'चेतन कर्म-चरित्र' पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इससे धुँधलापन मिटा, परिकल्पना स्पष्ट हुई, लेखनी को सहारा मिला और वह गतिमान हो चली ! अस्तु !!

'मुक्ति का संघर्ष ' उस जीवात्मा की कथा है, जो अज्ञान और मिथ्यात्व की जड़ अवस्था से ऊपर उठकर अपनी पहिचान करता है और शनैः शनैः अपने को मोहपाश से छुड़ाता हुआ, अन्ततः सम्पूर्ण कर्मों का नाश कर मुक्ति-सुन्दरी का वरण करता है। मुक्ति प्राप्त करने के सद्प्रयास में जीवात्मा समूची मोह-वाहिनी से कैसा दुर्द्धर संघर्ष करता है, इसी का दिग्दर्शन इस नाटक में किया गया है। इसमें आत्मा के मुक्ति प्राप्त करने का कथा-क्रम उसके गुण-परिणामों को ही पात्र बनाकर प्रतीकात्मक रूप से गुम्फित किया गया है।

प्रतीक रचना होने के कारण इस कृति में यद्यपि जिनागम के सैद्धान्तिक पक्ष को ध्यान में रखते हुए ही प्रत्येक पात्र के चरित्र के अनुकूल उसके संवाद लिखने का विनम्र प्रयास किया गया है, तथापि अनेक स्थलों पर पात्रों के मुख से मानवीय संव्यवहार का निर्वाह करने वाले कथोपकथन भी कहलवाना पड़े हैं। इनका सिद्धान्तों अथवा पात्रों के मूल चरित्र से कोई प्रयोजन नहीं है। इसी प्रकार नाटक की विधा के अनुसार भी कतिपय संवाद लिखना पड़े हैं।

इसमें 'चेतनराज' मुख्यतः पर्यायार्थिक नय विवक्षित जीवात्मा ही है। किन्तु एकाधिक अवसर पर विवेककुमार और ज्ञानदेव अपनी मानसिकता में उसे शुद्ध-द्रव्यार्थिक नय विवक्षित त्रिकाल शुद्ध चैतन्य स्वभावी भगवान आत्मा के रूप में भी देखते हैं। एक रोचक तथ्य सुकृतकुमार के विषय में भी है— निष्ठापूर्वक सदा चेतनराज के साथ रहने को दृढ़ प्रतिज्ञ होने पर भी वह मुक्ति के संघर्ष में परमार्थतः बाधक और अनुपादेय है। वह जो भी कुछ करता है, उसका सम्पूर्ण लाभ मोहराज को ही प्राप्त होता है, चेतनराज को किंचित् नहीं। अस्तु !!

प्रस्तुत कृति में गुणस्थानों का सामान्य स्वरूप दर्शाया गया है। किन्तु जीव मुक्ति के मार्ग में इसी क्रम से अग्रसर होता हो, यह अनिवार्य नहीं। उदाहरणार्थ— यह आवश्यक नहीं कि जीव मिथ्यात्व गुणस्थान से प्रथमोपशम सम्यक्दर्शन की

प्राप्ति के लिये सर्वप्रथम चौथा गुणस्थान ही प्राप्त करे, वह प्रथम गुणस्थान से पाँचवां अथवा सातवां गुणस्थान भी प्राप्त कर सकता है। यह भी आवश्यक नहीं कि वह 'सासादन' में आए ही, गिरते समय वह "सम्यक-मिथ्यात्व" प्रकृति का उदय आने पर तीसरे गुणस्थान में अथवा 'मिथ्यात्व प्रकृति' का उदय आने पर पहले गुणस्थान में भी आ सकता है। और गिरे नहीं तो पुरुषार्थ पूर्वक गुणस्थान परिपाटी अनुसार ऊपरवाले गुणस्थान भी प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार यह भी आवश्यक नहीं कि जीव उपशम श्रेणी पहले मांडे ही, फिर क्षपक श्रेणी मांडे। यह संभव है कि वह उपशम श्रेणी मांडे ही नहीं और अनन्तानुबन्धी का विसंयोजन करके, क्षायिक समकिती होकर, सीधे क्षपक श्रेणी मांड ले और केवलज्ञान की प्राप्ति कर ले। हाँ, यह नियम अवश्य है कि क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति के बिना जीव क्षपक श्रेणी पर आरोहण नहीं कर सकता। इत्यादि !!

नाटक में चतुर्थ आदि गुणस्थानों का क्रमशः निरूपण, उनका स्वरूप दर्शाने के आशय से ही किया गया है। अव्रतपुर, देशव्रतपुर, प्रमत्तपुर, अप्रमत्तपुर और उपशम तथा क्षपक श्रेणी के नगरों आदि से सम्बन्धित पृथक्-पृथक् दृश्य इसी अभिप्राय से लिखे गए हैं। अस्तु !!

एक बात यह भी है कि यह कृति कोई सैद्धान्तिक रचना न होकर, एक नाटक है, अतः इसमें सिद्धान्त की दृष्टि से तर्क व्याप्ति की अपेक्षा रखना उचित न होगा। अतएव पाठक वृन्द से मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे तर्क-व्याप्ति का आग्रह छोड़कर रचना के भाव-पक्ष पर अधिक बल दें। हम सभी साधर्मी जन का ध्येय तो अन्ततः यही है कि अनादिकालीन संसार दुःखों का अन्त करने के लिये, हम स्वशुद्धात्मा के आश्रय से मोह का अभाव करें और अविलम्ब ही मोक्ष-सुख को प्राप्त करें। यही हम सबके लिये कल्याणकारी है, परम मंगलकारी है।

भाषा, भाव, विषय की अभिव्यक्ति आदि की दृष्टि से यह कृति कितनी सफल हो सकी है, इसका मूल्यांकन सुविज्ञ पाठकों को करना है। आशा है कि नाटक के मंचन में भी विशेष कठिनाई नहीं आएगी।

अन्त में, इसमें हुई त्रुटियों के लिये साभार क्षमा याचना करते हुये मैं विद्वत्जन से विनती करना चाहूँगा कि वे उन त्रुटियों से मुझे अवश्य अवगत कराएँ।

धन्यवाद ! जय जिनेन्द्र !!

अशोक नगर (म॰ प्र॰) **विनीत**

शुभ मिती श्रुत पंचमी **हरकचंद बिलाला**

वीर निर्वाण संवत २५२०

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र –

कर्मदेव	–	कर्म का प्रतीक।
धर्मदेव	–	धर्म का प्रतीक।
चेतनराज	–	जीवराजा।
ज्ञानदेव	–	चेतनराज के प्रधान अमात्य।
चारित्रवीर दर्शनश्री वीर्यवर	–	चेतनराज के परिजन एवं प्रमुख योद्धा।
विवेककुमार	–	चेतन कुल का प्रधान गुप्तचर, सेनापति एवं महासुभट।
मोहराज	–	मोहपुरी का राजा।
मिथ्यात्वराज	–	मोहराज का प्रधान सेनाधिपति।
रागराज द्वेषराज	–	मोहराज के मंत्रीद्वय।
ज्ञानावरण दर्शनावरण अन्तराय वेदनीय आयु नाम गोत्र	–	मोहराज के सेना नायक।
कामकुमार	–	मोहराज का प्रधान गुप्तचर।
सुकृतकुमार दुष्कृतकुमार	–	वस्तुतः वेदनीय और कुबुद्धिदेवी के पुत्र किन्तु प्रगट रूप से चेतनराज और कुबुद्धिदेवी के पुत्र
सत्य अहिंसा अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह	–	सुकृतकुमार के महासुभट।
हिंसा असत्य स्तेय अब्रह्म परिग्रह	–	दुष्कृतकुमार के महासुभट।

* * *

कुमनकुमार	–	दुष्कृतकुमार का गुप्तचर।

स्त्री-पात्र –

कुबुद्धिदेवी	–	मोहराज की पुत्री एवं (अज्ञान दशा में) चेतनराज की पत्नी।
सुबुद्धिदेवी	–	चेतनराज की रानी।
श्रद्धा देवी	–	प्रारम्भ में मिथ्यात्वराज की अनुगामिनी , (बाद में) चेतनराज की परिणीता।
अनन्तानुबंधी	–	मोह-कुल की प्रमुख वीरांगना, मिथ्यात्वराज की चिर-सहचरी।

अन्य-पात्र –

द्वारपाल, नर्तकी, वारुणीबाला, कुछ सभासद, कुछ अनुचर आदि।

प्रसंग प्राप्त नामों का परिचय –

सम्यक्त्वराज	–	चेतनराज एवं श्रद्धादेवी का पुत्र।
मिश्रमोहनीय सम्यक्त्वमोहनीय	–	मिथ्यात्वराज के अंशावतार।
हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद	–	मोह कुल की ९ किशोर वीरांगनाएँ।
अप्रत्याख्यानावरण प्रत्याख्यानावरण संज्वलन	–	मोहराज के परिजन एवं प्रमुख सेना नायक।
क्रोध, मान, माया और लोभ	–	अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन, इन चारों के पृथक्-पृथक् ये ४ (कुल १६) महासुभट।
अविरत कुमार	–	मोह कुल का दुर्द्धर योद्धा।
प्रमत्तकुमार	–	प्रमत्तपुर का नायक , मोहराज का योद्धा
स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोण	–	पाँच इन्द्रियाँ, सेना नायक नाम की वीर बालाएँ।

* * *

: : उपोद्घात : :

[मंच पर व्योम—पटल का दृश्य। चारों ओर हलका नीला प्रकाश। धर्मदेव और कर्मदेव प्रगट होते हैं।]

धर्मदेव :– जय जिनेन्द्र, कर्मदेव !

कर्मदेव :– जय- जिनेन्द्र धर्मदेव !——जिनेन्द्र देव तो सदा जयवन्त ही हैं। किन्तु धर्मदेव, कितने जीव जिनेन्द्र बन पाते हैं? सिद्धों से अनन्त गुना संसारी हैं, और संसारी प्राणियों पर मेरा एक छत्र शासन चलता है। सभी पर मेरा प्रभुत्व है। सभी मेरे दास हैं। मैं उन्हें कठपुतली की तरह नाच नचाता रहता हूँ।

धर्मदेव :– यह तो सत्य है कि सिद्धों से अनन्त गुना संसारी हैं। किन्तु यह कथन सही नहीं कि उन पर आपका प्रभुत्व है। वे आपके दास हैं।

कर्मदेव :– हाथ कंगन को आरसी क्या ? आप स्वयं अवलोकन कर लें। अनन्ते संसारी प्राणी मेरे कथन की सत्यता प्रमाणित कर रहे हैं। मेरे बिना उनके जीवन की कल्पना भी संभव नहीं। मैं ही उनके सुख-दुख और जीवन-मृत्यु का नियन्ता हूँ। एक क्षण में किसी को राजा से रंक बना देना और रंक को राजा बना देना, मेरे बाएँ हाथ का खेल है।

धर्मदेव :– बहुत भोले हो कर्मदेव ! कर्तृत्व के अहंकार में शाश्वत वस्तु- सत्य आपकी आँखों से ओझल हो गया प्रतीत होता है। संसारी प्राणी आपके कारण नहीं, वरन अपने अज्ञान के कारण सुखी दुःखी होते हैं। स्वभाव से स्वयं तो वे परमात्मा हैं, किन्तु अज्ञानवश पर्यायांश में होने वाले राग-द्वेषादि परिणामों से अपने को सर्वथा रागी द्वेषी मानते हैं। आपकी सातारूप उपस्थिति के निमित्त से प्राप्त अनुकूल संयोगों में इष्टबुद्धि करके वे अपने को सुखी मानते हैं, तो असातारूप उपस्थिति के निमित्त से प्राप्त प्रतिकूल संयोगों में अनिष्ट बुद्धि करके अपने को दुःखी अनुभव करते हैं।

कर्मदेव :– यही तो मेरा कहना है। मैं जैसा रूप धारण करके उपस्थित होता हूँ, जीव वैसा ही अनुभव करने को बाध्य है। मेरी सातारूप उपस्थिति उसे हर्ष का वेदन कराती है, और असाता रूप उपस्थिति विषाद का।

धर्मदेव :– नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है। गम्भीरता से विचार कीजिए। यदि आपकी उपस्थिति मात्र से जीव विकार करने को बाध्य हो, तो कोई भी जीव आपसे सर्वथा मुक्त होकर कभी सिद्धत्व प्राप्त ही न कर सके। —— कर्मदेव ! आपका और जीव का एक क्षेत्रावगाह संबन्ध तो अनादि से है। इस पर भी अब तक जो जीव सिद्ध हुए, उन्होंने अपने को आपसे सर्वथा पृथक अनुभव करके ही सिद्धत्व प्राप्त किया। और ऐसा पुरुषार्थ उन्होंने आपकी उपस्थिति में ही किया।

कर्मदेव :– यह तो, जो सिद्ध हुए उनकी बात है। किन्तु संसारी प्राणी तो मेरी उपस्थिति के अनुरूप ही राग-द्वेष करने और सुख-दुःख का अनुभव करने को बाध्य हैं।

धर्मदेव :– सुनो कर्मदेव ! स्वभावतः आत्मा ज्ञान-दर्शन उपयोगमयी चैतन्य महा पदार्थ है। अनन्त अनन्त शक्तियां का पुंज, गुणों का निधान, निरावरण, निरपेक्ष ऐसा त्रिकाल शुद्ध आनन्द-कन्द स्वयं- बुद्ध परमात्मा है। किन्तु अपने इस शाश्वत स्वरूप से च्युत होकर संसारी जीव जब आपके बहुरूपियेपन में व्यामोहित बुद्धि करके मदोन्मत्त होता है, तो उसके हृदय में विभाव परिणामों की उत्पत्ति होती है तभी आपको यह अहंकार करने का अवसर मिल जाता है कि मैंने जीव को रागी-द्वेषी किया, मैंने जीव को सुखी-दुःखी बनाया।

कर्मदेव :– विभाव परिणामों का नियन्ता तो अन्ततः मैं ही सिद्ध हुआ !

धर्म देव :– नहीं कर्मदेव ! विभाव परिणामों का मूल कारण जीव का पर-द्रव्य में एकत्व बुद्धिरूप अध्यास है। जीव अपनी योग्यता से स्वतन्त्रतापूर्वक पर-लक्ष्यी होकर विभावरूप परिणमन करता है, और अपनी योग्यता से ही स्वतन्त्रतापूर्वक स्व-सन्मुख होकर स्वभाव रूप भी परिणमन करता है। इसमें आपका कोई हस्तक्षेप नहीं चलता। हाँ——आप निमित्त अवश्य हैं।

कर्मदेव :– निमित्त तो हूं न ! मेरे निमित्त बिना तो संसारी प्राणी का कोई उपक्रम संभव नहीं।

धर्मदेव :– आप फिर भूलते हैं। सत्य तो यह है कि कार्य की निष्पत्ति विवक्षित द्रव्य की उपादान शक्ति से होती है। निमित्त रूप पर- द्रव्य से नहीं। निमित्त तो आरोपित तत्व है।

कर्मदेव :– (व्यंग से हँसते हुए)- बड़ी हास्यास्पद बात की आपने !..... (कुछ गम्भीर होकर) क्या निमित्त के अभाव में कार्य निष्पत्ति की कल्पना भी की जा सकती है ?

धर्मदेव :– कार्योत्पत्ति का स्वकाल हो और वहाँ निमित्त अनुपस्थित रहे, ऐसी असंभव वस्तु- व्यवस्था लोक में कहीं नहीं है।..... और कर्मदेव ! निमित्त अपेक्षा भी विचार किया जाय तो एक कटु सत्य और है।

कर्मदेव :– (जिज्ञासा पूर्वक) वह क्या ?

धर्मदेव :– जीव के एक समय के विकारी परिणाम को निमित्त करके कार्माण वर्गणा के अनन्तानन्त रजकण मिलकर आपका निर्माण करते हैं। विचार कीजिए, कौन किसका नियन्ता है। ..... कर्मदेव ! यह तो जीव के विकार परिणाम की शक्ति है। निर्विकार परिणाम की शक्ति जानते हैं, क्या है ?

कर्मदेव :– (विस्मय से) क्या ?

धर्मदेव :– शुद्धात्मा के लक्ष्य पूर्वक होने वाले निर्विकार परिणाम का निमित्त पाकर अनन्त काल से बंधे आपके अनन्तानन्त रजकण क्षण- मात्र में निर्जरा को प्राप्त हो जाते हैं। और कर्मदेव ! निर्विकार- स्वरूप सदा एकरूप रहने वाले अखंड, अविनाशी और अनुपम ऐसे परम पवित्र चैतन्य परमात्मा की अनन्त-अनन्त शक्तियों की तो बस आप कल्पना ही कर लें। उसके निर्बाध एवं सुखमय साम्राज्य में तो आपका प्रवेश ही वर्जित है।

कर्मदेव :– (किंचित् रोष पूर्वक) जीव ऐसा ही सर्वशक्तिमान है तो अनादिकाल से चार गतियों, चौरासी लाख योनियों में पंच परावर्तन करता हुआ क्यों भटक रहा है ? सभी संसारी प्राणी मुझसे इसी क्षण क्यों मुक्त नहीं हो जाते।

धर्मदेव :– आपसे मुक्त नहीं हो पा रहे, इसका मूल कारण है कर्मदेव, उनका मिथ्यात्वरूप परिणमन ! मिथ्यात्व के कारण जीव की अपने स्वरूप में आस्था नहीं हो पाती। आस्था के अभाव में ही वह सम्यक परिज्ञान और सम्यक आचरण से वंचित रहता है। संसार का मूल मिथ्यात्व ही है। इसका अभाव होने पर जीव को वीतराग निर्विकल्प स्वसंवेदन ज्ञान की अनुभूति होती है। बस तभी मैं उस भव्यात्मा के हृदय में प्रवेश करता हूँ। यहीं से उसका मोक्षमार्ग प्रारंभ होता है। फिर शनैः शनैः पुरुषार्थ द्वारा जीव आपसे अपने अनादिकालीन सम्बन्धों का विसर्जन करता हुआ, एक दिन पूर्णरूपेण मुक्त हो जाता है। यही चरम- सुख की दशा है। इसे ही मोक्ष कहते हैं। वस्तुतः आत्मा स्वभाव से स्वयं मोक्ष स्वरूप ही है। मैं स्वयं और कुछ नहीं, जीव का स्वभाव- भाव ही हूँ.....।

'वत्थु सहावो धम्मो'

मोक्ष में मेरा ही साम्राज्य है। मैं ज्ञानियों, वीतरागी सन्तों, अरिहन्त भगवन्तों और सिद्धात्माओं के हृदय में निवास करता हूँ।

कर्मदेव :– (रोष पूर्वक) तो मेरा कोई कर्तृत्व आपको स्वीकार नहीं ?

धर्मदेव :– (हँसकर) मुझे नहीं तो क्या ? अज्ञानवश संसारी प्राणी तो आपका कर्तृत्व स्वीकार करते हैं !

कर्मदेव :– (रोष पूर्वक) आप भले ही मेरा उपहास करें ! किन्तु मेरा साम्राज्य भी निस्सीम है। सभी संसारी मेरे दास हैं। उनके बीच आपका कोई आदर नहीं, कोई पूछ नहीं। किंचित् है भी, तो वे पुण्य को ही धर्म के नाम से जानते हैं .....हा ..... हा.....हा.....हा..... ! (अट्टहास करता है) देखो धर्मदेव ! मैं चेतन को कैसे-कैसे नाच नचाता हूँ। (तर्जनी से इंगित करते हुए) स्वयं देख लो। हा.....हा.....हा.....हा !

(अट्टहास करते हुए अर्न्तध्यान हो जाता है। धर्मदेव मुस्कुराते हैं और वे भी अर्न्तध्यान हो जाते हैं। तभी पर्दा गिरता है और मंच पर दूसरे पर्दे के भीतर अगला दृश्य दृष्टिगोचर होता है।)

– पटाक्षेप –

– : प्रथम अंक : –

(प्रथम दृश्य)

[जड़पुर दुर्ग के महल में चेतनराज चतुर्गति के पलंग पर लेटे हुए हैं। द्वार पर हिंसा, असत्य, स्तेय, अब्रह्म और परिग्रह पहरा दे रहे हैं। निकट ही कुबुद्धिरानी और श्रद्धादेवी खड़ी हैं। मेज पर सुराही रखी है, जिसमें मदिरा भरी हुई है। कुबुद्धिरानी सुराही से मदिरा पात्र भरकर चेतनराज को उठाती है।]

कुबुद्धिरानी :– उठियें महाराज, थोड़ी और पी लीजिए।

चेतनराज :– (लड़खड़ाते स्वर में) कहाँ तक पिलाओगी रानी !.....पीते पीते थक गया हूँ।

कुबुद्धिरानी :– इसे चखिये महाराज ! मेरे पिताश्री, महाराज मोहराज ने आपके ही लिए अनेक व्यंजनों से तैयार करके भिजवाई है।

चेतनराज :– (लड़खड़ाते स्वर में) ओह रानी !.....तुम्हारे पिता महाराज मोहराज की हम पर बड़ी अनुकम्पा है।

(कुबुद्धिरानी से मदिरा पात्र लेते हैं।)

श्रद्धादेवी :– हाँ महाराज, त्रिलोकाधिपति महाराज मोहराज आपकी सुख- सुविधा का बहुत ध्यान रखते हैं।

कुबुद्धिरानी :– क्यों न रखेंगे ध्यान ! मैं उनकी बेटी जो आपकी पत्नी हूँ। मेरे भ्राता सेनाधिपति मिथ्यात्वराज के नेतृत्व में आपको मेरे पिताश्री ने ही जड़पुर का नरेश बनाया है। मेरे पुत्र सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार अपने दस महासुभटों की सहायता से सदा आपकी रक्षा को तत्पर रहते हैं।

चेतनराज :– (विस्मय से) क्या कहा ! सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार तुम्हारे पुत्र ?

(कुबुद्धिरानी हड़बड़ाकर श्रद्धादेवी की ओर निहारती है।)

श्रद्धादेवी :– (आश्वस्त करते हुए) महारानी का तात्पर्य है महाराज कि सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार आपके ये दोनों पुत्र सदा आपकी सेवा और रक्षा में तत्पर रहते हैं।

चेतनराज :– (श्रद्धा देवी से) आश्वस्त हुआ देवी !.....(कुबुद्धिरानी का हाथ पकड़कर प्यार से).....आओ रानी ! हमारे पास बैठो ! तुम्हारे प्यार में तो हम अपनी सारी सुध-बुध खो जाते हैं।

(मिथ्यात्वराज का प्रवेश)

मिथ्यात्वराज :– महाराज की जय हो !

चेतनराज :– (उनींदे स्वर में) कौन ?

कुबुद्धिरानी :– भैया मिथ्यात्वराज आए हैं महाराज ! जड़पुर के सेनाधिपति ! आपकी विजय-कामना कर रहे हैं।

चेतनराज :– ओह ! सेनाधिपति.....सेनाधिपति.....मिथ्यात्व.....राज ! कहो.....जड़पुर की.....प्रजा के क्या.....हाल.....हैं।

मिथ्यात्वराज :– आप चिन्ता न करें महाराज। चारों ओर सुख-शान्ति है। प्रजा अनुशासित है। सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार प्रजा की पुण्य-पाप रूप प्रवृत्तियों के लिये पर्याप्त सामग्री जुटाते रहते हैं। मेरे भ्राता अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन अपने महासुभटों क्रोध, मान, माया और लोभ की सहायता से जड़पुर की प्रशासन व्यवस्था सुचारू रूप से चला रहे हैं। त्रिभुवनपति महाराज मोहराज के ज्ञानावरणादि सभी सेनानायक भी अनेक महासुभटों सहित निष्ठापूर्वक अपने-अपने कर्तव्यों का परिपालन करते रहते हैं। इससे जड़पुर की सुरक्षा-व्यवस्था बहुत सुदृढ़ बनी हुई है और महाराज .....(श्रद्धादेवी की ओर दृष्टिपात करते हुए).....श्रद्धादेवी का भी कम उपकार नहीं।.....आप प्रजा को आश्वस्त रखती हैं। प्रजाजन इन पर बड़ा विश्वास करते हैं। यह इनकी ही अनुकम्पा का सुफल है कि जड़पुर की सारी प्रजा हृदय में अटूट जड़ता को धारण किये, पाषाणवत् शान्त और स्थिर है।

श्रद्धादेवी :– (विनत भाव से) इसमें मेरी कोई विशेषता नहीं है महाराज। सब मिथ्यात्वराज का ही प्रताप है। मैं तो इनकी अनुगामिनी-मात्र हूँ।

कुबुद्धिरानी :– (मुस्कुराते हुए मिथ्यात्वराज से) अपनी चिर-सहचरी अनन्तानुबंधी को तो आप विस्मरण ही कर गये।

मिथ्यात्वराज :– (हँसते हुये) उसे स्मरण करने का दायित्व तुम पर छोड़ दिया है ।............... (इस बात पर मिथ्यात्वराज और कुबुद्धिरानी दोनों हँसते हैं ।)

चेतनराज :– (कुछ न समझते हुए) ठीक है सेनाधिपति । जो तुम्हें सूझे, वही करो ।...................... (कुबुद्धिरानी की ओर मुड़कर) .... लाओ रानी ! महाराज मोहराज की सौगात पिलाओ ।

(कुबुद्धिरानी मदिरा-पात्र देती है । चेतनराज मदिरा पीते हैं । मिथ्यात्वराज और कुबुद्धिरानी हँसते हैं । श्रद्धादेवी शान्त खड़ी हैं । तभी मिथ्यात्वराज ताली बजाते हैं । नर्तकी आती है । नृत्य होता है ।)

॥ गीत ॥

मोह वारूणी पीकर दुःख का,
करो त्वरित उपचार ।
मोहराज की अनुकम्पा से,
मिला मधुर उपहार ।
पीकर सब दुःख भूलो उनका,
नित्य करो जयकार ॥ मोह वारुणीपीकर०.... ॥

सुविधा त्रिजग भ्रमण करने की,
मिली अनन्ते बार ।
उनका अनुशासन बंधन ही,
स्वयं मुक्ति का द्वार ॥ मोह वारूणी पीकर०.... ॥
वरद हस्त मिथ्यात्वराज का,
बढ़े न क्यों संसार ।
स्वयं कुमतिरानी हैं तत्पर,
करने को उपकार ॥ मोह वारुणी पीकर०.... ॥

मोह-कृपा से व्यापक जग में,
राग-द्वेष व्यापार ।
काम-क्रोध, मद-लोभ प्रीति ही
भव-भव का आधार ॥ मोह वारूणी पीकर०.... ॥

— पटाक्षेप—

(द्वितीय-दृश्य)

[वन प्रदेश का दृश्य। रानी सुबुद्धिदेवी, ज्ञानदेव, दर्शनश्री, चारित्रवीर वीर्यवर आदि दिखाई दे रहे हैं। सुबुद्धिदेवी एक शिलाखंड पर बैठी हुई हैं ज्ञानदेव टहल रहे हैं। शेष सब सुबुद्धिरानी के पार्श्व में खड़े हैं।]

ज्ञानदेव :– महारानी जी, हमने महाराज चेतनराज से साक्षात्कार करने का बहुत प्रयत्न किया, ... किन्तु अब तक कोई सफलता नहीं मिल पाई है। फिर भी हम हताश नहीं हैं। हमारा प्रयास अविराम चल रहा है।

सुबुद्धिदेवी :– ज्ञानदेव ! एक आपका ही सहारा है। अनादिकाल से अनन्त समय व्यतीत हो गया, मैं परित्यक्ता की तरह अपना जीवन व्यतीत कर रही हूँ। आप सब भी निर्वासित जीवन जीने को बाध्य हैं।

ज्ञानदेव :– महारानी जी ! आपका कथन सत्य है। किन्तु इन परिस्थितियों में किया भी क्या जा सकता है। फिर भी हमने साहस नहीं छोड़ा है। हम इस प्रयत्न में हैं कि येन-केन-प्रकारेण महाराज चेतनराज से साक्षात्कार हो जाय। हमारे गुप्तचर प्रधान विवेक कुमार इस दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं .....एक बार महाराज से भेंट भर हो जाए, फिर ये दुर्दिन न रहेंगे।

(गुप्तचर प्रधान विवेक कुमार का आगमन)

विवेक कुमार :– महारानी की जय हो !..... (ज्ञानदेव की ओर मुख करके) पूज्यवर ज्ञानदेव को आपका यह बालक प्रणाम करता है।

ज्ञानदेव :– आयुष्मान् भव ! क्या समाचार है वत्स ?

विवेक कुमार :– पूज्यवर, मैंने जडपुर दुर्ग में प्रवेश करने की बहुत चेष्टा की। किन्तु मिथ्यात्वराज ने जड़पुर दुर्ग के चारों ओर कड़ा पहरा बैठा रखा है। इसलिए मेरा दुर्ग प्रवेश संभव न हो सका। हाँ, मैंने कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों का अवश्य पता कर लिया है।

ज्ञानदेव :– (हर्षित होकर) स्वस्ति वत्स ! हमें भी उन तथ्यों से अविलंब अवगत कराओ।

विवेक कुमार :– पूज्यवर ! महाराज चेतनराज जड़पुर दुर्ग के महल में बन्दी हैं। दुर्ग पर मोहराज के प्रधान सेनाधिपति मिथ्यांपुर नरेश मिथ्यात्वराज का नियन्त्रण है। महल पर दुष्कृत कुमार अपने पाँच महासुभटों के साथ कड़ा पहरा देता है। सेनाधिपति मिथ्यात्वराज की चिर-संगिनी एक अनंतानुबंधी नाम की वीरांगना है, जिसके नेतृत्व में उसके भ्राता अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन अपने महासुभटों क्रोध, मान, माया, और लोभ की सहायता से जड़पुर का प्रशासन चलाते हैं। मिथ्यात्वराज के पिता मोहराज ने महाराज चेतनराज को धोखे में रखकर उनसे अपनी पुत्री कुबुद्धिदेवी का परिणय करा दिया है।.....और तो और, जिन्हें महाराज चेतनराज की अनुगत होना चाहिए था, वे श्रद्धादेवी भी मिथ्यात्वराज के व्यामोह में फँसी, उनके कुशासन को कल्याणकारी बताकर चेतनराज को भ्रमित किये रहती हैं।

(रानी सुबुद्धिदेवी सिसकने लगती हैं।)

ज्ञान देव :– (सुबुद्धिदेवी से) धैर्य धारण करें, महारानी जी। इस तरह सन्तप्त होने से भला क्या लाभ होगा?.....(विवेक से) .....हाँ, आगे कहो वत्स !

विवेक कुमार :– कुबुद्धिरानी ने महाराज मोहराज द्वारा भेजी गई मोह-मदिरा पिला पिलाकर चेतनराज को इतना बेसुध कर दिया है कि उन्हें अपने-पराए का, हित-अहित का कोई भान नहीं है। और तो और इस व्यभिचारिणी कुबुद्धिरानी ने - - - - - - - - (चुप हो जाता है।)

ज्ञानदेव :– चुप क्यों हो गए ?

विवेक कुमार :– आगे कहने का साहस नहीं होता, पूज्यवर !

ज्ञानदेव :– (सुबुद्धिदेवी की ओर देखते हैं, फिर विवेक कुमार से गम्भीर स्वर में).....हमें सभी कड़वे घूंट पीने होंगे वत्स !- - - - निःसंकोच कहो !

विवेक कुमार :– उस कुलटा रानी कुबुद्धिदेवी ने मोहराज के एक सेनानायक वेदनीय से अपना अवैध संबन्ध बना रखा है। वेदनीय के संसर्ग

से उसे सुकृतकुमार और दुष्कृतकुमार ये दो पुत्र उत्पन्न हुए हैं। किन्तु इन अवैध पुत्रों को वह महाराज चेतनराज के संसर्ग से उत्पन्न हुए बताती है। चेतनराज भी भ्रम से उन्हें अपने ही पुत्र मानते हैं। उनकी इस भ्रामक मान्यता को मिथ्यात्वराज के व्यामोह जाल में फँसी श्रद्धादेवी सदा पुष्ट किया करती हैं।- - - - - - - - किन्तु एक बात विशेष है।

ज्ञान देव :– वह क्या ?

विवेक कुमार :– सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार में परस्पर अनबन रहती है। सुकृत कुमार करुणा और दया की मूर्ति है, जब कि दुष्कृत कुमार कठोर और दुष्ट प्रकृति का है।

ज्ञानदेव :– (मुस्कुराते हुए) अभी अभी तो तुमने कहा था विवेक कि दोनों ही रानी कुबुद्धिदेवी और वेदनीय की सन्तान हैं?

विवेक कुमार :– कहा था, पूज्यवर ! ....किन्तु दोनों की प्रकृति में बहुत भिन्नता है।

ज्ञानदेव :–यह सतही भिन्नता है वत्स ! मूलतः दोनों एक से हैं.....किन्तु इस संबंन्ध में फिर कभी विस्तृत चर्चा करेंगे.....अभी तो एक काम करो। प्रथम तो किसी भी युक्ति से सुकृत कुमार से मित्रता स्थापित करो। फिर सुकृत कुमार की सहायता से महाराज चेतनराज से मिलने की चेष्टा करो।....एक बार महाराज से भेंट भर हो जाए, फिर तो दुर्दिनों को जाते कोई विलंब न होगा।

विवेक कुमार :– जैसी आज्ञा पूज्यवर ! मैं प्रयत्नशील रहूँगा।..... प्रणाम पूज्यवर .....प्रणाम रानी माँ !

(जाता है)....।

– पटाक्षेप –

(तृतीय दृश्य)

[जड़पुर के उद्यान का दृश्य। सुकृत कुमार अपने पाँचों महासुभटों अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के साथ विचार विमर्श की मुद्रा में।]

सुकृत कुमार :- मेरे वीर साथियो ! मैं अनुभव करता हूँ कि माता कुबुद्धि देवी का मेरे प्रतिद्वन्द्वी बंधु दुष्कृत कुमार पर विशेष अनुराग है। मामा मिथ्यात्वराज भी प्रायः उसी का पक्ष लिया करते हैं। महल पर भी दुष्कृत कुमार ने अपने महासुभटों की सहायता से नियन्त्रण कर रखा है। हमारे लिए यह सब असह्य है।

सत्य :- स्वामी ! आपकी आज्ञा की देर है। आपका आदेश मिलते ही, अहिंसा हिंसा को, मैं असत्य को, अस्तेय स्तेय को, ब्रह्मचर्य अब्रह्म को, और अपरिग्रह परिग्रह को क्षण मात्र में परास्त कर देंगे।

सुकृत कुमार :- मेरे वीर साथियो ! मुझे आप सबका पूरा विश्वास है। मैं आप के पराक्रम से भी अनभिज्ञ नहीं।

ब्रह्मचर्य :- तो स्वामी आज्ञा दें। हम महल की ओर कूच करें। और दुष्कृत कुमार के सभी योद्धाओं को पल में परास्त करके महल को अपने अधिकार में कर लें।

सुकृत कुमार :- महल पर अधिकार की बात मत करो। मैं माँ और मामा को अप्रसन्न नहीं करना चाहता .....हाँ, दुष्कृत कुमार से अवश्य संघर्ष करना होगा, वह भी इस तरह की साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे !.....आओ मेरे साथ।

(सभी जाते हैं। कुछ क्षणों बाद मंच पर कुबुद्धिरानी और वेदनीय आते हैं।)

वेदनीय :- (मुस्कुराता हुआ) कहो रानी ! दिन कैसे व्यतीत हो रहे हैं ! तुम्हारे 'पतिदेव' चेतनराज का क्या हाल है ?

('पतिदेव' शब्द पर व्यंग पूर्वक जोर देता है।)

कुबुद्धिरानी :– सब ठीक चल रहा है प्रिय ! चेतनराज पूरी तरह मेरी मुट्ठी में हैं। भैया मिथ्यात्वराज की अनुगत श्रद्धा देवी उन्हें हमारी ओर से सदा आश्वस्त रखती हैं। पिताश्री महाराज मोहराज द्वारा भिजवाई गई मोह-मदिरा पीकर वे सदा मदमस्त पड़े रहते हैं।

वेदनीय :– और अपने पुत्रों सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार के संबन्ध में चेतनराज क्या सोचते हैं !

कुबुद्धिरानी :– सोचने समझने की शक्ति ही कहाँ है उनमें ! बस अपने ही पुत्र मानते हैं, उन्हें वे ! उनकी इस मान्यता को भैया की आज्ञा से श्रद्धादेवी ने बहुत पुष्ट कर दिया है।

(इस पर वेदनीय हँसता है।)

वेदनीय :– (हँसता हुआ) बहुत चतुर हो रानी तुम और तुम्हारे भ्राता।

कुबुद्धिरानी :– (हँसती है ___फिर चिन्तित स्वर में) यह सब तो ठीक है प्रिय। किन्तु सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार परस्पर सदा ही संघर्षरत रहते हैं। इन्हें लड़ता देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। मैंने दोनों को समझाने का अनेक बार प्रयत्न किया किन्तु.....।

वेदनीय :– (बात काटते हुए) व्यर्थ है उन्हें समझाना रानी ! दोनों की प्रकृति भिन्न-भिन्न है। वे समझाने से मानने वाले नहीं। उन्हें अपनी-अपनी प्रकृति के अनुरूप चलने दो।

कुबुद्धिरानी :– लेकिन दोनों सहोदर होकर भी .....।

वेदनीय :– चिन्ता न करो प्रिये ! ..... आओ चलें।

(दोनों हाथ में हाथ पकड़े जाते हैं। कुछ क्षणों बाद एक ओर से अनन्तानुबन्धी और मिथ्यात्वराज का प्रवेश)

मिथ्यात्वराज :– विगत दिनों अपने कुछ कार्यों में इतना व्यस्त रहा कि तुमसे वार्त्तालाप का अवसर ही न पा सका।

अनन्तानुबन्धी :– विचित्र विडंबना है प्रिय। निकट होते हुए भी आपसे मुक्त वार्ता करने के लिये अवसर खोजना पड़ता है !

मिथ्यात्वराज :– क्षमा करें देवी ! कुछ व्यस्तता रही, अन्यथा एकान्त में प्रणय वार्ता के लिये मैं स्वयं बहुत लालायित रहता हूँ। ये मधुर क्षण तो मेरे जीवन की अमूल्य निधि हैं। तुम्हारे बिना एक पल भी रहना मेरे लिये दुष्कर है।

अनन्तानुबन्धी :– (भावुक होकर) और आपके बिना मेरी ही कुशल कहाँ ? (मिथ्यात्वराज के वक्षः स्थल पर अपना सिर रख देती है)........। आपके न होने की कल्पना-मात्र से हृदय सिहर उठता है।.......... (सिर उठाकर मिथ्यात्वराज की ओर देखते हुए)........... मेरा तो नाम-संस्करण ही आपके नाम पर हुआ है।

मिथ्यात्वराज :– (साश्चर्य) नाम संस्करण !.........मेरे नाम पर........ कैसे ?

अनन्तानुबन्धी :– चेतनराज को अनन्तकाल तक संसार परिभ्रमण कराने का सामर्थ्य आपमें ही है।..........इसलिये आप ही 'अनन्त' हैं, और "जहाँ आप वहाँ मैं" इस अनुबन्ध से अनुबन्धित होने के कारण मैं हुई आपकी अनुबन्धिनी। अनन्त की अनुबन्धिनी होने के कारण मैं कहलायी - - - - - - - 'अनन्तानुबंधी'।

मिथ्यात्वराज :– (किंचित् हँसते हुए) वाह ! क्या सुन्दर अर्थ किया है।.......रणक्षेत्र में बड़े-बड़े शूरवीरों की नाकों चने चबाने को विवश करने वाली वीरांगना भाषा और व्याकरण की भी ऐसी मर्मज्ञ है, यह हमें आज ही ज्ञात हुआ..........।

अनन्तानुबन्धी :– (मुस्कुराते हुए, सलज्ज) इस समय मैं वीरांगना नहीं, अपितु अभिसारिका हूँ।.............. (गम्भीर होकर) .... मैंने- जो यथार्थ है, वही कहा है, मेरे प्रिय ! सम्पूर्ण मोह कुल की शक्ति का मूल स्रोत आप ही हैं। मैं जो कुछ हूँ, मात्र आपके कारण। मेरे अप्रत्याख्यानावरण

प्रत्याख्यानावरण आदि भ्रातागण भी आपका संबल पाकर ही अपने उत्कृष्ट शौर्य का प्रदर्शन कर पाते हैं। पूरे मोहकुल को आप पर गर्व है।

मिथ्यात्वराज :– (हंसते हुए) बहुत शीघ्र गम्भीर हो जाती हो प्रिये। ......(गले लगाते हुए प्यार से)......तुम तो मेरी प्राणेश्वरी हो ...... चिर......सहचरी......चिर संगिनी......मेरी प्रेरणा......मेरी शक्ति...... ।

(बहुत देर तक चुप्पी छायी रहती है।)

मिथ्यात्वराज :– (चुप्पी तोड़ते हुए) प्रिये ! तुम्हारे कुशल मार्ग दर्शन में जड़पुर की प्रशासन व्यवस्था बड़ी सुचारू रूप से संचालित है।

अनन्तानुबन्धी :– (समर्पित भाव से) सब आपका ही प्रताप है, अन्यथा यह संभव न होता।

मिथ्यात्वराज :– (हँसते हुए) अपने अद्भुत कौशल से चेतनराज और जड़पुर की प्रजा को जड़ता का प्रसाद देकर उन्हें अपना चरण किंकर...... ।

अनन्तानुबन्धी :– (मिथ्यात्वराज के मुख पर हाथ रखते हुए बीच में ही) बस-बस। ......नगण्य से कृतित्व के लिये भी सराहना के सेतु बाँधने की कला कोई आपसे सीखे ......(बात बदलते हुए भावुकता पूर्वक) ......मेरे सर्वस्व......मेरी बस आपसे यही विनती है कि जीवन में एक पल के लिये भी मुझे अपने से पृथक न रखना......आपके बिना मैं जीवित न...... ।

मिथ्यात्वराज :– (अनन्तानुबन्धी के मुख पर हाथ रखते हुए) ......नहीं देवी ऐसे अशुभ वचन न बोलो। जीवित न रहने की दुःष्कल्पना तो हमारे शत्रुओं को करना चाहिये। ...... (हाथ पकड़कर प्यार से) ...... आओ चलें।

(दोनों जाते हैं।)

— *पटाक्षेप* —

(चतुर्थ-दृश्य)

[सुकृत कुमार अपने पाँचों महासुभटों और अन्य सैनिकों के साथ जड़पुर दुर्ग के महल में प्रवेश करता है। वहाँ दुष्कृत कुमार के महासुभटों से इनकी मुठभेड़ होती है। दुष्कृत कुमार के सभी योद्धा थोड़ी देर में घायल होकर भयभीत से महल छोड़कर भाग जाते हैं। ____ सुकृत कुमार चेतनराज के समीप आता है।]

सुकृत कुमार :– (झुककर अभिवादन करता हुआ) आपका यह पुत्र आप-श्री के चरण कमलों में सादर अभिवादन करता है। महाराज ! मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिये।

चेतनराज :– (उनींदे स्वर में) कौन ?..... सुकृत कुमार।..... आओ वत्स ! तुम्हारे आगमन से हृदय को बड़ी सान्त्वना मिलती है।

सुकृत कुमार :– आपका आशीर्वाद चाहिये, पिता श्री। दुष्कृत कुमार के अनुचर मुझे आपसे साक्षात्कार ही नहीं करने देते थे। आज मैंने उन सबको मार भगाया है। आप आज्ञा दें तो मैं अपने वीर योद्धाओं को महल की रक्षा के लिए आपकी सेवा में यहीं छोड़ जाऊँ।

चेतनराज :– (उनींदे स्वर में) हमारी आज्ञा की क्या आवश्यकता है वत्स ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो। .....हाँ, तुम अवश्य यदा-कदा यहाँ आ जाया करो। तुमसे चित्त को शान्ति मिलती है।

सुकृत कुमार :– आपकी आज्ञा शिरोधार्य है महाराज ! अब अनुमति दीजिए ! चलता हूँ। श्री- चरणों में पुनः प्रणाम करता हूँ।

(प्रणाम करके जाता है।)

— पटाक्षेप —

(पांचवा दृश्य)

[जड़पुर दुर्ग के बाहर का दृश्य। सुकृतकुमार-भ्रमण करता आ रहा है।]

सुकृतकुमार :– (स्वगत्) दुष्कृत और उसके साथियों को जड़पुर से ही निष्कासित करना होगा। अब उसके साथ मेरा निर्वाह संभव नहीं। ..... (कुछ सोचता हुआ) ..... किन्तु माँ और मातुल को इसके लिये सहमत करना कठिन होगा..... देखूंगा ! ..... यह न हो सका तो मैं ही जड़पुर छोड़कर चला जाऊँगा। ..... (फिर कुछ सोचता हुआ .....) ..... किन्तु जाऊँगा कहाँ ? महाराज चेतनराज के बिना तो मैं मुहुर्त भर भी अलग नहीं रह सकता। ..... समझ में नहीं आता कि क्या करूँ..... (एकाएक विचार श्रृंखला टूटती है..अपने चारों ओर देखता है..... तभी वहाँ विवेक कुमार का आगमन.....)

सुकृतकुमार :– तुम कौन हो बंधु ? क्या नाम है तुम्हारा ? लगता है कि प्रथम बार तुम्हें देखा है।

विवेक कुमार :– मेरा नाम विवेक है। आपका शुभ नाम ?

सुकृतकुमार :– मुझे सुकृतकुमार कहते हैं। जड़पुर में रहता हूँ।

विवेक कुमार :– (स्वगत्) ओह ! तो यही सुकृतकुमार है। - - - - (प्रगट में) - - - - - - आपका नाम तो प्रायः सुना करता हूँ। बहुत प्रशंसा सुनी है आपकी। आज मिलकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। मेरा अभिवादन स्वीकार करें।

सुकृतकुमार :– मेरा भी अभिवादन स्वीकार करो बन्धु ! किन्तु - - - - - मेरा नाम - - - - - - मेरी प्रशंसा- - - - - तुम मेरा उपहास कर रहे हो अथवा शुष्क शिष्टाचार का परिपालन। - - - (उदास स्वर में) - - - - स्वजनों से प्रताड़ित और अपने ही अन्तर संघर्षों से पीड़ित मैं - - - - -

विवेक कुमार :– (बात काटते हुए) क्षमा करें, मैं आपका उपहास क्यों करूँगा ? ..... (कुछ क्षण चुप रहकर) ..... लगता है कि आप..... क्या मैं आपके हृदय की पीड़ा जानने का दुःस्साहस कर सकता हूँ ?

सुकृत कुमार : – (निःश्वास भरते हुए) मेरे हृदय की पीड़ा ? ..... क्या करोगे जानकर ?

विवेक कुमार :– संभवतः आपके कुछ काम आ सकूँ।

सुकृतकुमार :– (उदास स्वर में) क्या कर सकोगे तुम ?.....(कुछ देर चुप्पी छायी रहती है.... फिर) .....जानना ही चाहते हो तो सुनो.....मेरा एक सहोदर बंधु है। ..... दुष्कृत कुमार नाम है उसका। मेरी और उसकी प्रकृति में बड़ा अन्तर है.....उतना ही कि जितना पूर्व और पश्चिम में है, अथवा तो शीतलता और उष्णता में है। न उसका कोई कार्य मुझे सुहाता है, न मेरा कोई कार्य उसे। एक प्रकार से हम दोनों परस्पर प्रतिद्वन्द्वी ही हैं। हमारे मातुल मिथ्यात्वराज और माता कुबुद्धिदेवी प्रायः उसी का पक्ष लिया करते हैं। इससे जड़पुर में जैसा वर्चस्व उसका है, वैसा मेरा नहीं। .....स्वजनों के पक्षपातपूर्ण बर्ताव से मेरा हृदय टूट गया है। अपनी पीड़ा किसे कहूँ ..... क्या उपचार करूं ..... कुछ समझ में नहीं आता !

विवेक कुमार :– (सहानुभूति पूर्वक) आपके हृदय की पीड़ा को मैं समझ सकता हूँ। ..... (कुछ देर चुप रहता है .... फिर) .....आपने कहा कि मातुल और माता प्रायः दुष्कृतकुमार का पक्ष लिया करते हैं, किन्तु आपने यह नहीं बताया कि आपके पिताश्री ..... (रूक जाता है)

सुकृतकुमार :– (वाक्य पूरा करते हुए) महाराज चेतनराज .... ! वे ही मेरे पिताश्री हैं।

विवेककुमार :– ओह !.... (बात आगे बढ़ाते हुए) हाँ, तो आपने यह नहीं बताया कि आपके पिताश्री महाराज चेतनराज किसके पक्ष में हैं ?

सुकृतकुमार :– वे न मेरे पक्ष में हैं, न दुष्कृत के। ..... (स्पष्ट करता हुआ)..... जड़पुर में वही होता है, जो मामा मिथ्यात्वराज और माता कुबुद्धिदेवी चाहते हैं। पिताश्री- भी उन्हीं का कहा करते हैं।

विवेक कुमार :– क्या आपने कोई उपाय सोचा है ?

दुष्कृत कुमार :- मेरा एक विचार तो यह हुआ था कि दुष्कृत को जड़पुर से ही निष्कासित करवा दूँ। ....किन्तु मां और मातुल के रहते यह संभव नहीं।.....मैंने यह भी सोचा कि मैं स्वयं ही जड़पुर छोड़कर अन्यत्र चला जाऊं....परन्तु यह भी प्राय: असंभव ही है। .....कारण कि मैं पिताश्री महाराज चेतनराज से मुहुर्त भर के लिये भी अलग नहीं रह सकता। कुछ समझ में .....।

विवेक कुमार :- (कुछ विचार करता हुआ बीच ही में) क्या मैं कोई परामर्श देने की धृष्टता करूँ ?

सुकृतकुमार :- धृष्टता की क्या बात है ? मैं इस विषय पर तुम्हारा परामर्श अवश्य सुनना चाहूँगा।

विवेककुमार :- धन्यवाद। (कुछ रूककर) ..... पूरी वार्त्ता सुनकर मैंने यह जाना कि आप दुष्कृत कुमार के साथ नहीं रहना चाहते। किन्तु उसे जड़पुर से निष्कासित भी नहीं कर सकते और न महाराज चेतनराज को छोड़कर आप जड़पुर का परित्याग ही कर सकते हैं। .....यही न ?

सुकृतकुमार :- (स्वीकार करते हुए) हाँ , ऐसा ही है।

विवेक कुमार :- तो क्यों न आप महाराज चेतनराज सहित जड़पुर छोड़कर अन्यत्र चले जाते। इससे जहाँ दुष्कृत कुमार का कुसंग छूटेगा, वहीं महाराज चेतनराज के वियोग का भी कोई अवसर न होगा।

सुकृतकुमार :- (शंका करते हुए) किन्तु पिताश्री क्यों यह स्वीकार करेंगे ?

विवेक कुमार :- (विश्वास दिलाते हुए) उन्हें इस विषय में सहमत करने का दायित्व मेरा रहा। किन्तु इसके लिये आपको महाराज चेतनराज से मेरा साक्षात्कार कराना होगा।

सुकृतकुमार :- पिता श्री से तुम्हारा साक्षात्कार कराना, मेरे लिये कोई कठिन कार्य नहीं .....(शंकित होता हुआ) .....किन्तु तुम उन्हें कैसे सहमत करोगे।

विवेक कुमार :– मुझे अपने तईं प्रयत्न कर लेने दो। सफल हुआ तो आपकी समस्या का निराकरण हो ही जाएगा, और असफल हुआ तब भी आपकी कोई अतिरिक्त क्षति न होगी। ..... (विश्वास दिलाते हुए) ..... चिन्ता न करें, मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सफल होंगे।

सुकृतकुमार :– (हर्षित होता हुआ) आश्वस्त हुआ बंधु। तुमने मुझे निर्भार कर दिया। .....आज से हम दोनों मित्र हुए। मेरा अभिवादन स्वीकार करो।

विवेककुमार :– मेरा भी अभिवादन स्वीकार करो, मित्र !

सुकृतकुमार :– (भावुक होकर) ओह ! मेरी दुरुह समस्या का समाधान तुमने कितनी सुगमता से कर दिया !..... तुम जैसा मित्र पाकर आज मैं कृतार्थ हो गया।

विवेक कुमार :– मुझे भी बड़ी प्रसन्नता है।

सुकृतकुमार :– तो अविलंब हमें अपनी उद्देश्यपूर्ति में जुट जाना चाहिये। .....चलो, सर्वप्रथम पिताश्री महाराज चेतनराज से तुम्हारी भेंट करा दूँ।

विवेक कुमार :– हाँ, चलें।

(दोनों जाते हैं।)

– पटाक्षेप –

श्रोता का स्वरूप

भली होनहार है, इसलिये जिस जीव को ऐसा विचार आता है कि मैं कौन हूँ ? मेरा क्या स्वरूप है ? यह चरित्र कैसे बन रहा है ? ये मेरे भाव होते हैं, उनका क्या फल लगेगा ? जीव दुःखी हो रहा है, सो दुःख दूर होने का क्या उपाय है ? ____ मुझको इतनी बातों का निर्णय करके कुछ मेरा हित हो सो करना – ऐसे विचार से उद्यमवन्त हुआ है। पुनःश्च इस कार्य की सिद्धि शास्त्र सुनने से होती है, ऐसा जानकर अति प्रीतिपूर्वक शास्त्र सुनता है ; कुछ पूछना हो सो पूछता है ; तथा गुरुओं के कहे अर्थ को अपने अन्तरंग में बारम्बार विचारता है और अपने विचार से सत्य अर्थों का निश्चय करके जो कर्त्तव्य हो उसका उद्यमी होता है – ऐसा तो नवीन श्रोतां का स्वरूप जानना।

– मोक्षमार्ग प्रकाशक, पृष्ठ १७

(छठवाँ - दृश्य)

[सुकृत कुमार और विवेक कुमार दोनों जड़पुर दुर्ग में प्रवेश करते हैं। मिथ्यात्वराज के अनुचर विवेक कुमार को अनजान जानकर रोकने का प्रयत्न करते हैं। किन्तु सुकृत कुमार के कारण उन्हें अनुमति देना पड़ती है। शीघ्र ही दोनों जड़पुर दुर्ग के महल में प्रवेश करते हैं, और चेतनराज के समीप पहुँचते हैं।]

सुकृत कुमार :- प्रणाम महाराज ! .....(विवेक कुमार की ओर संकेत करते हुए).....ये विवेक कुमार हैं। आपके दर्शनार्थ पधारे हैं।

विवेक कुमार :- (गद्‌गद् भाव से) जय हो महा प्रभु की ! सेवक का प्रणाम स्वीकार करो भगवन्।

चेतनराज :- (उनींदे से) कौन विवेक ? क्या परिचय है तुम्हारा ?

विवेक कुमार :- मैं आपका ही तुच्छ सेवक हूँ स्वामी ! आप.....।

सुकृत कुमार :- (बीच ही में) मित्र ! तुम महाराज से चर्चा करो, तब तक मैं अपने अनुचरों को आवश्यक निर्देश देकर आता हूँ।

(सुकृत कुमार चला जाता है)

विवेक कुमार :- मैं आपका ही तुच्छ सेवक हूँ, महाराज ! और आपके ही प्रधान अमात्य ज्ञानदेव और महारानी सुबुद्धिदेवी की सेवा में रहता हूँ।

चेतनराज :- (स्मरण करते हुए) प्रधान अमात्य ज्ञान देव ..... ! महारानी .....सुबुद्धिदेवी ..... ! ये नाम .....हम तो इन नामों से सर्वथा अनभिज्ञ हैं आगन्तुक !

विवेक कुमार :- महाराज, महारानी सुबुद्धिदेवी परित्यक्ता की तरह प्रधान अमात्य ज्ञान देव के संरक्षण में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रही हैं। अनादि से ही आपकी उपेक्षा- दृष्टि के कारण दर्शन- श्री, चारित्र वीर, वीर्यवर आदि आपके सभी परिजन निराश्रित से अनन्त अनन्त शक्तियों के धारक

होते हुए भी असहाय एवं किंकर्तव्यामूढ़ की दशा में हैं। .....इन सबकी शक्ति का मूल स्रोत आप ही हैं भगवन् ! अपने उद्‌गम स्थल से संबन्ध टूट जाने के बाद सरिता कब तक किल्लोल करती प्रवाहित रह सकती है ? ..... (हाथ जोड़कर विनय पूर्वक) प्रभु ! आपके विरह में सभी परिजन बहुत व्याकुल हैं।

चेतनराज :– (स्मरण-सा करते हुए) क्या नाम बताया तुमने अपना..... वि.....विवेक ..... विवेक कुमार।

विवेक कुमार :– जी महाराज, आपका सेवक विवेक कुमार !

(सुकृत कुमार का आगमन)

चेतनराज :– विवेक कुमार, तुम्हारे शब्दों ने हमारा हृदय उद्वेलित कर दिया है। ..... ऐसा प्रतीत हो रहा है.....मानो मन- विहग काल की अनन्त परतों को पार करता हुआ स्मृति कोष से अनुपम रत्न राशि लाने को व्याकुल हो उठा है। .....ऐसा करो विवेक कुमार, जिनका अभी तुम परिचय दे रहे थे, उन्हें एक बार हमारे समक्ष उपस्थित करने का कष्ट करो।

विवेक कुमार :– कष्ट किस बात का महाराज ! अनुचर आपकी आज्ञा- पालन को अपना सौभाग्य मानता है। किन्तु .....।

चेतनराज :– कोई कठिनाई है विवेक कुमार ?

विवेक कुमार :– हाँ महाराज ! सेनाधिपति मिथ्यात्वराज के अनुचर उन सबको आपसे भेंट करने देना तो दूर, जड़पुर प्रवेश की अनुमति भी न देंगे।

सुकृत कुमार :– (उत्तेजित होकर) मेरे रहते किसी को नगर प्रवेश में कोई बाधा नहीं हो सकती मित्र ! चलो मेरे साथ, जिन्हें भी भेंट कराना हो, चलकर उन्हें सादर लिवा लाएँ।

चेतनराज :– (सुकृत कुमार की ओर देखते हुए) हाँ वत्स, जाओ। तुम विवेककुमार की सहायता करो।

सुकृत कुमार :– (सिर झुकाकर) जो आज्ञा महाराज । ..... ।

(विवेक से) ..... चलो मित्र ..... !

(दोनों जाते हैं ।)

चेतनराज :– (स्वगत्) ज्ञानदेव ..... सुबुद्धिदेवी, ... वीर्यवर ..... चारित्रवीर ..... (एक-एक नाम रुक-रुककर बोलता है ।) ..... इनके नामोच्चारण-मात्र से अन्तःस कैसे अलौकिक आलोक से भर उठा है । ..... अहा ! ..... मेरे हृदयाम्बुधि में ये हर्षोन्मत्त लहरें कैसा ज्वार उठा रही हैं । ..... क्षितिज के उस पार, लगता है कि अरुणोदय हो रहा है । ..... आज यह कैसी विडंबना, कैसी पीड़ा का अनुभव हो रहा है । ..... क्या होगा ? क्या होने जा रहा है ? ..... संभवतः अभिनव संसृति का निर्माण होगा । ..... चलूँ, द्वार पर खड़ा होकर आगन्तुकों की प्रतीक्षा करूँ । .....

(जाता है)

– पटाक्षेप –

राग-द्वेष का कारण मिथ्यात्व है

मोह बीजाद्रति द्वेषौ बीजान्मूलाऽकुराविव ।
तस्माज्ज्ञानाग्नि ना दाह्यं तदे तौ निदिंधिक्षुणा ॥ १८२ ॥

– श्री आत्मानुशासन

अर्थ– जैसे बीज से वृक्ष की जड़ और अंकुर होता है ऐसे ही मोह मूल के कारण से आत्मा के राग-द्वेष होते हैं । इसलिए जो जीव इन राग-द्वेषादि को दग्ध करना चाहते हों वे जीव ज्ञान रूपी अग्नि से मोह को दग्ध करें ।

(सातवां - दृश्य)

[विवेक कुमार सुकृत कुमार की सहायता से रानी सुबुद्धिदेवी, ज्ञानदेव चारित्रवीर, दर्शन श्री, वीर्यवर आदि को लाता है। चेतनराज प्रतीक्षारत टहल रहे हैं।]

सुकृत कुमार :– महाराज की जय हो ! (प्रणाम करता है) महाराज ! मैं विवेक और उसके परिजनों को साथ लिवा लाया हूँ।

चेतनराज :– (उत्सुकता पूर्वक) कहाँ हैं वे ?

सुकृत कुमार :– अनुमति की प्रतीक्षा में द्वार पर खड़े हैं।

चेतनराज :– उन्हें ससम्मान लिवा लाओ वत्स !

(सुकृत कुमार जाता है। कुछ ही क्षणों बाद उसके साथ ज्ञानदेव, रानी सुबुद्धिदेवी, चारित्रवीर आदि आते हैं।)

ज्ञान देव :– हम सबका प्रणाम स्वीकार करो प्रभु !

(सभी प्रणाम करते हैं।)

विवेक कुमार :– (सुबुद्धिदेवी की ओर इंगित करके) ये महारानी सुबुद्धिदेवी हैं प्रभु ! चिरकाल से आपके विरह में सन्तप्त होकर निर्वासित जीवन व्यतीत कर रही हैं।

चेतनराज :– (अन्यमनस्क-सा) हमारे विरह में .....निर्वासित जीवन ..... महारानी सुबुद्धि देवी ..... !

विवेक कुमार :– हाँ महाराज।

चेतन राज :– (सुबुद्धि देवी की बाँह पकड़कर) आओ देवी ! तुम्हारे दर्शन से चित्त को बड़ी शान्ति मिल रही है।

सुबुद्धि देवी :– मैं बड़ी अभागी हूँ। महाराज ! आपकी कृपा- दृष्टि से वंचित होकर चिरकाल से मैं संसार के अनन्त दुःखों का भार वहन करती आ रही हूँ। आज आपके दर्शन पाकर कृतार्थ हुई।

सुकृत कुमार :– (विवेक कुमार से) मित्र, आप लोग चर्चा करें, तब तक मैं अन्य आवश्यक कार्य सम्पन्न कर लूँ ।

विवेक कुमार :– जैसा उचित समझो ।

(सुकृत कुमार जाता है ।)

चेतनराज :– (अन्यमनस्क से) कुछ समझ में नहीं आता कि यह सब क्या है ?

सुबुद्धि देवी :– इस विषय में आपको पूज्यवर ज्ञानदेव बताएँगे महाराज !

चेतनराज :– (किंकर्तव्यामूढ़-सा) ज्ञानदेव ?

सुबुद्धिरानी :– हाँ महाराज ! (ज्ञानदेव की ओर इंगित करके) ..... ये हैं पूज्यवर ज्ञानदेव, जिनके संरक्षण में हम सबने अपना निर्वासित जीवन व्यतीत किया है । इनकी असीम एवं विराट शक्ति की तुलना में तीन लोक इतना क्षुद्र है, जैसे अनन्त आकाश में एक नक्षत्र ! किन्तु आपकी उपेक्षा-दृष्टि का बल पाकर मोहराज के एक सेनानायक ज्ञानावरण को इन पर विजय प्राप्त करने का गौरव मिल गया है ..... (फिर प्रत्येक का परिचय कराते हुए) ..... ये हैं चारित्रवीर ..... ये दर्शन श्री ..... ये वीर्यवर ..... आपके ये सभी परिजन अनन्त अनन्त शक्तियों के धारक हैं । किन्तु इनकी ये शक्तियाँ आपकी कृपा-दृष्टि के अभाव में अपनी अभिव्यक्ति के लिए तरस रही हैं ।

चेतनराज :– (सचेत होकर) ओह ! ..... यह सब कैसे हुआ ? हमें सविस्तार अवगत कराओ ज्ञानदेव !

ज्ञानदेव :– चिन्ता न करें भगवन् ! मैं आद्योपान्त आपको पूरी कथा कहता हूँ । आप स्थिर चित्त से सुनने की कृपा करें । ..... स्वामी ! आपको अनादि से भ्रम में रखकर मोहराज ने अपनी पुत्री कुबुद्धिदेवी का विवाह आपसे करा दिया । कुबुद्धिदेवी ने मोह-मदिरा पिला पिलाकर आपकी सुध-बुध हर ली । इससे आप अपना स्वरूप भूलकर अनन्त काल तक तो निगोद के अन्धकूप में लब्ध्यपर्याप्तक दशा में पड़े रहे । वहाँ आपने एक श्वाँस में

अठारह बार जन्म-मरण करते करते अपार दुःख सहन किया। किसी प्रकार वहाँ से निकले तो स्थावर पर्याय में एकेन्द्रिय दशा में पड़े रह कर अनन्त अनन्त दुःख सहन करते रहे। बड़ी कठिनाई से वहाँ से निकल कर दुर्लभ चिन्तामणि रत्न की भाँति त्रस पर्याय प्राप्त की। तब दो इन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक तो आपमें अपना हित-अहित विचार करने की भी शक्ति न रही। सौभाग्य से संज्ञी पंचेन्द्रिय हुए, तो कभी तिर्यंच, कभी देव, कभी नारकीय तो कभी मनुष्य, इस प्रकार आपने भाँति-भाँति के स्वांग रचे। आप स्वयं तो अनन्तानन्त शक्तियों के धारक एक रूप, अखंड, शाश्वत और परिपूर्ण चैतन्य स्वभावी भगवान आत्मा हैं। किन्तु अपने मूल स्वरूप को भूलकर इन स्वांगों में ही अपनेपन की मान्यता करते रहे। श्रद्धादेवी मिथ्यात्वराज की आज्ञा से सदा ही आपकी इस भ्रामक मान्यता को पुष्ट करती रहीं।

मोहराज ने आपको जड़पुर का नरेश बनाया और आप मिथ्यात्वराज के प्रभाव से इसे ही अपना देश मानने लगे। मोहराज की आज्ञा से मिथ्यात्वराज ने ही आपको ८४ लाख योनियों में पंच-परावर्त्तन कराते हुए, अनन्त बार दुःखमय भव-भ्रमण कराया। दुष्कृत कुमार के बहकावे में आकर आपने नर्क-तिर्यंचादिक गति की यंत्रणाएँ भोगीं, और सुकृत कुमार के अनुराग से मनुष्य एवं देव गति के दुःखमय इन्द्रिय- सुख भोगे। फलस्वरूप आपके हम सब परिजन भी अनादि काल से ही उपेक्षित एवं कुंठित जीवन व्यतीत करते रहे।

चेतनराज :– ओह ! हम कैसे कैसे भयानक शत्रुओं के बीच फँसे हुए हैं। महाराज मोह, जिन्हें हमने अपना हितैषी माना, वे ही हमारे घोर शत्रु निकले। यह कुबुद्धि रानी, जिसे हमने अपनी प्राणेश्वरी समझा, वही हमारा घात करने वाली सिद्ध हुई। दुष्कृत कुमार जो अपने को हमारा पुत्र कहता है, उसी के कारण हमने नर्क - निगोद की यातनाएँ झेलीं। ..... और श्रद्धादेवी, जिसका हमने सदा विश्वास किया, वही विश्वासघात .....।

ज्ञानदेव :– (बात काटते हुए) ठहरिये महाराज ! श्रद्धादेवी का कोई दोष नहीं ! यह सब तो उन्होंने मिथ्यात्वराज के व्यामोह में होने के कारण किया। अभी भी वे मिथ्यात्व राज की ही अनुगामिनी हैं। हमारा प्रयत्न होगा

स्वामी, कि शीघ्र ही वे आपकी अनुगामिनी बनें। आपकी अनुगत होकर न केवल श्रद्धादेवी का जीवन धन्य होगा, बल्कि हम सबकी भाग्यलता भी लहलहा उठेगी। तभी भगवन् ! आपको भी अपनी अनन्त अनन्त शक्तियों का यथार्थ बोध होगा। शनैः शनैः मोहराज के बंधन टूटने लगेंगे। ..... और एक दिन ऐसा आएगा, जब हम मुक्तिपुरी के वासी बनकर वीतराग निर्विकल्प अतीन्द्रिय आनन्द-रस का अखंड रूप से मधुर पान करेंगे। ..... स्वामी ! मुक्तिपुरी ही हमारा देश है। वही हमारा गन्तव्य है।

चेतनराज :– (अधीर होकर) कब पहुँचेंगे हम मुक्तिपुरी ज्ञानदेव ! कब आएगी वह सुनहरी घड़ी !

ज्ञानदेव :– शीघ्र ही महाराज। आप धैर्य धारण करें। अब वह घड़ी दूर नहीं।

चेतनराज :– (पश्चात्ताप प्रगट करते हुए) ओह ! अब तक जिनके संग रहा, सभी मेरे शत्रु सिद्ध हुए। एक सुकृत कुमार को छोड़कर ..... उस जैसा हितैषी दूसरा कोई नहीं .....।

ज्ञानदेव :– क्षमा करें भगवन् ! सुकृत कुमार भी दुष्कृत कुमार, कुबुद्धिदेवी और मिथ्यात्वराज की तरह अकल्याणकारी ही है। उसे हितैषी मानना भ्रम है। ..... स्वामी ! सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार दोनों ही कुबुद्धिदेवी के पुत्र हैं, आपके नहीं।

चेतनराज :– (रोष पूर्वक) क्या कहते हैं आप ज्ञानदेव ? ..... कुबुद्धिरानी जैसी भी हैं, हमारी परिणीता हैं।

सुबुद्धिदेवी :– यही तो भ्रम है नाथ आपको। कुबुद्धिरानी आपकी परिणीता भले ही हो, किन्तु आपकी निष्ठावान पत्नी नहीं। उसका प्रेम .....।

चेतनराज :– (आतुरता पूर्वक) क्या कहा ? ..... उसका प्रेम किसी.....।

सुबुद्धिदेवी :– (लज्जित -सी) यह सब ज्ञानदेव बताएँगे, स्वामी !

ज्ञानदेव :- मैं बताता हूँ महाराज ! रानी कुबुद्धिदेवी का प्रेम आपसे नहीं, बल्कि मोहराज के एक सेनानायक वेदनीय से है। ये सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार दोनों वेदनीय और कुबुद्धिरानी की सन्तान हैं।

चेतनराज :- (हताश स्वर में) यह सब हम क्या सुन रहे हैं। .... ज्ञानदेव। आपके सौम्य और पवित्र व्यक्तित्व को देखकर आपके कथन पर अविश्वास तो नहीं होता, किन्तु सोचता हूँ कि क्या रानी कुबुद्धिदेवी इतनी पतित हो सकती हैं ? .... और फिर दुष्कृत कुमार की बात छोड़ भी दीजिए, किन्तु सुकृत कुमार जैसा विनम्र, सुशील और करुणा की मूर्त्ति.........।

ज्ञानदेव :- पुनः क्षमा चाहूँगा भगवन्। सुकृत कुमार को सुशील मानने का भ्रम तोड़ दीजिए। बेड़ी स्वर्ण की हो, चाहे लोहे की, आखिर बेड़ी ही है। दोनों बंधन में बांधने वाली हैं। सुकृत कुमार भी दुष्कृत कुमार की तरह संसार बंधन रूप दुःख का ही कारण है। एक मीठा जहर है, तो दूसरा कड़वा। दोनों का फल एक - सा ही है।

चेतनराज :- आपकी तर्कणा सबल और युक्ति युक्त है ज्ञानदेव ! फिर भी सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार को एक ही श्रेणी में रखना न्यायोचित प्रतीत नहीं होता।

ज्ञानदेव :- (टालते हुए) न सही महाराज ! इस विषय पर फिर कभी चर्चा करेंगे। अभी तो आप सर्व प्रथम मिथ्यात्वराज की घेराबन्दी से अपने को मुक्त कीजिये। ....इसके लिए आपको जड़पुर का परित्याग करना होगा।

(उसी समय कुबुद्धिरानी का श्रद्धादेवी के साथ आगमन। वह अन्तिम वाक्य सुन लेती है।)

कुबुद्धिरानी :- किसे जड़पुर का परित्याग करना होगा ? (सुबुद्धिदेत्री तथा अन्य सबको देखती हुई) ....ये सब कौन हैं ? (चेतनराज से) ....और यह नारी कौन है ? जो आपके पास बैठी है ? .... (आवेश पूर्वक) .... और आपको भी लज्जा नहीं आती जो मुझ ब्याहता

को छोड़कर पराई नारी के साथ बैठे हैं। ..... मैं त्रिलोकाधिपति महाराज मोहराज की बेटी, मेरा आपके साथ विवाह हुआ। ..... फिर मेरा अधिकार हनन करने वाली यह अपरिचिता कौन है ?

चेतनराज :- (हँसकर) ..... ये महारानी सुबुद्धिदेवी हैं। ..... हमारी प्राण प्रिया। अब हमारा प्रेम तुमसे नहीं रहा। सुबुद्धिदेवी अनेक गुणों से सम्पन्न हैं। अब ये ही हमारे हृदय की अधिष्ठात्री हैं।

कुबुद्धिरानी :- (सक्रोध) महाराज आप होश में तो हैं ?

चेतनराज :- अब तक नहीं थे, किन्तु अब हम अवश्य होश में आ गए हैं।

कुबुद्धिरानी :- (रोष पूर्वक) जब मेरे पिता महाराज मोहराज को यह सब ज्ञात होगा, तो आप जानते हैं कि इसका क्या परिणाम होगा ? ..... आप यह क्यों भूलते हैं कि आप उन्हीं की अनुकम्पा से जड़पुर के नरेश बने हैं।

चेतनराज :- (दृढ़ता से) परिणाम का भय न दिखाओ रानी ! अपने पिता से भी जाकर कह दो कि अब हमें उनकी अनुकम्पाओं की आवश्यकता नहीं।

श्रद्धादेवी :- किन्तु महाराज यह तो कृतघ्नता होगी।

चेतनराज :- (श्रद्धादेवी से) अब हमें यह न बताओ देवी कि किसे कृतघ्नता कहते हैं, और किसे कृतज्ञता। (कुबुद्धिरानी से) .....सुनो। हमने तुम्हारा ही नहीं, बल्कि जड़पुर के परित्याग का भी निर्णय कर लिया है।

कुबुद्धिरानी :- (कुछ नम्र होकर) क्या कहा ? ..... आप जड़पुर का परित्याग करेंगे ? नहीं- नहीं, शीघ्रता में ऐसा निर्णय करना उचित नहीं। ..... (कुछ आवेश में आकर) .....आप यहाँ से नहीं जा सकते।

चेतनराज :- (दृढ़ता पूर्वक) हमें कोई नहीं रोक सकता।

कुबुद्धिरानी :- देखती हूँ, आप यहाँ से कैसे जाते हैं ?

(सुकृत कुमार का प्रवेश)

सुकृत कुमार :– महाराज की इच्छा में व्यवधान उत्पन्न न करो माँ ! ——— और वे ही क्यों, अब तो मैं भी यहाँ नहीं रहना चाहता। तुमने और मामा मिथ्यात्वराज ने सदा ही दुष्कृत कुमार का पक्ष लिया है। इससे मेरा हृदय विदीर्ण हो गया है। मैं भी महाराज के साथ ही जाऊँगा।

(सभी जाने लगते हैं, तभी ज्ञानदेव विवेक से कान में कुछ कहते हैं।)

विवेक कुमार :– (श्रद्धादेवी से) देवी ! क्या आप महाराज के बिना अकेली रह लेंगी ?

श्रद्धादेवी :– (अन्यमनस्क- सी) नहीं ——— यह तो ——— संभव नहीं। ——— किन्तु मिथ्यात्वराज ? ——— कुछ समझ में नहीं आता, कि क्या करूं ? ——— बड़ी दुविधा में हूँ।

विवेक कुमार :– (विनत भाव से) साथ चलो देवी ! शनैः शनैः सब समझ में आ जाएगा। सारी दुविधा स्वतः दूर हो जाएगी।

(श्रद्धादेवी भी साथ जाने लगती है।)

कुबुद्धिरानी :– (सकुत कुमार से दुःखी स्वर में) नहीं बेटा, तुम हमें छोड़कर मत जाओ। ——— (श्रद्धादेवी से) ——— श्रद्धा ! तुम भी इन अपरिचित आगन्तुकों के बहकावे में आकर जा रही हो। ——— तुम चली जाओगी, तो जड़पुर की प्रजा को कौन आश्वस्त करेगा ? ———।

(कोई नहीं सुनता। सब चले जाते हैं। कुबुद्धिरानी ठगी-सी देखती रह जाती है।)

— पटाक्षेप —

—: द्वितीय - अंक :—

(प्रथम-दृश्य)

[वन प्रदेश का दृश्य। चेतनराज सुबुद्धिदेवी के साथ एक पाषाण-शिला पर बैठे हैं। चेतनराज के सामने ज्ञानदेव और विवेक कुमार विनय पूर्वक खड़े हैं। श्रद्धादेवी चेतंनराज के पार्श्व में खड़ी हैं। दर्शन श्री, चारित्रवीर, वीर्यवर भी एक ओर विनयावनत् खड़े हैं।]

चेतनराज :— मंत्रीवर ज्ञानदेव ! हम आपके अनन्त उपकारों से कभी उऋण न हो सकेंगे। रानी सुबुद्धिदेवी और अन्य सभी परिजनों से साक्षात्कार कराने में आपने जो अथक श्रम किया है, उसकी जितनी भी सराहना की जाय, कम है। ..... ओह ! मोहराज ने हमें कैसे कैसे जालों में फाँस रखा है ? ..... ज्ञानदेव ! यदि आपने बोध न दिया होता तो न जाने कितने काल तक हम मोहराज के दुःश्चक्र को ही अपनी नियति मानकर उसमें फँसे रहते। हमारे भव-भ्रमण का तो कभी अन्त ही न आ पाता।

ज्ञानदेव :— (विनम्रता से) यह आपकी उदारता है, भगवन् ! वस्तुतः तो आप ही हमारी अनन्त अनन्त शक्तियों का मूल स्रोत हैं। आपकी कृपा-दृष्टि के अभाव में ही अभिव्यक्ति को तरस रही ये शक्तियाँ निर्जीव-सी सुप्त पड़ी हुई हैं।

चेतनराज :—(प्रसन्नता पूर्वक) अहा ! ..... हमारे सभी परिजन कितने उदार, कितने विनम्र, और कितने शिष्ट हैं। (विवेक कुमार से) ..... विवेक-कुमार ! तुम्हारे प्रयत्नों से ही हमारा सभी स्वजनों से परिचय हो पाया। हमारी धारणा को तुमने ही दृढ़ता प्रदान की। ..... (ज्ञानदेव से) ..... ज्ञानदेव ! आपने हमें यथार्थ बोध दिया। ..... (सुबुद्धिरानी से) ..... तुम्हारे सुदर्शन के ही कारण हम कुबुद्धिरानी के नाग पाश से मुक्त हो पाये। ..... हम आप सभी के हृदय से कृतज्ञ हैं।

ज्ञानदेव :— प्रभु ! आप करुणासागर हैं। आपकी महिमा अगम- अपार है। ..... और भगवन् ! श्रद्धादेवी का भी कम उपकार नहीं। हमारे अनुरोध पर मिथ्यात्वराज का निकट संसर्ग छोड़कर आप हम सबके संग चली आईं।

श्रद्धादेवी :– (अन्यमनस्क-सी) मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा कि कैसे मैं जड़पुर छोड़कर यहाँ चली आई । पर इतना अवश्य है कि मैं महाराज को छोड़कर अन्यत्र नहीं रह सकती । वहाँ महल में थी, और यहाँ अरण्य में । फिर भी हृदय जैसी- शान्ति का अनुभव यहाँ कर रहा है, ऐसी शान्ति वहाँ न थी । विशेषकर मुझे ज्ञानदेव की युक्तियाँ बहुत प्रभावित करती हैं ।

चेतनराज :– सत्य है देवी ! ज्ञानदेव तो हमारे पथ प्रदर्शक ही हैं । ..... और ..... सुकृत कुमार ..... सुकृत कुमार कहाँ है ? ..... सुकृत कुमार बड़ा विनम्र , सुशील और करुणा की मूर्ति है । ..... किन्तु ..... (स्मरण करते हुए ज्ञानदेव से) .....ज्ञानदेव ! आप तो सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार को एक जैसा कहते थे । हम अब तक भी नहीं समझ पाए कि दोनों एक जैसे क्यों कर हैं, जब कि दोनों का स्वभाव, कर्म और कर्म का प्रतिफल भिन्न भिन्न है । एक सौम्य है, दूसरा कठोर । एक विनम्र है, दूसरा अहंकारी । एक दयालु है, दूसरा निर्मम । सुकृत कुमार की प्रवृत्ति लोक कल्याणकारी है, पुण्यरूप है, तो दुष्कृत कुमार की प्रवृत्ति अनिष्टकारी और पाप रूप । सुकृत कुमार की शुभ रूप प्रवृत्ति का फल सुगति है, और दुष्कृत कुमार की अशुभ रूप प्रवृत्ति का फल दुर्गति । ..... इन्हीं सब कारणों से सुकृत कुमार हमें सुशील एवं प्रिय लगता है और दुष्कृत कुमार कुशील और अप्रिय ! ..... अब कहिये, दोनों को एक श्रेणी में कैसे रखा जा सकता है ? दोनों एक जैसे क्योंकर हैं ?

ज्ञानदेव :– (विनम्रता से) प्रभु ! इसमें सन्देह नहीं कि दोनों में भारी भिन्नता है । दुष्कृत कुमार की अपेक्षा सुकृत कुमार श्रेष्ठ ही है । किन्तु विचार करें स्वामी, कि सुकृत कुमार का फलित भी अन्ततः गतिरूप संसार ही तो है । सुकृत कुमार को हितकारी मानकर तो दुःखमय संसार का अभाव संभव न हो सकेगा । ..... महाराज ! कृपया स्मरण रखें कि हमारा लक्ष्य लौकिक नहीं, लोकोत्तर है । हमें मुक्तिपुरी पहुँचना है । मुक्तिपुरी ही हमारा देश है । वही हमारा ध्येय है, प्रेय है और श्रेय भी । जिसे आप सुगति कहते हैं, वह

भी अन्ततः है तो बंधन रूप संसार ही ! क्या बंधन भी कल्याणकारी हो सकता है ? ..... स्वामी ! परमार्थतः सुगति तो एक मोक्ष ही है, जहाँ सर्व आकुलता का अभाव है, जहाँ निरन्तर सुख और आनन्द का निर्झर बहता है। ..... प्रभु ! निश्चय से तो सुकृत कुमार का कोई भी कृत्य मुक्ति पथ का साधक नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि जैसे बिना आँगन में आए गृह प्रवेश नहीं हो सकता ; उसी प्रकार सुकृत कुमार के सुयोग्य निमित्त बिना आपका चित्त जिनेन्द्र प्रणीत वीतराग - मार्ग में प्रविष्टि नहीं पा सकता।

चेतनराज :– यह उपकार क्या कम है ज्ञानदेव ?

ज्ञानदेव :– बहुत है महाराज, किन्तु व्यवहार - दृष्टि से ही। भगवन्! अपनी अचिन्त्य शक्ति का विचार करें। ..... यदि जिनेन्द्र प्रणीत वीतराग मार्ग में विचरण करने को आप स्वयं तत्पर न हों, तो सुकृत कुमार का सुयोग्य निमित्त क्या करेगा? वैसे भी ..... सुकृत कुमार की क्रीड़ा स्थली मात्र अनुराग- तत्व के परिसर तक ही सीमित है। ..... वीतरागता के उन्मुक्त प्रदेश में तो उसके प्रवेश की कोई संभावना ही नहीं ! वहां तो आपकी ही अनन्त -अनन्त गुण- शक्तियों का निर्बाध एवं सुखमय साम्राज्य है। ..... सुकृत कुमार आँगन तुल्य है महाराज ! गृह प्रवेश तो आँगन छोड़कर ही संभव हो सकेगा ..... और यह निर्विवाद ही है कि आँगन गृह नहीं होता और गृह कदापि आँगन नहीं हो सकता। पुनः स्मरण कराना चाहूँगा स्वामी ! कि सुकृत कुमार और दुष्कृत कुमार दोनों कुबुद्धिदेवी और वेदनीय की संतान हैं। दोनों का वंश, दोनों की जाति, एक ही है। दोनों ही हमारे लिए विजातीय हैं। उनकी कोई भी प्रवृत्ति, वह चाहे शुभ रूप हो अथवा अशुभ रूप, हमारी कुल-प्रवृत्ति के अनुरूप नहीं है। दोनों ही संसार मार्ग के साधक हैं। ..... और महाराज ! हमें मुक्ति पथ पर अग्रसर होना है।

चेतनराज :– आपकी तर्कणा का खंडन संभव नहीं है ज्ञानदेव ! काम-भोग-बंध की विकथा में मस्त रहकर, अब तक हमने अपने अनन्त वैभव की घोर उपेक्षा की। परमार्थ रूप ऐसा वस्तु स्वरूप तो हमने आज तक न सुना,

न समझा। ..... अहा ! कितना उपकार मानें आपका ..... किन्तु अमात्यवर, न जाने क्यों, सुकृत कुमार के लिए हृदय में ..... ।

ज्ञानदेव :– किंचित् समय और लगेगा स्वामी ! हम अभी मिथ्यापुर में ही हैं। मिथ्यात्वराज के प्रभा मंडल की चका चौंध से अभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए हैं। अविलंब हमें अव्रतपुर की ओर कूच करना चाहिये।

चेतनराज :– (आश्चर्य पूर्वक) अव्रतपुर ? ..... किन्तु हमें तो मुक्तिपुरी चलना है !

ज्ञानदेव :– मुक्तिपुरी पहुँचने के लिए हमें अनेक पड़ावों को पार करना होगा स्वामी ! मुक्ति मार्ग में पड़ने वाले अव्रतपुर, देशव्रतपुर, प्रमत्तपुर, अप्रमत्तपुर जैसे अनेक नगरों पर, जो मोहराज के आधिपत्य में हैं, विजय प्राप्त करनी होगी। मोहराज की सेना सदा ही इन नगरों में मोर्चा बांधे युद्ध को सन्नद्ध रहती है। उससे हमें जूझना होगा, पराजित करना होगा, तभी हम मुक्तिपुरी पहुँच पाएँगे।

चेतनराज :– ओह ..... ज्ञानदेव ! आप जो उचित समझें, करें, किन्तु हमारी इच्छा है कि जब तक अनिवार्य न हो, सुकृत कुमार को यहाँ से जाने के लिए विवश न किया जाय। व्यवहार-दृष्टि से ही सही, किन्तु हम अभी उसके प्रति कृतघ्न नहीं होना चाहते।

ज्ञानदेव :– जो आज्ञा प्रभु !

चेतनराज :– अब हम जिन-मन्दिर चलते हैं। थोड़ा समय जिनेन्द्र देव के मंगल सान्निध्य में व्यतीत करेंगे।

(चेतनराज, सुबुद्धिदेवी और श्रद्धादेवी के साथ जाते हैं। ज्ञानदेव सहित सभी चेतनराज को प्रणाम करते हैं।)

ज्ञानदेव :– (विवेक कुमार से) विवेक ! सुकृत कुमार के लिए महाराज के हृदय में अभी भी ममत्व बना हुआ है। और जब तक महाराज की सुकृत

कुमार में रुचि बनी रहेगी, वे भली प्रकार अपनी अनन्तानन्त शक्तियों का परिचय भी न पा सकेंगे।

विवेककुमार :– आपका तात्पर्य पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :– अपनी ही शक्तियों से अनभिज्ञ महाराज चेतनराज आत्म-विश्वास के अभाव में मोहराज के बंधन से मुक्त होने के लिए आवश्यक साहस नहीं जुटा पाएँगे। ..... इसलिए जितना शीघ्र हो, सुकृत कुमार के विषय में महाराज का भ्रम टूटना चाहिए।

विवेक कुमार :– तो क्या सुकृत कुमार को महाराज चेतनराज का संसर्ग छोड़ने को विवश किया जाय ?

ज्ञानदेव :– नहीं ! महाराज की इच्छा के विपरीत कोई कार्य नहीं होगा विवेक ! और अभी इसकी आवश्यकता भी नहीं। सुकृत कुमार के महाराज चेतनराज के संसर्ग में रहने में अभी इतनी हानि नहीं, जितनी कि उनके उसे अपना हितैषी मानने में है।

विवेक कुमार :– किन्तु आपने जो बोध दिया, उसे तो उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया है। इतना तो वे जानते ही .....

ज्ञानदेव :– (बात काटते हुए) जानते हैं विवेक, किन्तु मानते नहीं। जब तक मानें नहीं जानना "जानना" नहीं कहलाता। ..... (निःश्वास लेकर) ..... किन्तु इसमें उनका क्या दोष ? सब मिथ्यात्वराज की महिमा का प्रताप है।

विवेक कुमार :– इसका उपाय पूज्यवर ?

ज्ञानदेव : – (कुछ सोचते हुए) ..... विवेक ! श्रद्धादेवी अभी भी मिथ्यात्वराज के व्यामोह चक्र से मुक्त नहीं हो पाई हैं। ..... तुम एक काम करो।

विवेक कुमार :– आज्ञा कीजिए पूज्यवर !

ज्ञानदेव :– तुम ऐसा उपक्रम करो कि जिससे श्रद्धादेवी के हृदय में महाराज चेतनराज के प्रति अनुराग उत्पन्न हो जाय, फिर उन्हें महाराज से परिणय के लिए सहमत करो।

विवेक कुमार :– और यदि महाराज स्वयं श्रद्धादेवी से विवाह का प्रस्ताव करें तो ?

ज्ञानदेव :– नहीं विवेक ! यह महाराज की पद- प्रतिष्ठा के अनुरूप न होगा। प्रस्ताव श्रद्धादेवी की ओर से आना चाहिए।

विवेककुमार :– जैसी आज्ञा पूज्यवर ! मैं भरसक प्रयत्न करूँगा।

ज्ञानदेव :– (स्वतः ही) श्रद्धादेवी का परिणय महाराज चेतनराज के साथ हो जाय, फिर तो- - - - - - ।

विवेक कुमार :– "फिर" क्या पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :– अभी नहीं विवेक ! प्रतीक्षा करो, उत्तर के लिए भविष्य की प्रतीक्षा करो ..... सुनो विवेक ! तुम्हारे सेनापतित्व में ही अव्रतपुर दुर्ग पर आक्रमण करना है। ..... जाओ, सेना की आवश्यक व्यूह रचना करो !

विवेक कुमार :– आज्ञा शिरोधार्य है पूज्यवर ! श्री चरणों में प्रणाम !!

(प्रणाम करके जाता है।)

– पटाक्षेप –

(द्वितीय - दृश्य)

[जिन-मन्दिर में चेतनराज, सुबुद्धिदेवी, ज्ञानदेव, चारित्रवीर, सुकृत कुमार, विवेक कुमार, दर्शन श्री, वीर्यवर, श्रद्धादेवी आदि जिनेन्द्र भक्ति कर रहे हैं।]

॥ गीत ॥

भीतर देख लिया अविनश्वर,
पर्यायों के बिम्ब बदलते।
चेतन को छूता कब नश्वर।
मैंने देख लिया अविनश्वर॥

प्रज्ञा की छैनी से कटते,
कोटि जन्म के निर्मम बंधन।
वीतरागता अनुपम अक्षय,
जहाँ नहीं संभव परिवर्तन॥
सत्य समय का समझ लिया,
अब कौन पराये जाएगा घर।
मैंने देख लिया अविनश्वर॥

अर्हत सिद्ध-स्वभाव स्वरूपी
नाम भिन्न पर अर्थ एक है।
स्यादवाद की परिभाषा दी,
अनेकान्त में निहित एक है॥
अर्पित प्रभु के चरणकमल में,
श्रद्धा के शत-शत अभिनव स्वर।
मैंने देख लिया अविनश्वर॥

— पटाक्षेप —

(तीसरा दृश्य)

[मोहपुरी। मोहराज का भव्य सभागृह। मोहराज राज-सिंहासन पर विराजमान हैं। दायीं और बायीं ओर दो अनुचर खड़े हैं। मोहराज के पास ही दो आसनों पर उनके प्रमुख मंत्री रागराज और द्वेषराज आसीन हैं। कुछ सभासद भी अपनी अपनी आंसदियों पर बैठे हुए हैं। सभागृह के मध्य नृत्य चल रहा है। नर्तकियाँ गीत गा रही हैं।]

॥ गान ॥

जय-जय मोह महान।
तुम त्रिभुवनपति अखिलेश्वर हो,
भव नायक तुम, परमेश्वर हो,
गुण रत्नों की खान। ....जय-जय...

राग-द्वेष मंत्री द्वय न्यारे,
सुत मिथ्यात्वराज से प्यारे,
सुता कुबुद्धि समान। ....जय-जय...
सेनानी ज्ञानावरणादिक,
शूरवीर योद्धा क्रोधादिक,
सेवक काम प्रधान। ....जय-जय...

हास्य, शोक, रति, अरति, जुगुप्सा,
तीन वेद, भय नव रण- दक्षा,
मोहवंश की शान। ....जय-जय...
चेतन के तुम शरण सहारे,
जो अनादि से दास तुम्हारे,
गाते तव यश गान। ....जय-जय...

इतना स्नेह दिया चेतन को,
भूल गये वे अपने जन को,
बिसरी निज पहिचान। ....जय-जय...
तुमने उन्हें सुता निज ब्याही,
जी-भर मदिरा मोह पिलाई,
त्रिभुवन के वरदान। ....जय-जय...

(गीत समाप्त होते ही कुबुद्धिदेवी का सभागृह में प्रवेश)

कुबुद्धिदेवी :- (झुककर) पिताश्री, महाराजाधिराज मोहराज के श्री-चरणों में उनकी लाड़ली बेटी कुबुद्धि का प्रणाम स्वीकार हो। .....

(प्रणाम करती है।)

मोहराज :- (स्नेह पूर्वक) आओ बेटी ! ..... बिना पूर्व सूचना के अनायास कैसे आगमन हुआ ? कुशल तो है ?

कुबुद्धिदेवी - कुशल कहाँ पिताश्री ! बड़ा अनर्थ हो गया। किसी सुबुद्धि नाम की नारी के बहकावे में आकर चेतनराज ने मेरा परित्याग कर दिया है और तो और वे जड़पुर भी छोड़कर अन्यत्र चले गए हैं। सुकृत कुमार और श्रद्धादेवी भी उन्हीं के साथ हैं।

मोहराज :- (साश्चर्य) यह क्या सुन रहे हैं हम ? इतना दुस्साहस कर डाला चेतनराज ने ? ..... हमने चेतन के लिये क्या नहीं किया ? ..... अपनी बेटी ब्याही, जड़पुर का नरेश बनाया, प्रति समय मोह-नदिरा का मधुर पान कराया। चार गतियों की चौरासी लाख योनियों में अनन्त बार भव भ्रमण करवाकर , हम ही उसका चित्त बहलाते रहे। तीन लोक में ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ की पर्यटन- सुविधा का उपभोग उसने हमारी कृपा से अनन्ते बार न किया हो। ..... क्या वह हमारे इन सब उपकारों को भूल गया है ?

कुबुद्धिदेवी :- हाँ पिताश्री, उन्होंने मुझसे स्पष्ट कह दिया है कि- मेरा तुमसे कोई प्रेम नहीं रहा। सुबुद्धिरानी ही मेरे हृदय की अधिष्ठात्री है। ..... पूज्यवर, जब मैंने उन्हें आपके उपकारों का स्मरण कराया तो उन्होंने बड़ी उपेक्षा से कहा— "जाकर अपने पिता से कह दो कि अब हमें उनकी अनुकम्पाओं की आवश्यकता नहीं है।"

मोहराज :- (सक्रोध) ओह, ... असह्यनीय ! उस कृतघ्नी, कापुरुष का यह दुस्साहस ? तुम अधीर मत होओ बेटी। उसे अपने कुकृत्यों का फल शीघ्र भोगना होगा।

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल :– जय हो महाराज की । गुप्तचर प्रधान कामकुमार आए हैं । अनुमति की प्रतीक्षा में द्वार पर खड़े हैं ।

मोहराज :– आने दो उन्हें ।

(कामकुमार का प्रवेश)

कामकुमार :– त्रिलोकाधिपति महाराज मोहराज की जय हो । सेवक का प्रणाम स्वीकार करें प्रभु ! (प्रणाम करता है ।)

मोहराज :– क्या सन्देश लाए, कामकुमार ?

कामकुमार :– सेवक एक महत्त्वपूर्ण आपात् सूचना देने ही उपस्थित हुआ है प्रभु ! चेतनराज ने जड़पुर का परित्याग कर दिया है और अपने परिजनों के साथ अव्रतपुर पर आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं ।

मोहराज :– चेतनराज के जड़पुर परित्याग की सूचना तो हमें मिल चुकी है कामकुमार ! हाँ, हमारे लिए यह सूचना नई है कि वह अव्रतपुर पर आक्रमण की भी योजना बना रहा है । ..... (आवेश भरे स्वर में) चेतन बहुत उद्दण्ड हो गया है । शीघ्र ही इसके विषदन्त तोड़ना होंगे । ..... कामकुमार ! सेनाधिपति मिथ्यात्वराज को हमारे समक्ष उपस्थित होने की सूचना दो ।

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल :– महाराज की जय हो । सेनाधिपति मिथ्यात्वराज अनुमति की प्रतीक्षा में द्वार पर खड़े हैं ।

मोहराज :– आने दो उन्हें ।

(मिथ्यात्वराज का प्रवेश)

मिथ्यात्वराज :– त्रिभुवनपति, पिताश्री महाराज मोहराज की जय हो ।

मोहराज :– वत्स बड़ी दीर्घ आयु है तुम्हारी ! हमने अभी अभी तुम्हारा स्मरण किया था । किन्तु पहले तुम बताओ, कैसे आगमन हुआ ।

मिथ्यात्वराज :– पिताश्री ! चेतनराज ने जड़पुर का परित्याग कर दिया है, और ..... ।

मोहराज :- (बीच ही में) हमें ज्ञात हो चुका है .....और यह भी कि वह अव्रतपुर पर आक्रमण की योजना बना रहा है। ..... किन्तु वत्स ! हम तो चेतन को तुम्हें सौंपकर निश्चिन्त थे। अनायास यह सब कैसे हुआ।

मिथ्यात्वराज :- (धीमे स्वर में) सुकृत कुमार के कारण महाराज !

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल :- महाराज की जय हो ! द्वार पर कुंवर दुष्कृत कुमार आए हैं, भेंट की अनुमति चाहते हैं।

मोहराज :- आने दो।

(दुष्कृत कुमार का प्रवेश)

दुष्कृत कुमार - महाराज की जय हो। पूज्य - श्री के चरण-कमलों में आपका यह बालक प्रणाम करता है। (प्रणाम करता है।)

मोहराज :- कल्याण हो वत्स ! कैसे आगमन हुआ ?

दुष्कृत कुमार :- (कुबुद्धिदेवी की ओर देखकर) माँ तुम यहाँ हो ? ..... मैं न कहता था कि सुकृत को इतना सिर न चढ़ाओ, किन्तु तुमने और मामा मिथ्यात्वराज ने मेरी एक न सुनी।..... (मोहराज से) .....नाना श्री ! आपको ज्ञात है कि इसका क्या दुष्परिणाम हुआ ?

मोहराज :- शान्त हो जाओ वत्स ! हम सुन चुके हैं। किन्तु जो हो चुका, सो हो चुका। देखना यह है कि अब क्या किया जाए। (दोनों मंत्रियों से) मंत्रीद्वय, इन परिस्थितियों में हमें क्या परामर्श देना चाहेंगे ?

रागराज :- महाराज श्री ! हमारे प्रधान सेनाधिपति कुंवर मिथ्यात्वराज ही हमारी शक्ति का केन्द्र हैं। अभी कुछ नहीं बिगड़ा। सेनाधिपति से हमारा अनुरोध है कि वे शक्ति भर चेतनराज को अव्रतपुर में प्रविष्ट होने से रोकें। यदि चेतनराज अव्रतपुर पर आक्रमण करें तो उन्हें ऐसा मुँह तोड़ उत्तर दें कि दुबारा वे हमारे विरुद्ध सिर उठाने का दुस्साहस न कर सकें। इतना ही नहीं,

बल्कि चेतनराज को पकड़कर अबकी बार निगोद के गहरे अन्धकूप में डाल दिया जाय, ताकि परिजन तो दूर उन्हें स्वयं अपना अस्तित्व तक विस्मृत हो जाय। ..... स्वामी, सेनाधिपति कुंवर मिथ्यात्वराज को भरसक यह प्रयत्न करना होगा कि येन-केन-प्रकारेण श्रद्धादेवी पुनः उनकी दृढ़ अनुगामिनी बनें। इसके विपरीत यदि वे चेतनराज पर अनुरक्त हो गईं, तो हमारी अकूत क्षति होगी।

मिथ्यात्वराज :– मंत्रीवर ने ठीक कहा है महाराज ! श्रद्धादेवी ने जब से चेतनराज के साथ जड़पुर छोड़ा है, वहाँ विश्वास का संकट उपस्थित हो गया है। मैं स्वयं अपने अस्तित्व के विषय में चिन्तित हूँ। ..... किन्तु मैं निराश नहीं हूँ। फिर ..... अपनी बहिन का अपमान भी कैसे भूल सकता हूँ ? इसलिए अभी मिथ्यापुर पहुँचकर चेतनराज को उनके दुष्कर्म का फल चखाता हूँ। ..... मुझे आशीर्वाद प्रदान कीजिये पिताश्री।

मोहराज :– (भावुक होकर) हमारा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है वत्स ! किसी भी प्रकार चेतनराज को अव्रतपुर गढ़ में प्रविष्ट होने से वंचित रखो !! यदि दुर्भाग्य से चेतन अपनी सेना के साथ अव्रतपुर गढ़ में प्रवेश पा गया, तो फिर तुम कुछ न कर सकोगे। इसलिए अविलंब ही अपने असंख्य शूरवीरों को मिथ्यापुर की सीमा पर तैनात कर दो, ताकि चेतनराज मिथ्यापुर से ही बाहर न निकलने पाए ! वीरांगना अनन्तानुबंधी, कुंवर अप्रत्याख्यानावरण, कुंवर प्रत्याख्यानावरण और कुंवर संज्वलन अपने महासुभटों क्रोध, मान, माया और लोभ सहित असंख्य सेना लेकर तुम्हारी सहायता को तत्पर रहेंगे। ज्ञानावरणादि सभी सेनानायक भी अपने महासुभटों और असंख्य सेना सहित तुम्हारी आज्ञा में सन्नद्ध रहेंगे। ..... वत्स ! चेतनराज को अविलंब पराजित कर निगोद के गहरे अंधकूप में पटक दो। उसकी उद्दंडता का यही उचित दण्ड होगा।

मिथ्यात्वराज :– आपकी असीम अनुकंपा और अपने बाहुबल से मैं शीघ्र ही चेतनराज को उनके दुष्कर्मों का फल चखाऊँगा। आप निश्चिन्त रहें। अब चलता हूँ। ..... श्री चरणों में प्रणाम।

(प्रणाम करके जाता है)

दुष्कृत कुमार :– (मंत्री रागराज से) मंत्रीवर , सुकृत कुमार जो चेतनराज के पक्ष में होकर, उनकी सहायता कर रहा है, उसके संबन्ध में आपने क्या सोचा है ?

रागराज :– इसकी चिन्ता न करो वत्स ! उनका चेतनराज के संग रहना हमारे ही हित में है ।

द्वेषराज :– क्षमा करें बंधुवर ! आपकी यह उक्ति मेरी समझ में नहीं आई । कुंवर सुकृत कुमार, जिनके कारण ही यह विषम परिस्थिति उत्पन्न हुई है, उनका अभी भी चेतनराज के साथ रहना हमारे हित में कैसे हो सकता है । मेरी राय में तो कुंवर सुकृत कुमार को कड़े निर्देश देकर यहाँ बुलवा लेना चाहिये ।

रागराज :– नहीं बंधुवर ! इन परिस्थितियों में, ऐसा करना बड़ी अदूरदर्शिता होगी ..... अब तो कुंवर सुकृत कुमार चेतनराज के साथ रह कर ही हमें दीर्घकालिक किन्तु फलदायी लाभ पहुँचा सकेंगे ।

दुष्कृत कुमार :– (खिन्न होकर) मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा । मुझे आदेश दिया जाय कि मैं क्या करूं ?

मोहराज :– मंत्रीवर रागराज ठीक कहते हैं वत्स ! तुम संभवत: उनकी बात समझ न पाओगे ..... ऐसा करो, तुम अभी मिथ्यापुर की सीमा पर पहुँचो, और वहाँ मिथ्यात्वराज के आदेशानुसार वर्तन करो ।

दुष्कृत कुमार :– जो आज्ञा नाना श्री - - - - - - श्री - चरणों में प्रणाम !

(प्रणाम करके जाता है)

रागराज :– इसके पूर्व कि चेतनराज को रण क्षेत्र में हम उनके दुष्कर्मों के लिए दंडित करें, राज-नियमों के अनुसार दूत भेजकर उन्हें अन्तिम चेतावनी दी जाय कि .....अब भी विद्रोह छोड़कर हमारी शरण में आ जाओ । ..... संभव है कि चेतावनी मात्र से चेतनराज भयभीत होकर हमसे क्षमा-याचना

कर लें। ..... गुड़ से जिसका प्राणान्त हो सकता हो, उसे विष- भक्षण क्यों कराया जाय ?

मोहराज :- (हर्षित होकर) बहुत मूल्यवान परामर्श दिया है मंत्रीवर आपने ! ..... किन्तु चेतन के पास दूत बनाकर किसे भेजा जाय ?

रागराज :- मेरी राय में तो इस दुष्कर कार्य के लिए गुप्तचर प्रधान कामकुमार से बढ़कर अन्य कोई योग्य नहीं।

मोहराज :- (हर्षित होकर) साधुवाद मंत्रीवर। सचमुच गुप्तचर प्रधान कामकुमार ही इस कार्य को दक्षता पूर्वक सम्पन्न कर सकेंगे। ..... (काम कुमार से) .....काम कुमार ! दौत्य- कर्म में तुमसे अधिक दक्ष अन्य कोई नहीं। सारा संसार तुम्हारे कौशल का लोहा मानता है। तुम जाकर चेतनराज को हमारा सन्देश सुनाओ। उससे कहना ..... "रे नीच नराधम, क्या तेरी मति भ्रष्ट हो गई है, जो अपनी ब्याहता पत्नी को छोड़कर पराई नारी से विलास करता है। अब भी समय है, जो अपना कल्याण चाहता हो तो हमारी शरण में आ, हमारे चरण स्पर्श कर। अपने किये पर पश्चात्ताप प्रगट कर। हमसे क्षमा माँग। अन्यथा तुझे विद्रोह का दुःष्परिणाम भुगतना होगा।"

काम कुमार:- जो आज्ञा महाराज ! मैं अविलंब आपका आदेश कृतघ्नी चेतनराज को जाकर सुनाता हूँ ..... श्री- चरणों में प्रणाम।

(प्रणाम करके जाता है।)

कुबुद्धिदेवी :- अब मेरे लिए क्या आदेश है, पिताश्री।

मोहराज :- तुम यहीं रहो ! हम शीघ्र ही चेतनराज को तुम्हारा दास बनने को बाध्य करेंगे। तब तक ..... (मुस्कुरा कर) .....तुम सेनानायक वेदनीय के साथ जीवन का सुख विलास भोगो। ..... (सेनानायक वेदनीय से) .....सेनानायक वेदनीय ! हमारी बेटी तुम्हारे संरक्षण में रहेगी। तुम्हारा कर्त्तव्य होगा कि यह सदा प्रफुल्लित रहे।

वेदनीय :- (सिर झुकाकर) महाराज - श्री की आज्ञा शिरोधार्य है। ..... (कुबुद्धिरानी से) .....आओ देवी !

(वेदनीय कुबुद्धिदेवी को अपने साथ ले जाता है।)

— पटाक्षेप —

(चतुर्थ - दृश्य)

[मोहराज का सभागृह ! मोहराज सिंहासन पर आसीन हैं। आसपास दो अनुचर खड़े हैं। कुछ सभासद भी बैठे हैं। पास ही मंत्री- द्वय रागराज और द्वेषराज अपने अपने आसनों पर आसीन हैं। गुप्तचर प्रधान कामकुमार भी एक ओर खड़े हैं। मोहराज के अन्य सेनानायक ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय, आयु, नाम, गोत्र और वेदनीय सैनिक वेशभूषा में अपनी अपनी आसंदियों पर बैठे हैं।]

मोहराज :- मंत्रीवर रागराज ! आपके सत्परामर्श से हमने गुप्तचर प्रधान कामकुमार को चेतनराज के पास भेजा था। किन्तु वहाँ से लौटकर जो सूचना उन्होंने दी है, वह बहुत निराशाजनक है। वास्तव में तो चेतनराज भ्रष्टजनों की संगत में है। उस कृतघ्नी ने उद्दंडता की सीमा का भी उल्लंघन कर दिया है। .....धृष्टता तो देखो ! हमारे उपकारों के प्रति कृतज्ञ होना तो दूर, इसके विपरीत उसने हमारा खुला उपहास किया है।

रागराज :- चिन्ता न करें महाराज ! चेतनराज को अपने दुष्कृत्यों का फल भोगना होगा। तीन लोक में आपकी शरण छोड़कर वे अन्यत्र जाएँगे कहाँ ?

द्वेषराज :- हमें चेतनराज के प्रति सदयता की नीति का परित्याग करना पड़ेगा महाराज ! कठोर रूख अपनाए बिना काम नहीं चलेगा। घी सीधी अंगुली से नहीं निकला करता।

मोहराज :- (आवेश भरे स्वर में) ठीक कहते हैं, आप मंत्रीवर ! अब और प्रतीक्षा नहीं की जा सकती। सेना तैयार की जाए।

रागराज :- हमारी सेना तो सदा तैयार ही रहती है स्वामी ! बस आपके आदेश की प्रतीक्षा है। संयोगवश आज कुछ सेनानायक भी यहाँ उपस्थित हैं।

मोहराज :- (सेनानायकों को संबोधित करते हुए) उपस्थित सेनानायकों ! ..... अपनी असीम शक्ति का परिचय देकर मुझे आश्वस्त करो !

(सबसे पहले सेनानायक ज्ञानावरण खड़ा होता है ।)

ज्ञानावरण :- मैं ज्ञानावरण हूँ महाराज ! मैं अपने पांच महासुभटों और उनकी असंख्य सेना के साथ सदा आपकी सेवा में तत्पर रहता हूँ। आपकी कृपा-दृष्टि का बल पाकर मैंने समग्र संसार को पराजित कर सदा आपकी विजय-पताका फहराई है । मैंने चेतनराज के प्रधान अमात्य ज्ञानदेव की शक्तियों को अपने प्रबल प्रहार से इतना कुंद कर रखा है कि वह अपने को निर्बल एवं असहाय ही अनुभव करता है ।

(अपने स्थान पर बैठ जाता है । अब सेनानायक दर्शनावरण खड़ा होता है ।)

दर्शनावरण :- मैं सेनानायक दर्शनावरण हूँ महाराज ! आपके प्रताप से मैंने ९ महासुभटों और उनके असंख्य सैनिकों के सहयोग से चेतनराज के प्रमुख सेनानी दर्शन श्री की अवलोकन शक्ति का अपहरण करके उसे अन्धा बना दिया है ।

(अपने स्थान पर बैठ जाता है । अब सेनानायक अन्तराय खड़ा होता है ।)

अन्तराय :- मैं सेनानायक अन्तराय हूँ, त्रिभुवन पति ! आपकी अनुकम्पा से मैं अपने पाँच महासुभटों और उनके असंख्य वीरों के साथ ऐसा भयानक युद्ध करता हूँ कि फिर मेरे समक्ष चेतनराज के सारे शस्त्र कुंद हो जाते हैं । चेतन-कुल के प्रमुख सेनानी वीर्यवर के पुरुषार्थ को कुंठित करके मैंने उसे नाकारा बना डाला है । जहाँ भी मैं अवरोध की दीवार खड़ी करता हूँ, चेतनराज की पूरी सेना वहीं रुक जाती है ।

(अपने स्थान पर बैठ जाता है । अब सेनानायक वेदनीय खड़ा होता है ।)

वेदनीय :- मैं सेनानायक वेदनीय हूँ स्वामी ! मेरे दो ही महासुभट हैं । किन्तु आपकी कृपा से इन दो महासुभटों के असंख्य वीरों की सहायता से मैंने संसार में जो भ्रमजाल फैला रखा है, उससे कोई अछूता नहीं । मैं चेतनराज को कभी दुःख तो कभी दुःखमय सुख देकर भ्रमित रखता हूँ..... विस्मय - विमुग्ध हो जाने का विषय तो यह है स्वामी, कि चेतनराज इस

दुःखमय सुख के कारण मुझसे बड़ा स्नेह रखते हैं। इस भ्रामक सुखाभास के जरिये ही मैं चेतनराज को सुगमता से भ्रमजाल में फँसाये रखता हूँ।

(अपने स्थान पर बैठ जाता है। अब सेनानायक आयु खड़ा होता है।)

आयु :– मैं सेनानायक आयु हूँ त्रिलोकाधिपति ! आपकी दया से मैं अपने चार महासुभटों और उनके असंख्य शूरवीरों की सहायता से चेतनराज को चार गतियों की चौरासी लाख योनियों में भटकाता रहता हूँ। एक क्षण भी उन्हें चैन से नहीं रहने देता।

(अपने स्थान पर बैठ जाता है। अब सेनानायक नाम खड़ा होता है।)

नाम :– मैं सेनानायक नाम हूँ त्रिभुवनपति ! आपकी असीम अनुकम्पा ने मुझे निस्सीम शक्ति प्रदान कर दी है। मेरे बिना संसार की ही स्थिति नहीं। मैं अपने ९३ महासुभटों और उनकी असंख्य सेना की सहायता से चेतनराज को विभिन्न शरीरों और स्पर्श-रस-गंध- वर्ण रूप करता हुआ, अनेक नाच नचाता रहता हूँ। चेतनराज की क्षमता ही नहीं कि मुझसे पार पा सकें। जब तक मैं उन्हें मुक्त न करूँ वे मुक्तिपुरी नहीं पहुँच सकते।

(अपने स्थान पर बैठ जाता है। अब सेनानायक गोत्र खड़ा होता है।)

गोत्र :– मैं सेनानायक गोत्र हूँ प्रभु ! आपकी महती कृपा से अपने दो महासुभटों और उनके असंख्य सेनानियों की सहायता से मैं चेतनराज को पल में राजा तो पल में रंक बनाकर, उनकी आकुलता का आनन्द लेता रहता हूँ।

(अपने स्थान पर बैठ जाता है।)

मोहराज :– (हर्षित होकर) मैं आश्वस्त हुआ मेरे शूरवीरों ! आप सबने मुझे अपनी अपरिमित शक्ति का अहसास करा दिया है।

ज्ञानावरण :– (अपने स्थान पर खड़ा होकर) हम सबकी शक्ति का अजस्त्र स्रोत तो आप ही हैं, त्रिभुवनपति ! जैसे सूर्य- किरण- करों का स्पर्श पाकर सोए कमल जाग उठते हैं, वैसे ही आपकी कृपा-दृष्टि का बल पाकर हम

सबकी सुषुप्त शक्तियाँ जागृत हो उठती हैं। आपके नेतृत्व में ही हम सब अपनी विलक्षण शक्तियों का परिचय दे पाते हैं। ..... त्रिभुवनपति ! मोह कुल का तो बच्चा बच्चा भी असंख्य- असंख्य शक्तियों का पुंजीभूत केन्द्र है। आपके पुत्र रत्नों में प्रधान सेनाधिपति मिथ्यात्वराज का अनुपम बल-सामर्थ्य तो लोक- विश्रुत है ही। वीरांगना अनन्तानुबंधी, कुंवर अप्रत्याख्यानावरण, कुंवर प्रत्याख्यानावरण और कुंवर संज्वलन के अपूर्व पराक्रम की भी लोक में कोई उपमा नहीं। इनके क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे दुर्द्धर योद्धाओं का लोहा सारा संसार मानता है। चेतन कुल की संगठन शक्ति को विच्छिन्न कर देने का जैसा अद्‌भुत सामर्थ्य इन योद्धाओं में है, वैसा अन्य किसी में नहीं। इन्हीं के कारण चेतनराज अनादिकाल से दूरन्त-कषाय-चक्र में फँसकर हमारे दास बने हुए हैं।

इनके अलावा मोह कुल की हास्य, रति, अरति आदि नौ किशोर बालाएँ भी रण- कौशल में कम दक्ष नहीं। यह इनका ही अद्वितीय शौर्यबल है कि जिसके कारण चारित्रवीर जैसे चेतनराज के वरिष्ठ सेनानी भी अपने को कर्त्तव्य विमूढ़ पाते हैं। .....स्वामी ! वस्तुतः तो ये सब आपके ही अंशावतार हैं। हम और हमारे सभी महासुभट इन्हीं के नेतृत्व में अपना जौहर दिखा पाते हैं।

(बैठ जाता है।)

वेदनीय :- कृपा निधान ! हमारे सम्पूर्ण राज्य में कुंवर मिथ्यात्वराज के समान शक्तिशाली अन्य कोई नहीं। वे अकेले चेतनराज को उनके पल मात्र के लिए किये गए अपराध के लिए ७० कोड़ा-कोड़ी सागर तक बाँधकर रखने का उत्कृष्ट सामर्थ्य रखते हैं। ऐसा सामर्थ्य अन्य किसी में नहीं। यही कारण है कि आपने उन्हें प्रधान सेनाधिपति के पद पर अभिषिक्त किया है। जब तक चेतनराज उनके बंधन में हैं, हम सब निश्चिन्त हैं। मैं कृतज्ञता पूर्वक सभा को उनका स्मरण कराता हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि सारी सभा अतीव हर्षोल्हास से उनका जय घोष करे।

मोहराज :– (हर्ष से) सेनानायक वेदनीय ! प्रतीत होता है कि आपने हमारा हृदय पढ़ लिया है ।

(अनुमति पाकर सेनानायक वेदनीय प्रधान सेनाधिपति मिथ्यात्वराज की जय बोलते हैं। सभा भी हर्षोल्हास से मिथ्यात्वराज का जय घोष करती है।)

मोहराज :– (प्रसन्न चित्त से) आज हम बहुत प्रसन्न हैं। इस अवसर पर कुछ..... ।

(संकेत समझकर काम कुमार ताली बजाता है। नर्तकी आती है।)

नृत्य के बाद .....

– पटाक्षेप –

– द्रव्यानुयोग का अभ्यास कार्यकारी –

जिनमत में यह परिपाटी है कि पहले सम्यक्त्व होता है, फिर व्रत होते हैं ; वह सम्यक्त्व स्व-पर का श्रद्धान होने पर होता है और वह श्रद्धान द्रव्यानुयोग का अभ्यास करने पर होता है ; इसलिये प्रथम द्रव्यानुयोग के अनुसार श्रद्धान करके सम्यक्दृष्टि हो, पश्चात् चरणानुयोग के अनुसार व्रतादिक धारण करके व्रती हो। – इस प्रकार मुख्य रूप से तो निचली दशा में ही द्रव्यानुयोग कार्यकारी है। गौण रूप से जिसे मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती न जाने उसे पहले किसी व्रतादिक का उपदेश देते हैं, इसलिये ऊँची दशा वालों को अध्यात्म-अभ्यास योग्य है ऐसा जानकर निचली दशा वालों को वहाँ से पराङ्मुख होना योग्य नहीं है।

– मोक्षमार्ग प्रकाशक, पृष्ठ २९३

(पांचवा - दृश्य)

[मोहराजं का भव्य सभागृह ! मोहराज सिंहासन पर विराजमान हैं। मंत्रीवर रागराज और द्वेषराज भी अपनी अपनी आसंदियों पर बैठे हैं। कुछ सभासद भी यथा स्थान बैठे हुए हैं।]

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल :– महाराज की जय हो। गुप्तचर प्रधान कामकुमार अनुमति की प्रतीक्षा में द्वार पर खड़े हैं।

मोहराज :– आने दो उन्हें !

(काम कुमार का प्रवेश)

काम कुमार :– त्रिभुवनपति महाराज मोहराज की जय हो !

मोहराज :– क्या सन्देश लाए काम कुमार ?

काम कुमार :– सन्देश अशुभ है महाराज ! विवेक कुमार के सेनापतित्व में चेतनराज ने अव्रतपुर पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त कर ली।

मोहराज :– (साश्चर्य) क्या कहा ? चेतनराज ने हमसे अव्रतपुर छीन लिया, ... काम कुमार ! कैसे हुआ यह ? हमें सविस्तार अवगत कराओ।

काम कुमार :– महाराज ! चेतनराज अपने प्रधान अमात्य ज्ञानदेव सहित विवेक कुमार के सेनापतित्व में असंख्य सेना लेकर अव्रतपुर के निकट आए। श्रद्धादेवी और कुंवर सुकृतकुमार भी उनके साथ थे। ज्यों ही चेतनराज ससैन्य अव्रतपुर गढ़ के चारों ओर बनी संशय की गहरी खाई पार करने को उद्यत हुए, सेनाधिपति कुंवर मिथ्यात्वराज ने उन पर भयानक आक्रमण कर दिया। वीरांगना अनन्तानुबन्धी भी अपने चारों महासुभटों, क्रोध, मान माया और लोभ सहित असंख्य सेना लेकर चेतनराज की सेना पर टूट पड़ीं। तभी कुंवर सुकृत कुमार और कुंवर दुष्कृत कुमार अपने अपने प्रमुख महासुभटों सहित ससैन्य वहाँ आए, और परस्पर घोर संग्राम करने लगे। कुंवर दुष्कृत

कुमार ने बहुत वीरता से युद्ध किया। किन्तु विवेक कुमार के रण कौशल और सुकृत कुमार के शूरवीरों के आगे उनकी एक न चली। बुरी तरह घायल होकर उन्हें रण क्षेत्र छोड़ना पड़ा। उनके अनेक योद्धा वीर गति को प्राप्त हुए। शेष अपने प्राणों की रक्षार्थ मुँह छिपाकर भाग खड़े हुए।

इधर विवेक कुमार ने श्रद्धादेवी को प्रेरित किया कि वे हृदय से चेतनराज को अपना लें। विवेक की बात सुनकर श्रद्धादेवी विचलित सी उसे निहारने लगीं। तभी महाराज ..... वहाँ एक विचित्र दृश्य दृष्टिगोचर हुआ।

मोहराज :– (उत्सुकता पूर्वक) कैसा दृश्य काम कुमार ?

काम कुमार :– महाराज ! अनायास ही वहाँ क्रम से क्षयोपशमलब्धि, विशुद्धिलब्धि, देशनालब्धि और प्रायोग्य लब्धि, ये चार देवियाँ प्रगट हुईं। उन्होंने श्रद्धादेवी से कहा— देवी ! चेतनराज को अपना सम्पूर्ण समर्पण कर दें। हम सब समर्पण संस्कार का मंगलमय अनुष्ठान संपन्न कराने के लिए ही आपकी सेवा में उपस्थित हुई हैं। ..... तब ..... तब महाराज, श्रद्धादेवी ने समर्पित हृदय से चेतनराज पर अपनी दृष्टि डाली। लज्जा से उनके कपोल आरक्त हो उठे। उनके सलज्ज नेत्रों का संकेत पाकर विवेक कुमार ने उसी समय दोनों का विवाह रचाया। ..... फिर क्या था ? ..... बड़ी धूमधाम से हर्षोल्हास पूर्वक चेतनराज और श्रद्धादेवी का पाणिग्रहण- संस्कार संम्पन्न हुआ। वयोवृद्ध मंत्री ज्ञानदेव ने नव-परिणीत वर वधु के सुखी जीवन की मंगल कामना व्यक्त की।

मोहराज :– ओह आश्चर्य ! रण भूमि में परिणयोत्सव ?

काम कुमार :– हाँ महाराज ! सचमुच यह सब विस्मयकारी था। बड़ा मनोरम दृश्य था। लब्धियों ने मंगलाचार किया। आरती उतारी, गीत गाए। (मुग्ध होकर विमोहित- सा) महाराज ! परिणय बेला की वे स्वर्णिम घड़ियाँ बड़ी मधुर थीं। .....कैसी अनुपम ! कितनी अप्रतिम ! अहा-हा ! चेतनराज का सहारा लिए खड़ी श्रद्धादेवी का अलौकिक सौन्दर्य देखते ही बनता था। नव परिणीत वर-वधु के मधुर मिलन से संघटित उत्कर्ष की दिव्य छटा ..... ।

मोहराज :– (सक्रोध) होश में आओ काम कुमार ! हमारे शत्रुओं के उत्कर्ष की प्रशंसा हमारे ही सामने ! तुम्हारी मति तो भ्रष्ट नहीं हो गई ?

काम कुमार :– (प्रकृतिस्थ होकर) क्षमा करें स्वामी ! अनुचर लज्जित है।

मोहराज :– ठीक है, ... आगे क्या हुआ ?

काम कुमार :– महाराज कुछ काल व्यतीत हुआ। तभी वहाँ लब्धियों की स्वामिनी करणलब्धि प्रगट हुई। उसने श्रद्धादेवी को आशीष प्रदान किया। और कहा — "अन्तर्मुहुर्त काल में ही तुम्हारे गर्भ से त्रिलोकजयी कल्याण मूर्ति बालक सम्यक्त्वराज का जन्म होगा।" देवी करणलब्धि के वचनों को सुनकर ज्ञानदेव ने उसी समय एक भविष्य वाणी की।

मोहराज :– (उत्सुक होकर) क्या भविष्य वाणी की ज्ञानदेव ने ?

काम कुमार :– ज्ञानदेव ने गुरु- गम्भीर वाणी में गर्जना करते हुए कहा कि श्रद्धादेवी के गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक सम्यक्त्वराज ही मोहराज के प्रधान सेनाधिपति मिथ्यात्वराज की मृत्यु का कारण होगा।

मोहराज :– (विस्फारित नयनों से दुःखी स्वर में) फिर क्या हुआ ?

काम कुमार :– देवी करणलब्धि ने विवेक कुमार को अधःकरण, अपूर्वकरण, और अनिवृत्तिकरण जाति के अनेक दिव्यास्त्र प्रदान किये। ज्ञानदेव की सिंह- गर्जना युक्त भविष्यवाणी सुनकर इन दिव्यास्त्रों से सुसज्जित विवेक कुमार ने द्विगुणित उत्साह से अव्रतपुर- दुर्ग पर धावा बोल दिया। बड़े कौशल से उसने ससैन्य संशय की गहरी खाई पार की।

मोहराज :– (साश्चर्य) क्या ? संशय की वह गहरी और दुर्गम खाई, जिसका निर्माण मिथ्यात्वराज ने स्वयं अपने निरीक्षण में कराया था, उसे विवेक कुमार ने पार कर लिया ?

काम कुमार :– हाँ महाराज !

मोहराज :– और हमारी ओर से कोई प्रतिरोध ?

काम कुमार :– कुंवर मिथ्यात्वराज ने किया महाराज ! उन्होंने बड़ी वीरता से प्रत्याक्रमण किया। भयंकर संग्राम हुआ। सेनाधिपति ने चेतनराज पर विभ्रम का चक्र चलाया। किन्तु विवेक कुमार ने भेदास्त्र चलाकर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। वहीं मिथ्यात्वराज ने पुनः श्रद्धादेवी को विचलित करने की भरपूर चेष्टा की। किन्तु श्रद्धादेवी तो अब चेतनराज पर पूरी तरह अनुरक्त थीं। उन्होंने सेनाधिपति की ओर दृष्टिपात भी नहीं किया। इससे कुंवर श्री के हृदय को बड़ा आघात पहुँचा। ..... तभी विवेक कुमार ने देवी करणलब्धि द्वारा प्रदत्त अधःकरण, अपूर्वकरण, और अनिवृत्तिकरण जाति के अनेक दिव्यास्त्रों का क्रमशः संचालन कर कुंवर मिथ्यात्वराज की देह को क्षत-विक्षत कर दिया। इसी बीच अन्तर्मुहुर्त काल समाप्त होते होते श्रद्धादेवी ने एक तेजस्वी बालक को जन्म दिया। चेतनराज का हृदय आल्हाद से भर गया। सभी परिजन हर्ष-विभोर हो गए। ज्ञानदेव ने बालक का नाम "सम्यक्त्व राज" रखा। उसी क्षण दुर्ग का द्वार टूट गया। विवेक कुमार ने बालक सम्यक्त्वराज के दर्शन से अपने नयनों को तृप्त किया और बिना कोई विलंब किये मिथ्यात्वराज पर अचूक भेद- चक्र चला दिया। सेनाधिपति भेद चक्र के प्रहार से बुरी तरह लड़खड़ाये, तभी सम्यक्त्वराज की सन्निधि से प्राप्त अनुभूति के अनेक तीक्ष्ण बाण चलाकर विवेक कुमार ने मिथ्यात्वराज की समूची देह छलनी-छलनी कर डाली। वे कटे पेड़ की तरह भूमि पर गिर पड़े। उनकी अजेय शक्ति छिन्न-भिन्न होकर मिश्र मोहनीय और सम्यक्त्व मोहनीय इन दो और रूपों में विभाजित हो गई।

मोहराज :– (शोक स्वर में) और चेतनराज को अनन्तकाल तक संसार में रुलाने वाली वीरांगना अनन्तानुबंधी का क्या हुआ ?

काम कुमार :– अपने प्रिय, सेनाधिपति कुंवर मिथ्यात्वराज की दुर्दशा देखकर वे भी हतोत्साहित हो गईं। चेतनराज के प्रबल सेनानी चारित्रवीर ने 'स्वरूपाचरण' नामक अबंधास्त्र चलाकर उन्हें भी घायल कर दिया। किन्तु वाह री वीरांगना अनन्तानुबन्धी ! घायल अवस्था में भी बालक सम्यक्त्वराज पर ऐस बंधास्त्र चलाया कि उससे उपशम-वय में ही बालक सम्यक्त्वराज की दशा चिन्ताजनक हो गई। वह मरणासन्न हो चला। यह देखकर श्रद्धादेवी विचलित हो गईं। चेतनराज सहित सभी परिजन चिन्तित हो उ।

मोहराज :– (हर्षातिरेक में) वाह ! हमारी लाड़ली अनन्तानुबंधी जैसी वीरांगना न कभी हुई, न होगी। मोह कुल को गर्व है उस पर ! ..... (उत्सुकता पूर्वक काम कुमार से) हाँ, फिर।

काम कुमार :– वीरांगना अनन्तानुबंधी ने अपने घायल पड़े चार महासुभटों में से महासुभट क्रोध को प्रकृतिस्थ किया और उसकी सहायता से चेतनराज को खदेड़ते-खदेड़ते, सासादन के निबिड़तम विपिन तक ले गईं। चेतनराज बुरी तरह घबड़ा उठे। वे इस तिमिराच्छन्न विपिन से बाहर निकलने का प्रयत्न करने लगे। उधर शक्ति क्षीण होने पर भी मिथ्यात्वराज ससैन्य मिथ्यापुर पहुँचे। तभी चेतनराज भी भटकते-भटकते मिथ्यापुर पहुँच गए। मिथ्यात्वराज ने उन्हें यहाँ फिर घेर लिया। किन्तु महाराज, इसके पूर्व कि सेनाधिपति चेतनराज को बन्दी बनाकर रखते, विवेक कुमार ने उन पर पुनः प्रचंड आक्रमण कर दिया। भेद चक्र चलाकर उसने मिथ्यात्वराज और अनंतानुबंधी सहित ४१ महासुभटों और असंख्य सैनिकों को बुरी तरह घायल कर दिया। विवेक कुमार के सेनापतित्व में सभी ससैन्य पुनः अव्रतपुर आए। इस समय अव्रतपुर में मिथ्यात्वराज के ही अंशावतार सम्यक्त्व मोहनीय विद्यमान थे। उन्होंने क्षयोपशम रूप किशोर अवस्था वाले सम्यक्त्वराज पर पाँच अतिचारों की सहायता से अनेक शस्त्रास्त्र चलाए, किन्तु .....।

मोहराज :– "किन्तु" क्या काम कुमार ?

काम कुमार :– क्षमा करें स्वामी ! ..... अजेय शक्ति सम्पन्न सम्यक्त्वराज को पराजित करने को तत्पर कुंवर सम्यक्त्व मोहनीय ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो दावानल बुझाने को उद्यत ओस कण। उनका प्रत्येक वार विफल होता रहा।

मोहराज :– (दुःखी स्वर में) ओह ! ..... फिर क्या हुआ ?

काम कुमार :– (निःश्वास लेकर) विवेक कुमार ने विजयोल्हास पूर्वक अव्रतपुर गढ़ पर चेतनराज की विजय-पताका फहराई।

मोहराज :- ओह ! ..... बहुत अशुभ सन्देश लाए तुम काम-कुमार ! ..... अब कुंवर मिथ्यात्वराज कहाँ है ?

काम कुमार:- (दुःखी स्वर में) अवशेष शूरवीरों के साथ मिथ्यापुर में भूमिगत होकर अपने घावों का उपचार करा रहे हैं, महाराज !

मोहराज :- और चेतनराज की भावी योजना अब क्या है ?

काम कुमार :- सम्यक्त्वराज के जन्म लेते ही, उन्हें देहादिक पर पदार्थों से भिन्न अपने चैतन्य स्वरूप की पहचान हो गई है। ज्ञानदेव के कारण उन्हें अपनी अनन्त शक्तियों का भान हो चुका है। उन्होंने संकल्प किया है कि हमें जड़ समूल नष्ट कर, अविलंब मुक्तिपुरी पहुँचेंगे ताकि भव-भ्रमण के अनन्त अनंत दुःखों से सदा के लिये छुटकारा पा सकें।

मोहराज :- बहुत अभिमानी हो गया है चेतन ! ..... हमें जड़ समूल नष्ट करेगा ! मुक्तिपुरी पहुँचकर सदा सदा के लिए भव-भ्रमण के दुःखों से मुक्ति पा लेगा !! .....यदि उसने दर्पण में अपना मुख देखा होता तो ऐसा संकल्प कदापि न करता। ..... कायर कहीं का ..... नीच, नराधम ! हमारी शक्ति से अनभिज्ञ, किंचित् विजय पाकर मदान्ध हो गया है। ..... अविलंब उसे इन कुकृत्यों के लिए दंडित करना होगा।

रागराज :- महाराज ! इसमें सन्देह नहीं कि हमारी अपरिमित क्षति हो चुकी है। किन्तु अधिक चिन्तित न हों। अभी सेनाधिपति कुंवर मिथ्यात्वराज जीवित हैं। शीघ्र ही वे स्वस्थ होकर चेतनराज को छठी का दूध याद करा देंगे।

मोहराज :- ठीक कहा आपने मंत्रीवर ! सेनाधिपति मिथ्यात्वराज तो हमारे प्राण हैं। उनका जीवन, हमारा जीवन है, और उनका अवसान हमारा अवसान। (काम कुमार से) काम कुमार ! सेनाधिपति के लिए आवश्यक उपचार सामग्री जुटाने का भरसक प्रयत्न करो। और हाँ ..... सभी सेनानायकों को हमारा आदेश पहुँचा दो कि वे सावधानी पूर्वक सेना की व्यूह रचना करें। हमें सन्देह है कि चेतन अब देशव्रतपुर, प्रमत्तपुर, अप्रमत्तपुर आदि नगरों पर

आक्रमण करेगा। ..... (कुछ देर चुप रहकर फिर काम कुमार से) ..... कुंवर अप्रत्याख्यानावरण और वीर योद्धा अविरत कुमार इस समय कहाँ हैं ?

काम कुमार :- वे अव्रतपुर में चेतनराज से युद्धरत हैं। कुंवर प्रत्याख्यानावरण और कुंवर संज्वलन भी अपने महासुभटों क्रोध, मान, माया और लोभ सहित उन्हीं के साथ हैं।

मोहराज :- अपने सेनानायकों की कर्तव्य निष्ठता से हम प्रसन्न हैं। ..... काम कुमार ! उन्हें हमारा सन्देश पहुँचाओ कि वे चेतन को इतना त्रस्त करें, इतना त्रस्त करें कि वह देशव्रतपुर पर आक्रमण करने का साहस ही न जुटा सके !

काम कुमार :- आज्ञा शिरोधार्य है, स्वामी ! शीघ्र ही परिपालन होगा। श्री- चरणों में सेवक का प्रणाम !

(सिर झुकाता है और जाता है।)

— पटाक्षेप —

दिगम्बर मुनि कैसा हो ?

विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः।
ज्ञानध्यान तपोरक्तस्तपस्वी स प्रशस्मते ॥ १० ॥

– श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार

अर्थ– जिसे पाँच इन्द्रियों के विषयों की आशा-वांछा नहीं, जो छह काय के जीवों का घात करने वाले आरंभ से रहित हो, और अन्तरंग-बहिरंग समस्त प्रकार के परिग्रह से रहित हो तथा ज्ञान-ध्यान-तप में आसक्त हो, ऐसे चार विशेष सहित जो तपस्वी अर्थात् गुरु होता है वह प्रशंसा योग्य है।

(छठवां - दृश्य)

[अव्रतपुर उद्यान का दृश्य। सुकृत कुमार और विवेक कुमार टहलते हुए परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं।]

विवेक कुमार :- मित्र ! अव्रतपुर आक्रमण के समय दुष्कृत कुमार और उसके महासुभटों को पराजित करने में तुमने जो रण कौशल दर्शाया, वह स्तुत्य है।

सुकृत कुमार :- धन्यवाद मित्र ! मैं कृतार्थ हुआ।

विवेक कुमार :- अव्रतपुर में भी मोहराज के प्रबल सेनानायक अप्रत्याख्यानावरण अपने चारों महासुभटों क्रोध मान, माया और लोभ की सहायता से हमारे विरुद्ध युद्धरत हैं। दुष्कृत कुमार और अविरत कुमार भी जब तब हमें त्रस्त किये रहते हैं। ये जब जब भी सम्यक्त्वराज को लक्ष्य करके आठ दोष, आठ मद, छह अनायतन और तीन मूढ़ताओं के विस्फोटक गोले चलाते हैं, तब तब तुम और तुम्हारे वीर महासुभट प्रशम, संवेग, आस्तिक्य और अनुकम्पा के सुरक्षा- चक्र मंडल से न केवल सम्यक्त्वराज की रक्षा करते हो अपितु अव्रतपुर की प्रजा की रक्षा में भी प्रयत्नरत रहते हो। इतना ही क्यों ? आठ अपूर्व गुणास्त्रों का प्रयोग कर तुमने हमेशा ही उनके विस्फोटक गोलों को निस्तेज किया है। इस अनूठे कृतित्व के लिए मेरा साधुवाद स्वीकार करो मित्र !

सुकृत कुमार :- साधुवाद के पात्र तो वस्तुतः सम्यक्त्वराज हैं विवेक ! उनके ही मंगल सान्निध्य में मुझे प्रशम, संवेग, आस्तिक्य और अनुकम्पा का सुरक्षा चक्र मंडल तथा निःशंकित, निःकांक्षित आदि आठ अपूर्व गुणास्त्र प्राप्त हुए हैं। ..... फिर, मैं अविरत कुमार के भीषण आक्रमण का प्रतिकार करने में भी तो अब तक असफल रहा हूँ। तुम भी इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं हो। ..... हाँ, इतना अवश्य है कि मैंने और मेरे शूर वीरों ने अपने कर्तव्य का पालन निष्ठापूर्वक किया है। किन्तु ..... (मौन हो जाता है।)

विवेक कुमार :– किन्तु क्या मित्र ?

सुकृत कुमार :– मैं अनुभव कर रहा हूँ कि अव्रतपुर पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् महाराज चेतनराज को मुझसे वैसा अनुराग नहीं रहा, जैसा कि पूर्व में था।

विवेक कुमार :– ऐसा कटु अनुभव तुम्हें क्यों हुआ सुकृत ?

सुकृत कुमार :– विवेक ! पहले जब भी मैं महाराज से मिलता, तो वे कहते, – "सुकृत कुमार तुम्हारी उपस्थिति मात्र से मेरे हृदय को अपूर्व शान्ति मिलती है।" ..... मेरा आदर करते, सम्मान देते, और मुझ पर अपार स्नेह दर्शाते किन्तु अब ....।

विवेक कुमार :– "अब" क्या मित्र ?

सुकृत कुमार :– अब जब भी भेंट करने जाता हूँ, वे मुझमें कोई रूचि नहीं लेते। कुशलक्षेम पूछने की औपचारिकता का निर्वाह तो करते हैं, किन्तु उनकी दृष्टि कहीं और रहती है। मैं स्पष्ट अनुभव करता हूँ कि उनके हृदय में अब मेरे प्रति न पूर्व की भाँति आदर है, और न अनुराग। मुझसे बात करते हैं, तब भी उनका चित्त कहीं और लगा रहता है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो मैं उनकी प्रयोजन सिद्धि में कोई बाधक और अनुपादेय तत्व हूँ।

विवेक कुमार :– किन्तु महाराज ने कभी तुम्हारा तिरस्कार तो नहीं किया ?

सुकृत कुमार :– (म्लान हँसी हँसकर) हाँ, तिरस्कार तो नहीं किया, किन्तु अब सत्कार ही कब करते हैं ! हृदयहीन उपेक्षित औपचारिकता के सिवा अब उनके पास मेरे लिए है ही क्या ? प्रायः वे ज्ञानदेव, श्रद्धादेवी, सुबुद्धि देवी आदि से चर्चा में व्यस्त रहते हैं। श्रद्धादेवी के किशोर पुत्र सम्यक्त्वराज पर तो वे विमोहित ही हैं।

विवेक कुमार :– श्रद्धादेवी का यह तेजस्वी पुत्र है भी तो अपूर्व सुंदर और आकर्षक !............. उसके व्यक्तित्व के अलौकिक तेज ने तो हम सबके

अन्तःस को आलोकित कर दिया है । सम्यक्त्वराज के ही मंगल सान्निध्य में मुझे भी दिव्य भेद -चक्र प्राप्त हुआ था, जिसके प्रयोग से मिथ्यात्वराज लड़खड़ाकर भूलुंठित हो गए थे । मेरा तो जीवन-अस्तित्व ही सार्थक हो गया सुकृत कुमार ! तीन लोक में ऐसा कौन है, जो सम्यकत्वराज के सुन्दर- सलोने और आकर्षक व्यक्तित्व पर मुग्ध न हो ।

सुकृत कुमार :- तुम्हारा कथन अक्षरसः सत्य है विवेक ! मैं स्वयं भी इस तेजस्वी किशोर के समक्ष नत-मस्तक हो जाता हूँ । सदा उसके साथ रहने को जी चाहता है । मैं जानता हूँ कि सम्यक्त्वराज मेरी उपस्थिति को उपेक्षाभाव से ही स्वीकार करते हैं, किन्तु न जाने क्यों, मुझे उनके सान्निध्य में गौरव का ही अनुभव होता है । किन्तु ..... (चुप हो जाता है ।)

विवेक कुमार :- "किन्तु" क्या सुकृत कुमार ?

सुकृत कुमार :- महाराज चेतनराज की उपेक्षा-दृष्टि से हृदय विदीर्ण हुआ जाता है ।

विवेक कुमार :- तो ..... (कुछ देर सोचता है, फिर) ..... अपनी चिन्ता के निराकरण का क्या उपाय सोचा है तुमने ?

सुकृत कुमार :- मैं तो असमंजस में हूँ । कई बार इच्छा होती है कि माँ के पास चला जाऊँ । फिर सोचता हूँ कि अब किस मुँह से उनके पास जाऊँगा । ..... और चला भी गया, तो वहाँ दुष्कृत कुमार के व्यवहार से तो और भी सन्तप्त हो जाऊँगा । यहाँ कम से कम सम्यक्त्वराज के निकट रहकर हृदय अपूर्व शान्ति का तो अनुभव करता है ! ..... एक विचार यह भी मेरे मन को आशान्वित करता है कि जीवन में अभी अनेक अवसर आएँगे, जब यहाँ रहकर अपनी सेवा से महाराज को प्रसन्न कर सकूँगा । .....लक्ष्य-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना, अपना कर्त्तव्य है । ..... फिर जो भाग्य में हो ।

विवेक कुमार :- निराश मत होओ, सुकृत कुमार ! तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है ।

सुकृत कुमार :– तुम भविष्य की कहते हो ! मैं वर्तमान के लिए चिन्तित हूँ विवेक !! पिता की उपेक्षा-दृष्टि पुत्र पर कैसा वज्रपात करती है, इसे कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है।

विवेक कुमार :– (क्षितिज की ओर निहारता हुआ) ओह ! वार्त्तालाप में समय का ध्यान ही न रहा। सूर्यास्त होने को है। देशव्रतपुर पर आक्रमण की तैयारी करना है। अनेक कार्य करने शेष हैं। अब चलूँ।

सुकृत कुमार :– देशव्रतपुर पर आक्रमण के समय मेरी क्या भूमिका होगी, विवेक ! .... मित्र के रूप में सत्परामर्श चाहूँगा, और सेनापति के रूप में तुम्हारा आदेश।

विवेक कुमार :– (कुछ सोचकर) अपने महासुभटों और उनकी असंख्य सेना के साथ तुम अव्रतपुर की सीमा पर पहुँचकर मेरी प्रतीक्षा करो। पूज्यवर ज्ञानदेव से परामर्श करके मैं वहीं तुम्हें योग्य निर्देश दूँगा।............. अच्छा, अब चलें।

(दोनो जाते हैं)

— पटाक्षेप —

सम्यक्‌दर्शन की महिमा

न सम्यक्त्व समं किंचित्त्रैकाल्ये त्रिजगत्यपि।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्व समं नान्यत्तनूभृताम ॥ ३४ ॥

— श्री रत्नकरण श्रावकाचार

अर्थ– इस जीव को सम्यक्‌दर्शन समान तीन काल और तीन लोक में और कोई कल्याणकारी नहीं और मिथ्यात्व समान तीन काल — तीन लोक में अन्य कोई अकल्याणकारी नहीं।

(सातवां दृश्य)

[अव्रतपुर की सीमा पर वन- प्रदेश में एक पेड़ की छाँह में सुकृत कुमार अपने पाँचों महासुभटों, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के साथ विचार विमर्श करता हुआ।]

सुकृत कुमार :– मेरे वीर सेनानियों ! अव्रतपुर दुर्ग पर आक्रमण के समय और फिर अव्रतपुर में भी आप सबने अपूर्व रण कौशल दर्शाया। दुष्कृत कुमार और उसके महासुभटों को जिस वीरता से तुमने ससैन्य पराजित किया, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

अहिंसा :– किन्तु अव्रतपुर में तो हमारे योगदान का कोई मूल्यांकन नहीं है। कोई प्रशंसा भी करता है तो, बस मुँह देखी।

अपरिग्रह :– हाँ स्वामी ! अन्तःकरण पूर्वक कोई सराहना नहीं करता।

सत्य :– यही बात है, स्वामी ! मैंने स्वयं मंत्रीवर ज्ञानदेव के निकटवर्त्तियों से यह वार्त्ता सुनी है कि सुकृत कुमार और उसके महासुभट ससैन्य हमारी सहायता करने को बाध्य थे। इसके सिवा उनकी अन्य कोई नियति ही नहीं थी।

सुकृत कुमार :– मेरे वीर साथियों ! हम केवल महाराज चेतनराज के प्रति उत्तरदायी हैं। मुझे भय है कि व्यर्थ की इन तुच्छ बातों से हतोत्साहित होकर कहीं हम अपनी शक्ति ही क्षीण न कर बैठें। मत भूलो कि मोहराज के वीर सेनानी अविरतकुमार के आक्रमण का कोई कारगर प्रत्युत्तर हम अब तक भी नहीं दे पाए हैं। देशव्रतपुर पर आक्रमण के समय हमें युद्ध में अपना शक्ति भर शौर्य दर्शाना है और इसके लिए तुम्हें और भी दक्षता पूर्वक सेना की व्यूह-रचना करना होगी।

(कुछ देर सभी मौन रहते हैं। फिर पांचों महासुभट परस्पर कानाफूसी करते हैं।)

अहिंसा :– (मौन तोड़ते हुए) हमने अपनी शक्ति के नवीन स्रोतों की खोज कर ली है स्वामी ! देशव्रतपुर पर आक्रमण के समय हम उसका प्रभावी

उपयोग करेंगे। हमें विश्वास है कि हमारे अभूतपूर्व रण कौशल से प्रसन्न होकर महाराज चेतनराज निश्चित ही हमें पुरस्कृत करेंगे।

सुकृत कुमार :– (उत्साहित होकर) कैसे ? - - - - - - किस प्रकार ? मुझे भी अवगत कराओ इन नवीन शक्ति स्रोतों से।

अहिंसा :– हमने निश्चित किया है स्वामी, कि हम कुछ काल वीर सेनानी चारित्रवीर की सेवा में व्यतीत करेंगे। उनके सान्निध्य में 'साधना-अनुष्ठान-विधि' के द्वारा पाँच प्रकार के अणुव्रतास्त्र, तीन प्रकार के गुण व्रतास्त्र, और चार प्रकार के शिक्षा व्रतास्त्र प्राप्त करेंगे। युद्ध भूमि में इनके प्रयोग से न केवल दुष्कृत कुमार और उनके महासुभट बल्कि अविरत कुमार और सेनानायक अप्रत्याख्यानावरण भी इतने आतंकित हो जाएँगे कि फिर कभी वे महाराज चेतनराज का सामना करने का साहस न कर सकेंगे।

सुकृत कुमार :– (प्रसन्न होकर) साधुवाद मेरे वीर साथियो ! तुम्हारी जितनी सराहना की जाए, कम है। ..... (स्वगत्) ..... देखता हूँ, अब ज्ञानदेव, श्रद्धादेवी आदि कब तक मुझे महाराज चेतनराज से पृथक रखते हैं। ..... (प्रगट में) ..... मेरे शूरवीर योद्धाओं ! सेनापति विवेक कुमार का कोई आदेश प्राप्त हो इसके पूर्व, आप लोग चारित्र वीर के सान्निध्य में शक्ति के नवीन स्रोत अर्जित करने का प्रयास करो। अच्छा ..... अब चलें।

(सभी जाते हैं।)

– पटाक्षेप –

मैं एक अखंड ज्ञायक मूर्ति हूँ। विकल्प का एक अंश भी मेरा नहीं है। ऐसा स्वाश्रय भाव रहे वह मुक्ति का कारण है ; और विकल्प का एक अंश भी मुझे आश्रयरूप है – ऐसा पराश्रयभाव रहे, वह बंध का कारण है।

– पूज्य कानजी स्वामी

– : तृतीय - अंक : –

(प्रथम - दृश्य)

[मोहराज का सभागृह। मोहराज राजसिंहासन पर विराजमान हैं। मंत्री-द्वय रागराज और द्वेषराज भी अपने अपने आसनों पर आसीन हैं। कुछ सभासद भी बैठे हुए हैं।]

द्वारपाल :– महाराज की जय हो। गुप्तचर प्रधान काम कुमार द्वार पर अनुमति की प्रतीक्षा में खड़े हैं।

मोहराज :– आने दो उन्हें।

(काम कुमार आता है।)

काम कुमार :– प्रणाम त्रिलोकाधिपति। (प्रणाम करता है।)

मोहराज :– आओ काम कुमार ! कैसे आगमन हुआ, समर भूमि का क्या वृत्तान्त है ?

काम कुमार :– (दुःखी स्वर में) हम पराजित हो गए, त्रिभुवनपति। चेतनराज ने देशव्रतपुर पर विजय प्राप्त कर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है।

मोहराज :– (साश्चर्य) क्या कहा ? चेतन ने देशव्रतपुर पर भी प्रभुत्व स्थापित कर लिया ?

काम कुमार :– हाँ स्वामी ! अविलंब कुछ उपाय करें, अन्यथा हमारा सम्पूर्ण परिकर शनैः शनैः अवसान को प्राप्त हो जाएगा।

मोहराज :– (घबड़ाहट भरी उत्तेजना में) ओह ! ..... हम तो कुंवर अप्रत्याख्यानावरण को देशव्रतपुर की सुरक्षा का भार सौंपकर बिल्कुल निश्चिंत थे। उनकी सहायता के लिए हमारे विभिन्न सेनानायक भी अपनी असंख्य-असंख्य सेना लिए वहाँ विद्यमान थे। आश्चर्य कि इन सबके रहते चेतनराज ने हमसे देशव्रतपुर छीन लिया ! ..... काम कुमार ! यह सब कैसे हुआ, क्योंकर हुआ, हमें सविस्तार अवगत कराओ !

काम कुमार :– स्वामी ! कुंवर अप्रत्याख्यानावरण ने जब चेतनराज को देशव्रतपुर की ओर बढ़ते देखा तो वे अपने महासुभटों क्रोध, मान, माया, लोभ आदि को साथ लेकर वीर सेनानी अविरत कुमार और कुंवर दुष्कृत कुमार सहित ससैन्य अव्रतपुर दुर्ग की सीमा पर आकर डट गए। वहीं देशव्रतपुर में प्रवेश करने को उद्यत चेतनराज के सेनापति विवेक कुमार से इनकी मुठ-भेड़ हुई। कुंवर सुकृत कुमार भी ससैन्य विवेक कुमार के ही साथ थे। दोनों ओर से भयानक संग्राम हुआ। कुंवर दुष्कृत कुमार ने सम्यक्त्वराज पर आठ मद, आठ दोष, छह अनायतन और तीन मूढ़ताओं के २५ विस्फोटक गोलों का अनेक बार प्रयोग किया। किन्तु कुंवर सुकृत कुमार ने आठ अपूर्व गुणास्त्रों का संचालन करके हर बार न केवल सभी विस्फोटक गोले निस्तेज कर दिए, बल्कि कुंवर दुष्कृत कुमार को भी बुरी तरह घायल कर दिया। इस पर वीर सेनानी अविरत कुमार बहुत उत्तेजित हो गए। ..... किन्तु उन्होंने युक्ति से काम लिया।

मोहराज :– (उत्सुक होकर) क्या किया अविरत कुमार ने ?

काम कुमार :– उन्होंने गुप्तचर कुमन कुमार को बुलाया और धीमे से उससे कुछ कहा। पूरी योजना समझकर गुप्तचर कुमन कुमार स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रौण इन पाँच वीर इन्द्रिय बालाओं को अपने साथ लेकर चेतनराज की सेना में घुस गया। युद्ध-कला की विभिन्न विधाओं में प्रवीण ये पाँचों इन्द्रिय बालाएँ अनेक प्रकार के हाव-भाव, विलास-विभ्रम और कटाक्षों के शस्त्र चलाकर चेतनराज के अनेक योद्धाओं के हृदय घायल करने लगीं। प्रत्येक इन्द्रिय बाला ने अपनी अपनी विधा के व्यामोह शरों से चेतनराज और उनकी सेना को इतना त्रस्त किया कि कुछ काल तक तो शत्रु पक्ष दिग्भ्रमित-सा हो गया। इसी अवसर पर वीर सेनानी अविरत कुमार ने छह काय के घात रूप अनेक प्रकार के अव्रतायुधों की बौछार से चेतनराज की सेना में त्राहि-त्राहि मचा दी। चेतनराज के अनेक सेनानी बुरी तरह घायल हुए। अनेक हताहत हुए। उनकी समूची सेना में आतंक छा गया।

मोहराज :– (उत्साह से) वाह ! कुंवर अविरत कुमार भी एक ही सेनानी है !! ..... फिर क्या हुआ काम कुमार ?

काम कुमार :– त्रिभुवनपते ! ..... अपनी सेना की यह दयनीय दशा देखकर ज्ञानदेव ने चेतनराज को सावधान किया। उधर सेनापति विवेक कुमार ने बिना विलंब किये देशव्रतपुर दुर्ग के द्वार पर प्रचण्ड धावा बोल दिया। दुर्ग-द्वार पर आ डटे कुंवर अप्रत्याख्यानावरण के चारों महासुभटों क्रोध, मान, माया और लोभ ने बड़ी वीरता से शत्रु-सैन्य पर प्रत्याक्रमण किया। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ। रण भूमि में विचरण कर रहे असंख्य-असंख्य सैनिकों के पावों से उड़ी धूल से गगन-मंडल में ऐसी धुंध छा गई कि दिवा-काल में ही निशा आगमन का भ्रम होने लगा।

कुंवर अप्रत्याख्यानावरण के महासुभटों ने चेतनराज पर आर्त्तध्यान का चक्र चलाया, जिसे चारित्रवीर ने धर्म- ध्यान की ढाल से रोका। तभी चारित्रवीर ने चेतनराज का संबल पाकर स्वरूपाचरण के आग्नेय बाणों से कुंवर अप्रत्याख्यानावरण पर भयावह आक्रमण किया। इससे हमारे कुंवर- श्री का हृदय विदीर्ण हो गया। शरीर बुरी तरह घायल हो गया। वे भूमि पर लोटने लगे। उनके चारों और सेनानायक नाम के पाँच महासुभट भी बुरी तरह घायल हो गए। महासुभट नरकायुकुमार तो काल-कवलित ही हो गए। दुर्ग का द्वार टूट गया। और चेतनराज की सेना ने दुर्ग में प्रवेश किया।

मोहराज :– (क्रोधित स्वर में) ओह ! ..... दुष्ट चेतन ! बड़ा दुस्साहस किया तूने। ..... (कुछ देर चुप्पी छाई रहती है। फिर काम कुमार से) ..... फिर क्या हुआ ?

काम कुमार :– दुर्ग में प्रवेश करते ही सुकृत कुमार ने १२ प्रकार के अपूर्व व्रतास्त्रों का प्रयोग कर कुंवर अविरत कुमार को घायल कर दिया। उधर कुंवर दुष्कृत कुमार ने पुनः साहस जुटाकर चेतनराज की सेना पर रौद्रध्यान की अनेक बर्छियाँ चलाईं। ..... किन्तु कुंवर सुकृत कुमार ने देश-संयम चक्र चलाकर उनके सभी आयुध निष्प्रभावी कर दिये। कुंवर दुष्कृत कुमार फिर बुरी तरह घायल हुए। उन्हें रण क्षेत्र छोड़ना पड़ा। तब -

- - - - - तब महाराज ! सेनापति विवेक कुमार ने विजय-दर्प के साथ देशव्रतपुर पर भी चेतनराज की विजय-पताका फहराई।

मोहराज :– सुकृत कुमार ने गुणास्त्र, व्रतास्त्र, और देश-संयम चक्र जैसे अचूक और अनूठे शस्त्रास्त्र कहाँ से पाए ?

काम कुमार :– सम्यक्त्वराज और चारित्रवीर की कृपा से महाराज !

मोहराज :– (कुछ सोचता हुआ) ओह ! ..... फिर क्या हुआ ?

काम कुमार :– महाराज, देशव्रतपुर की प्रजा ने चेतनराज की भावभीनी अगवानी की। उन्हें "श्रावक" पद से विभूषित किया। घर-घर दीप जलाए। उनके स्वागतार्थ विभिन्न स्थानों पर ग्यारह तोरण द्वार सजाए गए। इन तोरण द्वारों पर दर्शन, व्रत, सामायिक आदि ग्यारह प्रतिमाएँ एक-एक करके क्रम से उपस्थित हुईं। उन्होंने चेतनराज का जयघोष किया। उनके उन्नत ललाट पर मंगल टीका किया। आरती उतारी। मांगलिक गीत गाए। ग्यारहवीं उद्दिष्टविरत प्रतिमा ने प्रथम चरण में तो उनका "क्षुल्लक" के रूप में और दूसरे चरण में "ऐल्लक" के रूप में सादर अभिनन्दन किया। और ..... ।

मोहराज :– (बात काटते हुए बीच में ही आवेश भरे स्वर में) बस, बस, बहुत हो चुका। .....(मंत्रियों से) ..... मंत्रीद्वय ! अनादिकाल से हमारी दासता को अपना सौभाग्य मानने वाले, पग-पग पर हमारी चिरौरी करने वाले, इस चेतन का ऐसा दुस्साहस ! ..... जिसके जीवन की प्रत्येक श्वाँस पर हमारा पहरा रहता आया, आज वही हमारी श्वाँसों का अपहरण करने पर तुला है ? ..... पानी सिर से ऊपर गुजरने लगा है। त्वरित कोई उपाय कीजिए, अन्यथा हमारा सम्पूर्ण परिकर रसातल में चला जाएगा।

रागराज :– हमारा दुर्भाग्य है महाराज कि हमारे प्रधान सेनाधिपति कुंवर मिथ्यात्वराज अभी भी घायल पड़े हैं। इसीसे चेतनराज का दु:स्साहस दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है।

मोहराज :– चिन्ता का विषय तो यही है। ..... ओह ! ..... सम्यक्त्वराज और विवेक कुमार ने हमारे हृदय के टुकड़े की कैसी दुर्दशा

की है ? (भावुक होकर) मंत्रीवर ! उसकी पीड़ा देखी नहीं जाती । हम स्वयं उसका कुशलक्षेम पूछने मिथ्यापुर गए थे । भेद चक्र के कठोर आघात और अनुभूति के मर्मभेदी बाणों से उसकी समूची देह छलनी हो चुकी है । असह्य वेदना से वह बार बार कराहता रहता है । ..... (आंखों में आंसू आ जाते हैं ..... आंखे पोंछते हैं । कुछ देर सभा में सन्नाटा-सा छा जाता है । फिर प्रकृतिस्थ होकर काम कुमार से) कुंवर प्रत्याख्यानावरण तो देशव्रतपुर में ही हैं न ?

काम कुमार :– हाँ महाराज ! वे भरसक इस चेष्टा में हैं कि चेतनराज प्रमत्तपुर-अप्रमत्तपुर आदि नगरों पर आक्रमण करने का साहस न कर सकें । उनके चारों महासुभटों क्रोध, मान, माया, और लोभ ने ६० अति चार योद्धाओं को साथ लेकर देशव्रतपुर में आतंक मचा रखा है । चेतनराज उनसे बहुत त्रस्त हैं । ..... किन्तु महाराज, बिना सेनाधिपति के .....

मोहराज :– सेनाधिपति की अनुपस्थिति में हमारा दायित्व और बढ़ गया है काम कुमार ! जाओ, सभी सेनानायकों और कुंवर प्रत्याख्यानावरण तथा कुंवर संज्वलन को हमारा यह आदेश पहुँचाओ कि देशव्रतपुर की सीमा पर सेना की व्यूह रचना और सुदृढ़ करें, ... ताकि चेतनराज प्रमत्तपुर पर आक्रमण करने का दु:स्साहस न कर सके । ..... आगत समाचार विजय-सूचक होने चाहिए !

काम कुमार :– आदेश- परिपालन अविलंब होगा स्वामी ! जाता हूँ । श्री-चरणों में प्रणाम ।

(प्रणाम करके जाता है । महाराज मोहराज अपने आसन से उठ जाते हैं । सभी अपने अपने आसन से उठकर खड़े हो जाते हैं । सभा विसर्जित हो जाती है ।)

– पटाक्षेप –

(द्वितीय-दृश्य)

[देशव्रतपुर गढ़ के महल का भीतरी प्रकोष्ठ। ज्ञानदेव टहल रहे हैं। विवेक कुमार का आगमन।]

विवेक कुमार :– (प्रणाम करते हुए) प्रणाम पूज्यवर !

ज्ञानदेव :– स्वस्ति वत्स ! क्या समाचार हैं ? देशव्रतपुर में प्रजाजन कुशल-मंगल तो हैं ?

विवेक कुमार :– सब कुशल हैं, पूज्यवर ! चारों ओर सुख-शान्ति है, किन्तु सुकृत कुमार .....।

ज्ञानदेव :– असन्तुष्ट है, यही न कहना चाहते हो तुम !

विवेक कुमार :– जी पूज्यवर ! सुकृत कुमार को शिकायत है कि अव्रतपुर आक्रमण के समय से ही महाराज चेतनराज उसमें कोई रूचि नहीं ले रहे। उन्हें, उसके प्रति, न तो पूर्व की भाँति अनुराग है, और न आदर। वे उसे हेय दृष्टि से निहारने लगे हैं। इससे उसका हृदय टूट गया है।

ज्ञानदेव :– (गम्भीर स्वर में) सुकृत कुमार की शिकायत असत्य नहीं है विवेक !

विवेक कुमार :– (विनम्रता से) सुकृत कुमार के निमित्त से महाराज चेतनराज का हमसे साक्षात्कार हो पाया। अव्रतपुर में दुष्कृत कुमार को ससैन्य पराजित करने में उसने बड़ी वीरता का परिचय दिया। देशव्रतपुर पर आक्रमण के समय और अभी देशव्रतपुर में भी विभिन्न प्रकार के गुणास्त्रों और व्रतास्त्रों का प्रयोग कर सुकृत कुमार ने शत्रु-दल को आतंकित कर दिया। क्या यह सब उपेक्षा योग्य है पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :– (हँसकर) भूलते हो वत्स ! क्या तुम सुकृत कुमार की प्रकृति से अनभिज्ञ हो ? ..... यह ठीक है कि उसके निमित्त से ही महाराज चेतनराज का हमसे सर्वप्रथम साक्षात्कार हो पाया। किन्तु तब भी यदि महाराज स्वयं अपने परिजनों में रूचि नहीं लेते तो सुकृत कुमार का निमित्त क्या

करता ? इसमें तुम्हें महाराज की महत्ता क्यों दृष्टिगोचर नहीं होती ? ..... और यदि निमित्त पर ही तुम्हारा बल है, तो यह बताओ कि सुकृत कुमार ने विभिन्न प्रकार के गुणास्त्र और व्रतास्त्र किसके संसर्ग से प्राप्त किये ?

विवेक कुमार :- सम्यक्त्वराज और चारित्रवीर की कृपा से पूज्यवर !

ज्ञानदेव :- देखो विवेक ! सुकृत कुमार को सम्यक्त्वराज और चारित्रवीर के सान्निध्य में ये दिव्यास्त्र प्राप्त हुए। इनके बिना अन्य किसी के संसर्ग में उसे ये दिव्यास्त्र प्राप्त नहीं हो सकते थे। किन्तु इन्हें प्राप्त उसने अपनी योग्यता से ही किया।

विवेक कुमार :- योग्यता से ? ..... कैसे पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :- जैसे सुकृत कुमार के निमित्त से महाराज चेतनराज ने अपनी योग्यता से ही हम सबका परिचय प्राप्त किया, वैसे ही सम्यक्त्वराज और चारित्रवीर के निमित्त से सुकृत कुमार ने अपनी योग्यता से ही ये दिव्यास्त्र प्राप्त किये। ..... वत्स ! प्रत्येक वस्तु उचित निमित्त की सन्निधि में स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी उपादान-शक्ति से कार्य रूप परिणमन करती है। ..... और उपादान शक्ति की अभिव्यक्ति अपनी तत्समय की योग्यता पूर्वक हुआ करती है।

विवेक कुमार :- योग्यता के अविर्भाव को निमित्त के सन्निधान की अपेक्षा तो है न पूज्यवर !

ज्ञानदेव :- (हँसते हुए) वस्तु व्यवस्था ऐसी पराधीन नहीं है विवेक ! किसी वस्तु में कार्य-निष्पत्ति की योग्यता हो, और निमित्त अनुपस्थित रहे, यह असंभव है। ..... हाँ, होगा निमित्त उचित ही। महाराज अपने परिजनों का परिचय सुकृत कुमार के ही निमित्त से कर पाए, दुष्कृत कुमार के निमित्त से नहीं। इसी प्रकार सुकृत कुमार सम्यक्त्वराज और चारित्रवीर के निमित्त से ही गुणास्त्र और व्रतास्त्र प्राप्त कर पाया, अन्य किसी के निमित्त से नहीं। ..... (कुछ रुककर) निमित्त की अपेक्षा निष्पन्न कार्य को नैमित्तिक कहते हैं, जबकि उपादान की अपेक्षा निष्पन्न कार्य को उपादेय। स्मरण रखो कि निमित्त स्वयं

एक स्वतन्त्र द्रव्य है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव रूप उसका अपना चतुष्टय है। वह अपना परिणमन अपने चतुष्टय में रहकर ही करता है। प्रत्येक द्रव्य का अपना चतुष्टय होता है। अपना चतुष्टय छोड़कर कोई भी द्रव्य, परद्रव्य के चतुष्टय में प्रवेश नहीं करता और न किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप ही करता है।

वत्स ! निमित्त रूप द्रव्य के स्वोचित परिणाम को नैमित्तिक द्रव्य के स्वोचित परिणमन में कार्य-विशेष की दृष्टि से अनुकूल देखकर ही, दो द्रव्यों में कर्ता-कर्म संबंध आरोपित करने का लोकाचार प्रचलित है। वस्तुतः तो यह निमित्त-नैमित्तिक संबन्ध है, न कि कर्ता-कर्म संबन्ध।

विवेक कुमार :– तो कर्ता कर्म संबंध की मीमांसा क्या है, पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :– जो परिणमन करे, वही कर्ता होता है। 'परिणाम' कर्ता का कर्म होता है और 'परिणति' उसकी क्रिया। अभेद-दृष्टि से ये तीनों एक ही द्रव्य की अवस्थाएँ हैं। निश्चय से तो कर्ता-कर्म संबंध एक ही द्रव्य में बनता है। जहाँ व्याप्य-व्यापक भाव का सदभाव पाया जाता है, वहीं कर्ता-कर्म संबन्ध बनता है। ..... विवेक ! स्मरण रखो, कि दो द्रव्य मिलकर किसी एक कार्य को उत्पन्न नहीं करते। ..... और न दो कार्यों की निष्पत्ति एक द्रव्य के द्वारा ही संभव है। प्रत्येक द्रव्य स्वतन्त्र रहकर अपना कार्य, अपने में, अपने ही कारण से, अपने लिये, अपने आधार से, अपने समय में करता है।

विवेक कुमार :– इससे तो यह स्पष्ट हुआ कि प्रत्येक द्रव्य निरपेक्ष है, उसका परिणमन निरपेक्ष है और इस तरह कार्य-निष्पत्ति का उत्पाद-क्षण भी निश्चित और क्रम नियमित है।

ज्ञानदेव :– हाँ, ऐसा ही है। प्रत्येक वस्तु सत्स्वरूप है। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य यही वस्तु का सत् है। तीनों लक्षण वस्तु में एक साथ, एक समय में है। किन्तु फिर भी जो उत्पाद है, वह व्यय और ध्रौव्य नहीं, जो व्यय है, वह उत्पाद और ध्रौव्य नहीं और जो ध्रौव्य है, वह उत्पाद और व्यय नहीं।

विश्व की प्रत्येक वस्तु प्रति समय ऐसी ही त्रिकाल अबाधित स्वतन्त्रता का उपभोग कर रही है।

विवेक कुमार :– (मुग्ध होकर) अहा ..... हा ! उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य इन तीनों लक्षणों की वस्तु में एक साथ, एक ही समय में प्रसिद्धि ! वस्तु-सत् की कैसी तलस्पर्शी मीमांसा है यह !..... कितनी मधुर ..... कितनी सरस ..... और कितनी युक्तियुक्त ..... हृदय उपकृत हुआ पूज्यवर !! ..... किन्तु ..... ?

ज्ञानदेव :– 'किन्तु' ..... क्या वत्स ?

विवेक कुमार :– अपने तईं सुकृत कुमार ने जो कुछ किया, उसका कोई तो मूल्य है ?

ज्ञानदेव :– है वत्स, किन्तु उपचार से। ..... औपचारिक रूप से सुकृत कुमार की सराहना की जा सकती है। उसका उपकार भी माना जा सकता है। किन्तु परमार्थ से तो - - - - - - देखो विवेक ! ..... सुकृत कुमार की प्रकृति बड़ी विचित्र है। हृदय से वह महाराज चेतनराज के साथ है। किन्तु अपने जन्म जात संस्कारों के कारण, वह जो कुछ करता है, परोक्षत: उसका पूरा लाभ मोहराज को ही प्राप्त होता है।

विवेक कुमार :– यह किस प्रकार पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :– (कुछ देर चुप रहने के बाद)..... वत्स तुमने कभी गगन-मंडल में उमड़ते घुमड़ते मेघ समूह पर दृष्टिपात किया है ? ..... काले कजरारे मेघों के ये छोटे छोटे समूह व्योमराज के ही प्रांगण में जन्म लेते, पलते और बढ़ते हैं। वहीं स्वच्छन्द होकर नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ करते हैं। कभी मुक्त होकर विचरण करते हैं, तो कभी प्रमोद में आकर किलकारियाँ भरते हुए हर्षोत्फुल्ल गर्जन भी करते हैं। ..... किन्तु मेघ समूह के इन उपक्रमों से स्वयं व्योमराज को कोई लाभ प्राप्त नहीं होता। लाभान्वित होती है धरती ! ..... अवनीतल पर बरसकर वे धरती की तृषा शान्त करते हैं। ग्रीष्म की

तपन से म्लान हुए वसुन्धरा के मुख-मंडल को अपूर्व कान्ति देकर उजला कर देते हैं ..... इसके विपरीत, व्योमराज के उज्जवल नीलाभ प्रांगण की नयनाभिराम छवि, मेघ-समूह की उपस्थिति से मलिन ही होती है। उसका शान्त और नीरव वातावरण इनके कोलाहल से अशान्त बन जाता है।

विवेक कुमार :- आपका तात्पर्य पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :- तात्पर्य यह है विवेक, कि सुकृत कुमार भी जन्मा, पला और बढ़ा महाराज चेतनराज के ही समागम में। यहीं रहकर वह अपने समस्त क्रिया कलाप करता है, किन्तु स्वयं महाराज को उसके किसी भी कृत्य का कोई लाभ नहीं मिलता। लाभान्वित होते हैं, मोहराज। सुकृत कुमार का प्रत्येक कृत्य परोक्षरूप से मोह-वाहिनी के योद्धाओं को ही बल पहुँचाता है। उन्हें ही पुष्ट करता है। ..... इसके विपरीत महाराज चेतनराज की निर्मल और पवित्र छवि को तो अपनी उपस्थिति से वह मलिन और अपवित्र ही किये हुए है। स्वयं मोहराज सुकृत कुमार की इस प्रकृति से भली भाँति परिचित हैं। इसीलिए उन्होंने अपनी ओर से उसे कभी कोई निर्देश नहीं भेजा, ताकि हमें उसके विषय में भ्रम बना रहे। ..... इस पर भी उसकी निष्ठा देखकर ही शिष्टाचार वश अपने अभियान में हम उसे साधक तत्व के रूप में स्वीकार किये हुए हैं। किन्तु यथार्थतः तो हम एक क्षण भी यह विस्मरण नहीं कर पाते कि वह हमारे अभियान में साधक नहीं, बाधक ही है। उसका प्रत्येक उपक्रम मोहराज को ही बल प्रदान करता है।

विवेक कुमार:- ओह ! विचित्र विडंबना है। सुकृत कुमार तो महाराज चेतनराज का हृदय जीतने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। उसके महासुभट पुनः चारित्रवीर के संसर्ग में 'तप-अनुष्ठान-विधि' द्वारा नवीन दिव्यास्त्र प्राप्त करने के प्रयास में जुटे हुए हैं, ताकि प्रमत्तपुर-अप्रमत्तपुर आक्रमण के दौरान रण-कौशल द्वारा वे महाराज चेतनराज को अपनी ओर आकृष्ट कर सकें।

ज्ञानदेव :- हमें यह सब ज्ञात है वत्स ! उसे अपना कार्य करने दो। कालान्तर में जब उसे अपनी हीनता का बोध होगा, तब वह स्वयं महाराज

चेतनराज के सम्मुख होने का भी साहस न कर सकेगा। मुँह छिपाता फिरेगा। .... श्रृगाल भला कब तक शेरों के बीच निर्भयता पूर्वक रह पाएगा ? एक न एक दिन उसे 'सिंह गर्जना' और 'गीदड़ भभकी' का अन्तर समझ में आएगा ही। .... किन्तु विवेक ! मैं महाराज के लिए चिन्तित हूँ।

विवेक कुमार :– क्यों पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :– इसलिए कि अभी भी उनके हृदय में सुकृत कुमार के प्रति किंचित आसक्ति बनी हुई है। यद्यपि अब उनकी उसमें कोई रूचि नहीं है, तथापि अपनी अनन्त अनन्त शक्तियों और गुण-परिकर के बीच रहते हुए भी उनका चित्त प्रायः सुकृत कुमार की ओर चला जाया करता है। उनकी यह प्रवृत्ति प्रमत्तपुर-अप्रमत्तपुर आक्रमण के समय अनेक व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

विवेक कुमार :– इसका उपाय पूज्यवर ?

ज्ञानदेव :– उपाय यही है कि महाराज अधिकाधिक अपनी अनन्तानन्त शक्तियों और गुण-परिकर की सुसंगति में रहें। तभी महाराज सहित हम सबके लिए मुक्ति-पथ प्रशस्त हो सकेगा।

विवेक कुमार :– आप इस दिशा में उन्हें प्रेरित करते रहें, पूज्यवर ! .... अब मेरे लिए क्या आज्ञा है ?

ज्ञानदेव :– तुम्हें भेद-चक्र लेकर सदैव महाराज चेतनराज के समीप रहना है, ताकि शत्रु-पक्ष अनायास कोई धोखा न कर सके। .... अब चारित्रवीर के सेनापतित्व में प्रमत्तपुर-अप्रमत्तपुर पर आक्रमण करना है। विलंब उचित नहीं। .... जाओ ! चारित्रवीर से अनुरोध करो कि वे सेना की आवश्यक व्यूह रचना करें।

विवेक कुमार :– जो आज्ञा पूज्यवर ! जाता हूँ। .... श्री-चरणों में प्रणाम !

(प्रणाम करता है।)

— पटाक्षेप —

(तृतीय-दृश्य)

[मोहराज का सभागृह । मोहराज राज-सिंहासन पर विराजमान हैं । मंत्री द्वय, रागराज और द्वेषराज तथा कुबुद्धिदेवी भी अपने स्थान पर बैठे हुए हैं । कुछ सभासद भी यथा स्थान बैठे हैं । नृत्य चल रहा है । तभी द्वारपाल का प्रवेश]

द्वारपाल :– महाराज की जय हो । गुप्तचर प्रधान काम कुमार और कुंवर दुष्कृत कुमार घायल अवस्था में द्वार पर खड़े हैं । भेंट की अनुमति चाहते हैं । ..... (नृत्य बंद हो जाता है । नर्तकी मोहराज को प्रणाम करके एक ओर चली जाती है ।)

मोहराज :– (आश्चर्य से) घायल अवस्था में ! ..... आने दो उन्हें द्वारपाल ! (काम कुमार और दुष्कृत कुमार का प्रवेश । दोनों घायल अवस्था में हैं । दुष्कृत कुमार तो बुरी तरह घायल है । शरीर पर पट्टियाँ बँधी हैं । कहीं कहीं रक्तस्राव भी हो रहा है । खड़ा नहीं रह पाने के कारण गिर पड़ता है । यह देखकर मोहराज सिंहासन से उठकर दुष्कृत कुमार के पास आते हैं । कुबुद्धिदेवी भी हड़बड़ाकर दुष्कृत कुमार के पास पहुँचती है और - - - "क्या हुआ बेटा, क्या हुआ मेरे लाल को, किसने तेरी यह दुरवस्था बनाई", - - - - - - कहती हुई दुष्कृत कुमार का माथा अपनी गोद में लेती है । फिर मोहराज और कुबुद्धिदेवी दुष्कृत कुमार को उठाकर आसन पर बैठाते हैं ।)

मोहराज :– (सभागृह में खड़े-खड़े ही) ओह - - - काम कुमार, यह सब क्या है ?

काम कुमार :– (दुःखी स्वर में) हमें फिर पराजय का मुख देखना पड़ा त्रिभुवनपति ! चेतनराज ने प्रमत्तपुर-अप्रमत्तपुर नगरों पर विजय प्राप्त कर ली ।

मोहराज :– (आश्चर्य से) क्या कहा ? चेतनराज ने प्रमत्तपुर-अप्रमत्तपुर भी हमसे छीन लिए ! हमारे असंख्य-असंख्य वीर योद्धाओं के होते हुए यह सब कैसे हुआ ?

दुष्कृत कुमार :– (दुःखी किन्तु आवेश भरे स्वर में काँपते हुए) क्या करेंगे नाना श्री आप सुनकर ! यह सब आपके लाड़ले सुकृत कुमार की करतूत है । .....

(बोला नहीं जाता । हाँफने लगता है ।)

मोहराज :– धैर्य धारण करो वत्स ! तुम बहुत घायल हो । तुम्हें विश्राम की आवश्यकता है ।

दुष्कृत कुमार :– (आहत स्वर में) अब ..... क्या विश्राम करूँगा ..... नाना श्री ! मुझे तो अपना अवसान ही सन्निकट जान पड़ता है ।

मोहराज :– (स्नेह से) नहीं- नहीं बेटा, ऐसा न कहो । जब तक हम जीवित हैं, काल तुम्हें स्पर्श भी नहीं कर सकता । ..... (कुबुद्धिदेवी से) बेटी, तुम दुष्कृत को शयनागार में ले जाओ, इसे पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है ।

(कुबुद्धिदेवी दो अनुचरों के सहारे दुष्कृत कुमार को हाथ पकड़कर ले जाती है ।)

मोहराज :– (काम कुमार से) हाँ, काम कुमार, कहो यह सब कैसे हुआ ?

काम कुमार :– त्रिलोकाधिपति ! चेतनराज को देशव्रतपुर से आगे बढ़ता देखकर कुंवर प्रत्याख्यानावरण और कुंवर दुष्कृत कुमार ने प्रमत्तपुर गढ़ के बाहर अपने अपने महासुभटों की सहायता से सेना की सुदृढ़ व्यूह-रचना करना प्रारंभ कर दी । किन्तु स्वामी ..... ।

मोहराज :– क्या हुआ काम कुमार ?

काम कुमार :– ज्ञानदेव बड़े कुटनीतिज्ञ हैं स्वामी ! प्रमत्तपुर गढ़ के बाहर हमारी सेना का जमाव देखकर ज्ञानदेव ने सेनापति चारित्रवीर को प्रमत्तपुर की बजाय सीधे अप्रमत्तपुर पर आक्रमण करने का परामर्श दिया । तदनुसार सेनापति चारित्रवीर ने अप्रमत्तपुर की ओर कूच किया । जैसे ही इसकी सूचना कुंवर अप्रत्याख्यानावरण को प्राप्त हुई, वे अपने चारों महासुभटों, और कुंवर दुष्कृत कुमार सहित द्रुत गति से शत्रु-सैन्य को अप्रमत्तपुर तक पहुँचने से रोकने के लिए दौड़ पड़े । वीर सेनानी अविरत कुमार भी उनके साथ थे । किन्तु विलंब बहुत हो चुका था । कुंवर दुष्कृत कुमार ने रौद्रध्यान की बर्छियां चलाकर चारित्रवीर का मार्ग अवरूद्ध करने की चेष्टा की । किन्तु चारित्रवीर धर्मध्यान की ढाल से अपनी रक्षा करते रहे । वीर सेनानी अविरत कुमार ने

भी अनेक प्रकार के असंयमास्त्र चलाकर चारित्रवीर को विचलित करने का प्रयत्न किया, किन्तु ..... (रूक जाता है।)

मोहराज :– (अधीर होकर) क्या हुआ काम कुमार ?

काम कुमार :– उसी समय कुंवर सुकृत कुमार ने चारित्रवीर की सन्निधि से प्राप्त देश संयम चक्र का ऐसा अचूक प्रयोग किया कि उसके आघात से वीर सेनानी अविरत कुमार और कुंवर दुष्कृत कुमार दोनों ही घायल होकर धराशायी हो गए। फिर भी, दोनों शूरवीरों ने साहस नहीं छोड़ा और भूमि पर पड़े-पड़े ही शस्त्र संचालन करते रहे।

(मोहराज की ओर देखने लग जाता है।)

मोहराज :– (स्वगत् ही) ..... सुकृत ने यह क्या किया ? ..... (कुछ देर चुप्पी छायी रहती है, फिर काम कुमार से) .....आगे का वृत्तान्त कहो।

काम कुमार :– शीघ्र ही चारित्रवीर ने चेतनराज की अनुकम्पा से प्राप्त अनुभूति रस में पगे देश चारित्र जाति के अनेक तीक्ष्ण बाणों का प्रयोग कर, चारों ओर प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित कर दिया। हमारी सेना में हाहाकार मच गया। कुंवर प्रत्याख्यानावरण अपने चारों महासुभटों सहित बुरी तरह घायल हुए। कुंवर दुष्कृत कुमार भी चारित्रवीर के तीक्ष्ण प्रहारों से घबड़ाकर साहस छोड़ बैठे। उनकी समूची देह बाणों से बिंध गई।

मोहराज :– (आर्त्त स्वर में) ओह ! बहुत पीड़ा दायक वृत्तान्त सुनाया तुमने काम कुमार !

काम कुमार :– (शोकाकुल होकर) हाँ महाराज, बहुत पीड़ादायक। ..... वह दृश्य अभी भी जैसे मेरी आंखों के समक्ष है। ..... बड़ा वीभत्स दृश्य था। कुंवर दुष्कृत कुमार के अंग-अंग से रक्त स्राव हो रहा था। ..... विवश होकर उन्हें रणक्षेत्र छोड़ना पड़ा। हमारी सेना के पाँव उखड़ गए। युद्धरत सेनापति चारित्रवीर का विकराल रूप देखकर तो कुंवर सुकृत कुमार भी घबड़ा गए। उन्होंने चारित्रवीर की प्रहार-क्षमता से दूर जाकर अपना मोर्चा

जमाया। अपने चारों महासुभटों सहित बुरी तरह घायल कुंवर प्रत्याख्यानावरण को भी रणक्षेत्र छोड़ने को बाध्य होना पड़ा। चारित्रवीर ने अप्रमत्तपुर दुर्ग पर धावा बोल दिया। घोर संग्राम हुआ। इसमें गुप्तचर कुमन कुमार और पाँचों इन्द्रियों के विषय- जाल तार-तार हो गए। कुंवर अविरत कुमार भी मृत-प्रायः हो गए। तिर्यंचायुकुमार तो काल-कवलित ही हो गए। अन्ततः दुर्ग का द्वार टूट गया और सेनापति चारित्रवीर ने विजय-दर्प से ससैन्य दुर्ग में प्रवेश किया। चेतनराज इस समय निर्ग्रन्थ अवस्था में थे। अप्रमत्तपुर की प्रजा ने तुमुल हर्षनाद के साथ उन्हें "साधु" पद की उपाधि से सम्मानित किया। किन्तु तभी ..... तभी महाराज एक विचित्र चमत्कार हुआ..... ।

मोहराज :- (विस्मय से) कैसा चमत्कार ?

काम कुमार :- अप्रमत्तपुर दुर्ग में प्रवेश करते ही चेतनराज और उनकी सेना पर कुंवर संज्वलन के महासुभटों क्रोध, मान, माया और लोभ ने ऐसा प्रचण्ड आक्रमण किया कि शत्रुदल में हड़कम्प मच गया। उनके अनेक योद्धा बुरी तरह घायल हो गए। कुंवर संज्वलन ने शत्रु सैन्य को इस बुरी तरह खदेड़ा कि वे अन्य द्वार से अप्रमत्तपुर दुर्ग से बाहर निकल जाने को विवश हो गए। यह सब कुछ अन्तर्मुहूर्त काल में ही हो गया। किन्तु स्वामी.....

मोहराज :- क्या हुआ काम कुमार ?

काम कुमार :- महाराज ! अप्रमत्तपुर गढ़ के जिस द्वार से चेतनराज और उनकी सेना बाहर निकली, वह प्रमत्तपुर की ओर खुलता है। ..... फलस्वरूप शत्रु-सैन्य ने दूसरे ही क्षण अपने को प्रमत्तपुर में पाया। ज्ञानदेव ने सेनापति चारित्रवीर को तत्काल प्रमत्तपुर गढ़ पर आक्रमण करने का परामर्श दिया। तदनुसार बिना कोई विलंब किये चारित्रवीर ने तत्काल प्रमत्तपुर गढ़ पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में—सेनानायक नाम के तीन और सेनानायक वेदनीय का एक – ये चार महासुभट अनेक सैनिकों सहित बुरी तरह घायल हुए। मोहकुल की दो वीर बालाओं अरति और शोक को भी गहरे संघातिक

घाव लगे। बड़ी सुगमता से चेतनराज ने प्रमत्तपुर दुर्ग पर विजय प्राप्त कर अपना आधिपत्य जमा लिया। देशव्रतपुर की तरह प्रमत्तपुर की प्रजा ने भी चेतनराज का भव्य स्वागत् किया। द्वार-द्वार पर तोरण बंदनवार सजाए। घर-घर दीप जलाए। वैराग्य कुमार ने "साधु" पद में प्रतिष्ठित 'निर्ग्रन्थ चेतनराज' की अगवानी की। उनके पाँव पखारे। द्वादश अनुप्रेक्षाओं ने उपस्थित होकर भक्ति पूर्वक उनका अभिवादन किया। पग-पग पर भावनाओं के मृदुल प्रसून बिखेरे और.....।

मोहराज :–(बात काटकर बीच में ही सक्रोध) होश में आओ, काम कुमार ! शत्रु की प्रशंसा करते तुम्हें लज्जा नहीं आती ?

(मोहराज के क्रोधित होने पर सभा में सन्नाटा छा जाता है।)

काम कुमार :–(कुछ देर बाद, लज्जित स्वर में) अपराध क्षमा करें स्वामी, सेवक लज्जित है।

मोहराज :– ध्यान रहे कि भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो ..... रणक्षेत्र का अन्तिम वृत्तान्त क्या है ?

काम कुमार :– चेतनराज ने प्रमत्तपुर पर तो स्थायी सत्व स्थापित कर लिया है। किन्तु प्रत्येक अन्तर्मुहुर्त के अन्तराल से वे अप्रमत्तपुर पर भी आक्रमण करते रहते हैं। सन्तोष का विषय इतना ही है कि कुंवर संज्वलन के रण कौशल के कारण बहुत चेष्टा करने पर भी अप्रमत्तपुर में वे 'स्वस्थान-अप्रमत्त-विरत' मुकाम से आगे नहीं बढ़ पा रहे। कुंवर श्री बड़ी कुशलता से उनके प्रत्येक अभियान को विफल कर देते हैं।

मोहराज :– लेकिन काम कुमार, क्या प्रमत्तपुर में कुंवर संज्वलन ने चेतन और उसकी सेना का कोई प्रतिकार नहीं किया ?

काम कुमार :– किया महाराज ! कुंवर संज्वलन ने चेतनराज को खदेड़ने के लिये सेनानायक वेदनीय के महासुभट असाता वेदनीय के नेतृत्व में क्षुधा, तृषादि २२ परिषहों को रणक्षेत्र में भेजा। इन सबने विभिन्न उपसर्गों के अनेक शस्त्रास्त्र चलाए और भरसक प्रयत्न किया कि चेतनराज प्रमत्तपुर

से पीछे हटने को विवश हो जाँय। किन्तु चारित्रवीर के रण-कौशल के आगे उनकी एक न चली। अन्ततः कुंवर संज्वलन को कूटनीति से काम लेने का निर्णय करना पड़ा। उन्होंने परोक्ष प्रतिरोध करने का निश्चय किया।

मोहराज :– (विस्मय से) परोक्ष प्रतिरोध ? क्यों ..... कैसे ?

काम कुमार :– बात यह है महाराज, कि अनवरत पराजय से हमारी सेना का मनोबल टूट चुका था। अनेक शूरवीर योद्धा भी घायल हो चुके थे। सेना तितर बितर हो चुकी थी। इस विषम परिस्थिति में कुंवर संज्वलन ने कूटनीति से काम लेने का निर्णय लिया और प्रत्यक्ष आक्रमण की बजाय परोक्ष प्रतिरोध करना उचित समझा। अपनी प्रयोजन सिद्धि के लिये उन्होंने प्रमत्तपुर के नायक प्रमत्त कुमार को बुलाया और अपनी पूरी रणनीति समझाकर उन्हें कुंवर सुकृत कुमार के निकट भेजा। योजनानुसार प्रमत्त कुमार कुंवर सुकृत कुमार से जाकर मिले और उनकी प्रशंसा के पुल बाँधना शुरू कर दिये।

मोहराज :– (आश्चर्य पूर्वक) ..... प्रशंसा के पुल ?

काम कुमार :– हाँ महाराज ? नायक प्रमत्त कुमार ने कुंवर सुकृत कुमार के युद्ध कौशल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रमत्त कुमार से प्रशंसा पाकर तो कुंवर सुकृत कुमार ने प्रमत्तपुर में और भी उत्साहित होकर अपूर्व रण कौशल दर्शाया। उन्होंने २८ प्रकार के मूल गुणास्त्रों, १२ प्रकार के तपास्त्रों, १० प्रकार के धर्म चक्रों और तीन प्रकार की गुप्तियों- रूप विलक्षण आयुधों, आदि अनेक दिव्यास्त्रों का प्रयोग कर हमारी सेना के अनेक शूरवीरों को हताहत कर दिया।

मोहराज :– (आश्चर्य मिश्रित क्रोध से) तुम विक्षिप्त तो नहीं हो गए काम कुमार ! क्या कह रहे हो। यह कैसी कूटनीति है। इसमें तो हमारी ही क्षति हुई ?

काम कुमार :– हाँ, हमारी किंचित् क्षति अवश्य हुई महाराज ! कुंवर सुकृत कुमार के अहिंसादिक महासुभटों ने कुंवर दुष्कृत कुमार के हिंसादिक

पाँचों महासुभटों को बुरी तरह आहत करके शस्त्र विहीन कर डाला। शरीर और इन्द्रियों के विषय जाल ध्वस्त हो गए। ..... किन्तु दूर दृष्टि से विचार करें, तो यह नीति हमारे लिये बड़ी लाभदायक है।

मोहराज :– लाभदायक ! ..... कैसे ?

काम कुमार :– महाराज, हमें गुप्तचर सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि अव्रतपुर में कुंवर सुकृत कुमार की बहुत उपेक्षा हुई। इससे क्षुब्ध होकर अपनी महत्ता जताने के लिए उन्होंने चारित्रवीर के सान्निध्य में कुछ अनुष्ठान किये। फलस्वरूप, उन्हें ये अचूक दिव्यास्त्र प्राप्त हुए। प्रमत्तपुर में कुंवर श्री ने हमारे विरुद्ध इन्हीं दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया। उनके अपूर्व रण कौशल से चेतनराज मन ही मन बहुत प्रसन्न हैं।

मोहराज :– किन्तु इससे हमें क्या लाभ है ?

काम कुमार :– यह भी एक रहस्य की बात है स्वामी !

मोहराज :– रहस्य ? (झुँझलाकर) पहेलियाँ मत बुझाओ, स्पष्ट कहो।

काम कुमार :– बात यह है त्रिभुवनपति, कि सुकृत कुमार का युद्ध-कौशल देखने का लोभ संवरण न कर पाने के कारण ही चेतनराज न चाहते हुए भी बारम्बार प्रमत्तपुर आते रहते हैं। ज्ञानदेव चेतनराज के हृदय में छिपी इस ग्रन्थि से अनभिज्ञ नहीं हैं। यही कारण है कि वे चेतनराज को उनकी अनन्त अनन्त शक्तियों और उनके सान्निध्य में प्राप्त होने वाले वीतराग निर्विकल्प अतीन्द्रिय आनंद-रस का बार बार स्मरण कराकर पुनः पुनः अप्रमत्तपुर ले जाते हैं। किन्तु चेतनराज हैं कि कुंवर-श्री के व्यामोह के कारण एक अन्तर्मुहूर्त से अधिक अप्रमत्तपुर में नहीं टिक पाते। हो यह रहा है, कि ज्ञानदेव चेतनराज को एक अन्तर्मुहूर्त्त काल से अधिक प्रमत्तपुर में नहीं रहने देते और चेतनराज स्वयं एक अन्तर्मुहूर्त्त काल से अधिक अप्रमत्तपुर में नहीं ठहर पाते।

स्वामी ! मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि जब तक कुंवर सुकृत कुमार के तूणीर में ये दिव्यास्त्र शेष हैं, चेतनराज अप्रमत्तपुर में स्थिरता पूर्वक अधिक नहीं ठहर पाएँगे।

मोहराज :– तुम्हारा तात्पर्य क्या है, काम कुमार ?

काम कुमार :– तात्पर्य यह है त्रिलोकाधिपति, कि कुंवर सुकृत कुमार अपने हस्त-लाघव से चेतनराज को व्यामोहित करते रहेंगे, और चेतनराज कभी प्रमत्तपुर तो कभी अप्रमत्तपुर आते- जाते रहेंगे। इससे वे अप्रमत्तपुर में - "सातिशय अप्रमत्तविरत" मुकाम तक पहुँचने का कभी अवकाश ही न पा सकेंगे। ..... और जब तक वे "सातिशय अप्रमत्तविरत" मुकाम तक नहीं पहुँचते, उनमें पार्वत्य-प्रदेशों की उंचाई पर पर्वत-श्रेणियों के मध्य अवस्थित अपूर्वकरणपुर, अनिवृत्तिकरण पुर आदि नगरों पर आक्रमण करने का सामर्थ्य ही उत्पन्न नहीं हो सकता।

मोहराज :– (हर्षित होकर) ओह ! ..... यह बात है ! तब तो सचमुच सुकृत कुमार चेतनराज के संग रहकर भी हमारा ही हित संवर्धन कर रहा है। ..... अच्छा, अब यह बताओ कि चेतन और उसकी सेना का पड़ाव इस समय कहाँ है ?

काम कुमार :– निवेदन किया न महाराज, कि चेतनराज ससैन्य कभी प्रमत्तपुर तो कभी अप्रमत्तपुर , इस प्रकार झूला-सा झूल रहे हैं।

मोहराज :– और हमारी सेना ?

काम कुमार :– हमारी सेना प्रमत्तपुर में तो चेतनराज और उनकी सेना से खुले मैदान में संग्राम करती है, और अप्रमत्तपुर में कन्दराओं में छिपकर छापामार युद्ध करती है।

मोहराज :– कन्दराओं में छिपकर ? ..... क्यों ?

काम कुमार :– इसलिए महाराज, क्योंकि अप्रमत्तपुर में चेतनराज के चारों ओर ऐसी-ऐसी विलक्षण शक्तियाँ प्रगट हो जाती हैं कि हमारी सेना का कोई भी योद्धा उनका प्रत्यक्ष सामना करने में समर्थ नहीं रहता। अत: विवश होकर कन्दराओं में छिपकर युद्ध करना पड़ता है। ..... और महाराज, कुंवर संज्वलन छापामार युद्ध-प्रणाली में विशेष दक्ष भी हैं। बड़ी निपूर्णता से वे युद्ध का संचालन कर रहे हैं।

मोहराज :– (निःश्वास भरकर) ठीक है, काम कुमार ! ..... किन्तु अकेले सुकृत कुमार के पराक्रम पर हम कब तक निश्चिंत रह सकते हैं ? ..... कामकुमार ! युद्ध के परिणामों पर दृष्टि रखो और ..... ।

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल :– महाराज की जय हो ! गुप्तचर कुमन कुमार एक आपात्-सूचना लेकर उपस्थित होना चाहते हैं। अनुमति की प्रतीक्षा में द्वार पर खड़े हैं।

मोहराज :– (द्वारपाल से) आने दो उन्हें।

(गुप्तचर कुमन कुमार का प्रवेश)

कुमन कुमार :– त्रिलोक पूज्य महाराज मोहराज की जय हो ! ..... सेवक एक आपात् सूचना लेकर सेवा में उपस्थित हुआ है।

मोहराज :– (गम्भीर स्वर में) कैसी आपात् सूचना ?

कुमन कुमार :– चेतनराज "सातिशय अप्रमत्तविरत" मुकाम तक पहुँच गए हैं और अब पार्वत्य प्रदेश में पर्वत श्रेणियों के मध्य अवस्थित हमारे नगरों पर आक्रमण करने को उद्यत हैं।

काम कुमार :– (साश्चर्य) क्या ? ..... यह कैसे हुआ ?

मोहराज :– (निःश्वास भरकर) यह तो होना ही था, काम कुमार ! अकेला सुकृत कब तक चेतनराज को व्यामोहित रखता ? .....

काम कुमार :– किन्तु वीरांगना अनन्तानुबंधी के जीवित रहते ..... ।

कुमन कुमार :– (बीच ही में बात काटते हुए) क्षमा करें, स्वामी ! वीरांगना अनन्तानुबंधी युद्ध में काम आईं।

मोहराज :– (साश्चर्य आहत स्वर में) क्या ? अनन्तानुबंधी ..... हमारी लाड़ली ..... कैसे हुआ यह ..... कैसे हुआ ?

कुमन कुमार :– (शोक स्वर में) स्वामी ! चारित्रवीर ने क्रमशः अधःकरण, अपूर्वकरण, और अनिवृत्तिकरण के दिव्य शरों से वीरांगना अनन्तानुबंधी पर

भीषण प्रहार किया। उस समय वे मिथ्यापुर में अपने घावों का उपचार करा रही थीं। अकस्मात हुई इस तीक्ष्ण बाण वृष्टि ने उन्हें विचलित कर दिया। उनकी समूची देह बाणों से बिंध गई। अवसान निकट जानकर उन्होंने तत्काल ही अपनी विलक्षण शक्तियाँ कुंवर अप्रत्याख्यानावरण, कुंवर प्रत्याख्यानावरण और कुंवर संज्वलन को अभ्यर्पित कर दीं। अगले ही पल उन्हें अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

मोहराज :– (आहत स्वर में) हा-दुर्दैव ! ..... यह क्या ..... हुआ। ..... (कुछ क्षणों के लिए चुप्पी छा जाती है।)

रागराज :– शोक न करें स्वामी ! वीरांगना अनन्तानुबंधी ने तो वीर गति पाई है ..... धन्य हैं वे ! ..... जाते-जाते भी अपनी विलक्षण शक्तियाँ हमें अर्पित कर गईं। अहा ..... कितना उपकार किया है उन्होंने !

मोहराज :– (धैर्य धारण करते हुए दुःखी स्वर में) ठीक कहते हैं आप मंत्रीवर ! ..... शोक कैसा ? ..... अरे ! हमारी लाड़ली ने तो वीरगति पाई है। मोहकुल में ऐसी वीरांगना अन्य कौन है ? ..... ।

(कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद निःश्वास लेकर)

फिर क्या हुआ, कुमन कुमार ?

कुमन कुमार :– वीरांगना अनन्तानुबंधी को काल कवलित करने के बाद चारित्रवीर ने चेतनराज की कृपा-दृष्टि से प्राप्त अनुभूति-रस में पगे सामायिक और छेदोपस्थापना जाति के तीक्ष्ण शरों का प्रयोग कर चारों तरफ त्राहि त्राहि मचा दी ! विकट संग्राम हुआ। इसमें हमारे महासुभट देवायु कुमार बुरी तरह घायल हुए। उन्हें रण-क्षेत्र छोड़ना पड़ा। अनेक शूर-वीर योद्धा भी हताहत हुए। अन्ततः चारित्रवीर के सेनापतित्व में चेतन राज "स्वस्थान अप्रमत्तविरत" मुकाम से आगे बढ़ते हुए "सातिशय अप्रमत्त विरत" मुकाम पहुँचे। ..... और अब ..... अब स्वामी ! ..... वे पर्वत श्रेणी पर बसे नगरों पर चढ़ाई करने को उद्यत हैं।

मोहराज :– इस संकटपूर्ण घड़ी में हमारे अमात्यगण क्या परामर्श देंगे ?

रागराज :– त्रिभुवनतिलक ! .... निःसन्देह, इस समय जीवन-मृत्यु का प्रश्न हमारे सामने मुँह बाए खड़ा है। परन्तु यों बिल्कुल निराश होने की भी आवश्यकता नहीं। सेनाधिपति मिथ्यात्वराज हमारे सौभाग्य से अभी जीवित हैं। उनके जीवित रहते चेतनराज की शक्ति नहीं कि वे पार्वत्य प्रदेश की ऊंचाई पर क्षपक श्रेणी में अवस्थित अपूर्वकरणपुर, अनिवृत्तिकरणपुर आदि नगरों पर आक्रमण करने का दुःस्साहस कर सकें। वे केवल उपशम श्रेणी पर बसे नगरों पर ही आक्रमण कर पाएँगे।

मोहराज :– (अचंभित-सा) आपका तात्पर्य क्या है, मंत्रीवर ?

रागराज :– त्रिलोकाधिपति ! उपशम श्रेणी के मार्ग का अन्तिम नगर उपशान्तमोहपुर है। उसके आगे मुक्तिपुरी की ओर बढ़ने का कोई मार्ग नहीं। स्पष्ट है कि मुक्तिपुरी पहुँचने को आतुर चेतनराज वहाँ से शीघ्र ही पुनः लौटेंगे। लौटते समय हम उन पर पूरी शक्ति लगाकर धावा बोल देंगे। मेरा विश्वास है कि अनायास हुए इस आक्रमण से शत्रु-वाहिनी भौंचक्की रह जाएगी। असीम शक्ति रहते हुए भी कर्त्तव्य विमूढ़ की स्थिति में वह कुछ न कर पाएगी। .... तभी हम उन सबको खदेड़ते खदेड़ते मिथ्यापुर ले जाकर निगोद के गहरे अन्धकूप में डाल देंगे।

मोहराज :–(सोत्साह) साधुवाद अमात्यवर ! इस गाढ़े समय में आपने बड़ा अमूल्य परामर्श दिया। .... (काम कुमार से) .... काम कुमार ! अमात्यवर की योजना .... ।

काम कुमार :– (बीच ही में) मैं समझ गया स्वामी !

मोहराज :– तो तत्काल जाकर, सभी सेनानायकों को हमारा आदेश पहुँचाओ कि अविलंब इस योजना का कार्यान्वयन करें।

काम कुमार :– आज्ञा शिरोधार्य है स्वामी ! चलता हूँ। .... श्री चरणों में सेवक का प्रणाम !

(काम कुमार और कुमन कुमार सिर झुकाकर मोहराज को प्रणाम करते हैं और जाते हैं। कुछ देर चुप्पी छायी रहती है।)

मोहराज :– (चुप्पी तोड़ते हुए, रागराज से) अमात्यवर, इस विपत्ति में हमें कुंवर सुकृत कुमार ने बड़ा सहारा दिया।

रागराज :– हाँ स्वामी ! इस गाढ़े समय में कुंवर-श्री हमारे बहुत काम आए। उनके हम पर असंख्य उपकार हैं। उनके प्रत्येक कृत्य से हमारे योद्धाओं को बड़ा बल पहुँचता रहा है। और अब तो महाराज, पर्वत श्रेणी पर बसे नगरों पर आक्रमण के समय चेतनराज और उनकी सेना से हमारे वे ही योद्धा टक्कर ले पाएँगे, जिन्हें परोक्ष रूप से कुंवर सुकृत कुमार के कृत्यों से अनवरत बल प्राप्त होता रहा है।

मोहराज :– (भावुक होकर) निःसन्देह कुंवर सुकृत कुमार मोहकुल का अमूल्य रत्न है। हमारे वंश रूपी कमल के लिए साक्षात् दिवाकर ही है।

(कुछ देर मौन छाया रहता है, फिर रागराज से)

मोहराज :– (चिन्तित स्वर में) किन्तु अमात्यवर, यह बात कम विचारणीय नहीं कि चेतनराज के वे योद्धा, कि जिनकी महती कृपा से सुकृत कुमार ने विभिन्न प्रकार के अचूक दिव्यास्त्र प्राप्त किये, स्वयं कितने बलशाली होंगे ! ..... जब जब यह विचार करता हूँ, छाती थर थराने लगती है। काल मुँह बाए सामने खड़ा दिखाई देता है। प्रतीत होता है कि मृत्यु का आलिंगन करने के अलावा अब कोई मार्ग शेष नहीं।

रागराज :– धैर्य धारण करें, स्वामी ! आप ही जीवन की आशा छोड़ बैठेंगे, तो हम सबका क्या होगा ? ..... अत्यधिक श्रम के कारण आप क्लान्त हो चुके हैं। ..... अब विश्राम करें।

मोहराज :– (निःश्वास लेते हुए) विश्राम ? अब विश्राम को अवकाश कहाँ ? ..... देखें, उपशान्त मोहपुर से लौटते हुए चेतन को हम किस प्रकार दंडित कर पाते हैं ? .....

(कुछ समय मौन छाया रहता है।)

रागराज :– मुझे विश्वास है कि अबकी बार हम अवश्य विजयी होंगे। ..... चलिये स्वामी !

(सभी जाते हैं।)

पटाक्षेप —

(चौथा-दृश्य)

[अव्रतपुर दुर्ग में सैनिक छावनी। छावनी के ही एक प्रकोष्ठ में ज्ञानदेव और चारित्रवीर चिन्तित मुद्रा में टहल रहे हैं। नैपथ्य में युद्ध का कोलाहल सुनाई पड़ रहा है। मारकाट से घायल सैनिकों का चीत्कार, उनका दारूण-हाहाकार सुनाई पड़ रहा है।]

चारित्रवीर :– (चिन्तित स्वर में) यह सब क्या हो गया ज्ञानदेव ! ..... कुछ समय पूर्व तो हम उपशान्तमोहपुर में थे। अप्रमत्तपुर के सातिशय अप्रमत्तविरत मुकाम से आगे बढ़कर हमने पर्वत-श्रेणी के नगरों पर चढ़ाई की और क्रमशः अपूर्वकरणपुर, अनिवृत्तिकरणपुर और सूक्ष्म सांपरायपुर पर बिना किसी विलम्ब के विजय प्राप्त करते हुए उपशान्तमोहपुर पहुँचे। किन्तु वहाँ से आगे मुक्तिपुरी पहुँचने का कोई मार्ग न देख जब वापस लौटे तो ..... यह कैसे-क्या हो गया ?

ज्ञानदेव :– चारित्रवीर ! ..... उपशान्तमोहपुर से लौटते समय मोहराज ने हम पर भीषण आक्रमण कर दिया। इस आकस्मिक हमले से हम सब भौंचक्के रह गए। हमें कुछ न सूझा। प्रत्याक्रमण तो दूर, हम अपनी सुरक्षा का भी कोई उपाय न कर सके। मोहराज आंधी की तरह अविराम गति से आक्रमण पर आक्रमण करते गए। उन्होंने हमें ऐसा खदेड़ा ..... ऐसा खदेड़ा कि हम पीछे और पीछे ही हटते चले गए। यहाँ अव्रतपुर में आकर ही दम ले पाए। ..... इस पराजय में मोहराज ने सूक्ष्मसांपरायपुर, अनिवृत्तिकरणपुर, अपूर्वकरणपुर, अप्रमत्तपुर, प्रमत्तपुर और देशव्रतपुर ये सभी नगर जिन पर हमने बड़े श्रम से अपना प्रभुत्व स्थापित किया था, हमसे छीन लिये।

चारित्रवीर :– उपशान्तमोहपुर में प्रवेश करते ही मुझे तो चरम मग्नता की ऐसी उपलब्धि हुई थी कि जीवन ही निहाल हो गया। अनन्त अनन्त शक्तियों से दैदीप्यमान महाराज चेतनराज का अलौकिक सौन्दर्य निहारता निहारता, तादात्म्य भाव से मैं ऐसा तन्मय ..... ऐसा तन्मय हुआ कि कुछ क्षणों के लिए तो समूचा भेद-अस्तित्व ही विलीन हो गया। ..... (भावुक होकर) .....एक रूप ..... एक रस ..... अभिन्न अखंड .....

अहा-हा ! .... कैसे मधुर क्षण थे ! कितने आल्हादमय ! .... कितने आनन्ददायी ! ...... (पुनः प्रकृतिस्थ होता हुआ) .... परन्तु यह सब अन्तर्मुहुर्त काल तक ही रहा ! फिर तो .... ज्ञानदेव ! ऐसी घोर पराजय होगी, मुझे तो इसकी कल्पना भी न थी।

ज्ञानदेव :– आपको भले न हो, किन्तु मुझे इसकी कल्पना थी चारित्रवीर !

चारित्रवीर :– किस आधार पर ज्ञानदेव ?

ज्ञानदेव :– हमने पार्वत्य प्रदेश की ऊंचाई पर क्षपक श्रेणी में बसे नगरों की बजाय उपशम श्रेणी में बसे नगरों पर चढ़ाई की। यदि क्षपक श्रेणी के नगरों पर आक्रमण किया जाता तो मार्ग में उपशान्तमोहपुर पड़ता ही नहीं।

चारित्रवीर :– उससे क्या अन्तर पड़ता ?

ज्ञानदेव :– (हँसते हुए) अन्तर इतना पड़ता कि अब तक मोहराज की इहलीला ही समाप्त हो चुकी होती।

चारित्रवीर :– तब आपने ही क्यों न समय रहते, सचेत किया ?

ज्ञानदेव :– (गम्भीर होकर) देखो चारित्रवीर ! प्रत्येक कार्य का उत्पाद-क्षण निश्चित है, उसकी संप्राप्ति बिना विवक्षित कार्य का निष्पन्न होना संभव नहीं। .... वैसे पराजय के अन्य कारणों में मुख्य कारण हमारी अधीरता भी है।

चारित्रवीर :– अधीरता ! .... कैसे ?

ज्ञानदेव :– चारित्रवीर ! यह न भूलें कि मोहराज के सेनाधिपति मिथ्यात्वराज अभी जीवित हैं। .... और जब तक मिथ्यात्वराज जीवित हैं, हमारी शक्ति नहीं कि हम क्षपक श्रेणी में बसे नगरों पर आक्रमण कर सकें। इसलिये अनिवार्य था कि हम पूर्व में क्षायिक-महायज्ञ का पवित्र अनुष्ठान करते। उसके बिना मिथ्यात्वराज का अन्त संभव नहीं। .... किन्तु हम वह नहीं कर पाए, और अधीर होकर उपशम श्रेणी के नगरों पर आक्रमण कर बैठे।

चारित्रवीर :– ओह ! ..... कितनी भारी भूल हुई ?

ज्ञानदेव :– हाँ, भूल तो भारी हुई ! ..... किन्तु ऐसा होना बहुत अस्वाभाविक भी नहीं था।

चारित्रवीर :– (कुछ आश्चर्य से) अस्वाभाविक नहीं था ! ..... क्यों ?

ज्ञानदेव :– सुनो चारित्रवीर ! अनादि काल से मोहराज के दुःश्चक्र में पड़कर संसार परिभ्रमण के दुःखों का भार वहन करते करते महाराज चेतनराज सहित हम सभी इतने अधिक क्लान्त हो चुके थे, कि त्वरित ही मुक्तिपुरी पहुँचने को अधीर हो गए। फलस्वरूप मिथ्यात्वराज के नाश का उपाय किए बिना ही हमने "सातिशय अप्रमत्तविरत" मुकाम पर धावा बोल दिया। वहाँ विजय प्राप्त करने के तुरन्त बाद हमने उपशम श्रेणी के नगरों पर भी चढ़ाई कर दी। शत्रु-सैन्य ने हमारी अधीरता का पूरा लाभ उठाया।

चारित्रवीर :– (विस्मित-सा) लाभ ! ..... लाभ किस प्रकार उठाया ?

ज्ञानदेव :– इस प्रकार, कि हमें उपशम श्रेणी के नगरों पर आक्रमण करता देखकर उन्हें यह निश्चय हो गया कि हम उपशान्तमोहपुर जाकर पुनः लौटेंगे। उन्होंने नियोजित रणनीति बनाई और लौटते समय पूरी शक्ति संजोकर हम पर आक्रमण कर दिया। ..... जो परिणाम हुआ उसे हम भोग ही रहे हैं। ..... वह तो सम्यक्त्वराज और विवेक कुमार का अदम्य साहस और अपूर्व रण-कौशल कि मोहराज हमें अव्रतपुर से न खदेड़ सके अन्यथा हम अपनी आदिम अवस्था में पहुँच जाते।

चारित्रवीर :– ओह ! ..... बड़ा अनिष्ट हुआ। .....(कुछ विचार-सा करते हुए) .....ज्ञानदेव ! ..... हम तो मोहराज के नरकायु कुमार, तिर्यचांयु कुमार, दुष्कृत कुमार तथा सेनानायक अप्रत्याख्यानावरण प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन जैसे अनेक दुर्द्धर योद्धाओं में से कुछ को तो काल का ग्रास बना चुके थे और अनेकों को बुरी तरह घायल कर चुके थे फिर ..... अव्रतपुर के रण क्षेत्र में ये सब कैसे दिखाई पड़ रहे हैं। ये ..... ये पुनर्जीवित और स्वस्थ कैसे हो गए ?

ज्ञानदेव :– (गम्भीरता पूर्वक).......... मोहराज अनेक अद्भुत शक्तियों के स्वामी हैं चारित्रवीर । इन अद्भुत शक्तियों की मदद से वे हमारी प्रत्येक पराजय का उपयोग ऐसी संजीवनी औषधि तैयार करने में करते हैं कि जिसके प्रयोग से उनके अनेक दिवंगत योद्धा यथा संभव, यथा-समय पुर्नजीवित हो उठते हैं और घायल, स्वस्थ हो जाते हैं ।

चारित्रवीर :– (विस्मित-सा) ओह ! बड़ी अद्भुत बात है ! .... (कुछ विचार ...... करते हुए) .... ज्ञानदेव ! .... सातिशय अप्रमत्तपुर मुकाम से उपशान्तमोहपुर तक भी सुकृत कुमार रण क्षेत्र में दृष्टि गोचर नहीं हुआ । .... कहाँ था वह ?

ज्ञानदेव :– (हँसते हुए) हमारे निकट ही, किन्तु हमारी दृष्टि से ओझल !

चारित्रवीर :– निकट, फिर भी दृष्टि से ओझल ! .... कैसे ?

ज्ञानदेव :– यह तो आपको ज्ञात ही है कि अप्रमत्तपुर से ही महाराज चेतनराज के चारों ओर अनेक विलक्षण शक्तियों का उदय होने लगा था । उस समय आपने भी अनुभूति रस में पगे शुद्धोपयोग के तीक्ष्ण बाणों का प्रयोग कर समूचे रण क्षेत्र में प्रलय का-सा दृश्य उपस्थित कर दिया था । इससे न केवल मोहराज के योद्धा, बल्कि सुकृत कुमार भी बहुत भयभीत हुआ । उसे अपनी विजातीयता का बोध तो हो ही चुका था । अत: इस विषम वातावरण में वह प्रगट रूप से चेतनराज के समीप रहने का साहस न कर सका । किन्तु चेतनराज के सान्निध्य में रहने का व्यामोह भी वह छोड़ना नहीं चाहता था । अन्तत: उसने चतुराई से काम लिया और गुप्त रूप से महाराज के सन्निकट रहने लगा । गुप्त रूप में रहने के कारण ही निकट रहते हुए भी वह हमारे दृष्टि-पथ में न आ सका ।

चारित्रवीर :– आश्चर्य कि निकट होकर भी उस भयानक संग्राम में वह जीवित रह गया ।

ज्ञानदेव :– इसमें आश्चर्य कैसा ? कील के निकट रहने वाला अन्नकण चक्की में पिसने से बच ही जाता है ।

चारित्रवीर :– (कुछ सोचते हुए) वैसे ज्ञानदेव ! उस वातावरण में हमारी शक्तियों से स्वयं ही भयभीत सुकृत कुमार, हमारा क्या अनिष्ट कर पाया होगा ?

ज्ञानदेव :– आप भूल रहे हैं चारित्रवीर कि सुकृत कुमार का प्रत्येक कृत्य परोक्षतः मोहवाहिनी के योद्धाओं को ही बल पहुँचाता है।

चारित्रवीर :– ओह ! .... समझा ! .... (कुछ क्षणों तक चुप रह कर) .... अब क्या करना होगा ?

ज्ञानदेव :– अब .... (कुछ विचार-सा करते हुए) अब तो सम्यक्त्वराज से अनुरोध करना होगा कि वे शीघ्र ही 'क्षायिक-महायज्ञ' का अनुष्ठान करें, ताकि मिथ्यात्वराज को काल का ग्रास बनाया जा सके।

चारित्रवीर :– किन्तु इससे तो अल्पकालिक ही लाभ होगा। मोहराज अपनी अद्भुत शक्तियों से मिथ्यात्वराज को भी पुनर्जीवित कर लेंगे।

ज्ञानदेव :– (किंचित् दृढ़ता पूर्वक) नहीं चारित्रवीर ! क्षायिक महायज्ञ से उत्पन्न हुए प्रक्षेपास्त्रों के प्रहार से काल कवलित होने वाले अपने किसी भी योद्धा को पुनर्जीवित करने की शक्ति मोहराज में नहीं है ! .... (फिर भावुकता से) चारित्रवीर ! चेतन-कुल की लाज आपके हाथों में हैं। मोहवंश को निर्मूल करने का सामर्थ्य आपके सिवा अन्य किसी में नहीं !

चारित्रवीर :– (आश्वस्त करते हुए) चिन्ता न करें, ज्ञानदेव ! मुझे विश्वास है कि महाराज चेतनराज की असीम अनुकंपा और आपके कुशल मार्ग दर्शन में अबकी बार हम अपना गन्तव्य अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

ज्ञानदेव :– आपकी सफलता के लिए मैं मंगल कामना करता हूँ। .... आओ चलें।

(दोनों जाते हैं।)

— पटाक्षेप —

(पाँचवा-दृश्य)

[मोहराज की सभा। मोहराज सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके दाहिनी ओर मंत्री रागराज और बांई ओर मंत्री द्वेषराज बैठे हैं। कुबुद्धिदेवी एवं अन्य सभासद भी यथा स्थान बैठे हैं। चेतनराज की पराजय पर हर्ष मनाया जा रहा है। एक बाला मदिरा का पात्र भरकर सबको दे रही है। मोहराज प्रसन्न चित्त दिखाई पड़ रहे हैं। सभागृह के मध्य एक नर्तकी नृत्य कर रही है। नर्तकी की प्रत्येक मुद्रा पर, उसके हाव-भाव, विलास विभ्रम पर सभासद झूम रहे हैं। मोहराज भी बीच-बीच में "वाह वाह" कहकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं। तभी अचानक घायल अवस्था में लड़खड़ाता हुआ काम कुमार आता है।]

काम कुमार :– (आर्त्त स्वर में लगभग चीखता हुआ-सा) वज्रपात हो गया, त्रिभुवनपति ! ..... हम अनाथ हो गए।

(काम कुमार के हाहाकार से नृत्य बंद हो जाता है। नर्तकी सिहरकर एक ओर खड़ी हो जाती है। वारुणी-बाला के हाथ से मदिरा-पात्र छूटकर गिर जाता है। किसी अज्ञात भय से सभी काम कुमार की ओर देखने लगते हैं। मोहराज सिंहासन से उठकर खड़े हो जाते हैं।)

मोहराज :– (भयभीत स्वर में आश्चर्य-से) क्या हुआ काम कुमार ? कौन-सा वज्रपात हो गया ?

काम कुमार :– (अश्रुपात करता हुआ) मत पूछिये महाराज ! ..... हाय ! आज मोह नगरी का सुहाग उजड़ गया है। हमारे सेनाधिपति हमेशा हमेशा के लिए हमें छोड़कर चले गए।

मोहराज :– (दोनों हाथ छाती पर रखते हुए घबराए स्वर में) क्या ? ..... मिथ्यात्व ..... राज .....(मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ते हैं। कुबुद्धिदेवी दौड़कर मूर्छित मोहराज के पास आती है, और "हाय, यह क्या हुआ", कहती हुई मोहराज के चरणों से लिपट जाती है।)

कुबुद्धिरानी :– (रोते हुए) हाय ! यह क्या हुआ ? उठिये पिता श्री ..... हा भैया ! ..... हम सबको छोड़कर तुम क्यों चले गये। तुम्हारे बिना तो हम सब अनाथ हो गए। ..... हा ! मेरे ही कारण मोह-कुल पर यह घोर

विपत्ति आई है। ..... मैं ही मोहपुरी के सर्वनाश का कारण हूँ। ..... हाय ! चेतनराज के परित्याग की शिकायत लेकर मैं पिता श्री के पास आई ही क्यों ? अरे कृतघ्नी चेतनराज ! अरी दुष्टा सुबुद्धि !..... अब तो तुम्हारी छाती ठंडी हो गई ? .....(फूट-फूटकर रोने लगती है। 'हा; भैया .....हा-भैया', कहती हुई मूर्छित हो जाती है। मंत्री, सभासद आदि मोहराज और कुबुद्धिदेवी की मुर्च्छा दूर करने के लिए उपचार करते हैं। कुछ समय उपरान्त मोहराज की मूर्च्छा टूटती है। कुबुद्धिदेवी को मूर्छित देखकर वे विलाप करते हैं।)

मोहराज :– अरे ! हमारी लाड़ली बेटी को क्या हो गया ? ..... (काम कुमार से) काम कुमार ! क्या सचमुच हमारा लाल हमसे बिछुड़ गया। ..... हमें विश्वास नहीं होता। ..... ओह !..... यह कैसा हृदय-विदारक समाचार लाए तुम काम कुमार !..... अब हमारा क्या होगा ? ..... हमारा तो जीवनाधार ही चला गया। सर्वस्व नष्ट हो गया। हाय..... आज हम अनाथ हो गए ! अब कौन मोहवाहिनी-की बागडोर सँभालेगा ? अब कौन चेतन को अनन्त काल तक बंधन में बाँधकर रख सकेगा ? ..... हाय ..... अब क्या होगा ?

(मोहराज पुनः मूर्छित हो जाते हैं। कुछ क्षणों तक सभागृह, में सन्नाटा छा जाता है। थोड़ी देर बाद उनकी मूर्छा टूटती है। वे फिर विलाप करने लगते हैं।)

मोहराज :– हा दुर्दैव ! यह कैसा क्रूर खेल है। अब ..... हम ही जीवित रहकर क्या करेंगे ?

रागराज :– शान्त हों महाराज ! धीरज रखें !

मोहराज :– धीरज रखूं ? मंत्रीवर, आप कहते हैं, कि धीरज रखूँ ? ..... मेरा लाड़ला मुझसे बिछुड गया ..... मेरा जीवन-धन चला गया ..... मोहपुरी के माथे का सिन्दूर मिट गया। ..... और ..... और आप कहते हैं कि मैं धीरज रखूँ ?

रागराज :– धीरज रखना ही होगा स्वामी ! छाती पर पत्थर रखकर भी धैर्य धारण करना होगा। इस दारुण-विपत्ति में आप ही यों विचलित होंगे,

तो हम सबका क्या होगा ? इसमें सन्देह नहीं कि सेनाधिपति के निधन से हमारी अपूरणीय क्षति हुई है। किन्तु हतोत्साहित होकर तो हम अपनी अवशेष शक्ति का भी अपव्यय कर बैठेंगे।

(कुछ क्षणों तक चुप्पी छायी रहती है। मोहराज अपने को प्रकृतिस्थ करते हैं। तब तक कुबुद्धिदेवी की मूर्छा भी टूट जाती है।)

मोहराज :– (प्रकृतिस्थ होकर, काम कुमार से) ..... अब कहो काम कुमार, अचानक यह कैसे हो गया ? हम तो उपशान्तमोहपुर के बाद हुई विजय का हर्षोत्सव मना रहे थे। अकस्मात यह अकल्पित वज्रपात कैसे हो गया ?

काम कुमार:– त्रिभुवनपति ! सम्यक्त्वराज ने चेतनराज का आशीर्वाद लेकर 'क्षायिक महायज्ञ' का अनुष्ठान प्रारंभ किया। अल्प काल में ही यज्ञ कुंड से अनेक प्रकार के दिव्य प्रक्षेपास्त्र उत्पन्न होने लगे। बिना कोई विलंब किये सम्यक्त्वराज ने अव्रतपुर से ही कुंवर मिथ्यात्वराज को लक्ष्य करके इन प्रक्षेपास्त्रों का अचूक प्रयोग करना आरम्भ कर दिया।

उधर मिथ्यापुर में कुंवर मिथ्यात्वराज पहले ही अपनी प्राण प्रिया वीरांगना अनन्तानुबंधी के वियोग से पीड़ित जीवन से हताश हो चुके थे, इस पर सम्यक्त्वराज द्वारा संचालित इन प्रक्षेपास्त्रों ने उन्हें बुरी तरह भयभीत कर दिया। प्रक्षेपास्त्र आकर उनकी वज्रमयी देह को क्षार-क्षार करने लगे। सुरक्षा का कोई उपाय न देख कुंवर श्री ने त्वरित-गति से अपनी अवशेष शक्तियाँ कुंवर मिश्रमोहनीय को अर्पित कर दीं और अगले ही पल ..... हाय ! कैसे कहूँ ? ..... (कंठ रूँध जाता है।)

मोहराज :– रूक क्यों गए काम कुमार ?

काम कुमार :– (रुँधे कंठ से) अगले ही पल स्वामी ..... सम्यक्त्वराज के घातक प्रहारों से उनके प्राण-पखेरू उड़ गए।

मोहराज :– (माथे पर हाथ रखकर) हा दुर्दैव ! ..... (कुछ क्षणों तक चुप्पी छायी रहती है, ... फिर काम कुमार से) मिश्रमोहनीय तो अभी .....

काम कुमार :– नहीं स्वामी ! थोड़े ही अन्तराल में वे भी सम्यक्त्वराज के हाथों वीर गति को प्राप्त हो गए। उन्होंने भी कुंवर मिथ्यात्वराज की तरह अन्त समय में अपनी अवशेष शक्तियाँ कुंवर सम्यक्त्व मोहनीय को अर्पित कर दीं, और वीर गति को प्राप्त हुए।

मोहराज :– ओह ! ..... और सम्यक्त्व मोहनीय ?

काम कुमार :– (आहत स्वर में) कुंवर सम्यक्त्व मोहनीय बड़े जीवट के योद्धा थे स्वामी ! उस समय वे रणक्षेत्र में सम्यक्त्वराज से ही जूझ रहे थे। किन्तु क्षायिक महायज्ञ के कुंड से उत्पन्न हुए दिव्य प्रेक्षपास्त्रों के घातक प्रहारों से, वे भी अपनी रक्षा न कर सके, और अल्पकाल में ही उन्हें भी अपने प्राणों का उत्सर्ग करना पड़ा। उसी समय यज्ञ- कुंड से क्षायिक चक्र की उत्पत्ति हुई। यज्ञ पूरा हुआ। क्षायिक चक्र प्राप्त होने पर सम्यक्त्वराज ने विजय-दर्प में ऐसी हुंकार भरी कि जिसे सुनकर हमारी सेना का हृदय दहल उठा।

मोहराज :– (दुःखी होकर) सब कुछ नष्ट हो गया ! ..... अब क्या होगा ? ..... (माथे पर हाथ रखे चिन्तित मुद्रा में सिंहासन पर बैठ जाता है।)

रागराज :– धैर्य खोने से क्या होगा स्वामी ? ..... (काम कुमार से) कामकुमार, अब हम चेतनराज को अव्रतपुर से तो खदेड़ न सकेंगे, किन्तु अपने सभी सेनानायकों से जाकर कहो कि वे किसी भी युक्ति से ऐसा जतन करें कि शत्रु - सैन्य अव्रतपुर से आगे न बढ़ने पाए !

काम कुमार :– जो आज्ञा मंत्रीवर ! अभी जाता हूँ।

(प्रणाम करके जाता है।)

रागराज :– (मोहराज से) आप विश्राम करें, स्वामी ! बहुत विलंब हो चुका है, आज ..... ।

मोहराज :– अब विश्राम .....

(इतने में एकाएक गुप्तचर कुमन कुमार घायल अवस्था में दौड़ता हुआ आता है, और लड़खड़ाकर गिर पड़ता है। ..... किन्तु शीघ्र ही खड़ा होकर लड़खड़ाते स्वर में)

कुमन कुमार :– त्रिलोकाधिपति ! चेतनराज ने देशव्रतपुर, प्रमत्तपुर, अप्रमततपुर पर विजय प्राप्त कर ली है, और अब पर्वत श्रेणी के नगरों पर आक्रमण करने को उद्यत हैं। हमारे असंख्य शूरवीर योद्धा वीर गति को प्राप्त हुए, असंख्य ही बुरी तरह घायल हो गए। शेष इतने भयभीत और हताश हैं कि रणक्षेत्र में उन्मत्त-से अपने प्राणों की रक्षा के लिए यहाँ- वहाँ दौड़-भाग कर रहे हैं।

मोहराज :– (क्रोधित होकर) लगता है कि फिर से चेतनराज को उसके दुष्कृत्यों का फल चखाना होगा।

रागराज :– क्षमा करें स्वामी ! मैं नहीं सोचता कि चेतनराज अबकी बार कोई भूल करेंगे। बहुत संभव है कि इस बार वे क्षपक-श्रेणी के ही नगरों पर आक्रमण करें। इसलिए उनके .... ।

(तभी अकस्मात मेघों का भयावह गर्जन होता है। व्योम मंडल में बिजलियाँ कड़कती हैं। मोहपुरी की धरती हिलने लगती है। मोहराज सिंहासन से नीचे गिर पड़ते हैं। सभी लोग धरती पर लोटने लगते हैं। नैपथ्य से "बचाओ-बचाओ हाय मरे" —— अरे कोई बचाने वाला नहीं। ——— हाय" —— ऐसे स्वर सुनाई पड़ते हैं। तभी सेनानायक वेदनीय दौड़ता हुआ आता है।)

वेदनीय :– प्रलय, महाराज ! ——— महाप्रलय ! ——— ओह ! कैसी भीषण अग्नि ? ——— समूची मोहपुरी जल रही है। ——— रक्षा का कोई उपाय नहीं। —— बचाइये महाराज ! —— चेतनराज की सेना ने भीषण उत्पात मचा रखा है।

मोहराज :– (लड़खड़ाते स्वर में) यह —— यह क्या हुआ —— सेनानायक वेदनीय ?

वेदनीय :– महाराज ! चेतनराज ने क्षपक-श्रेणी के नगरों पर चढ़ाई कर दी। अपूर्वकरणपुर और अनिवृत्तिकरणपुर पर विजय प्राप्त करके अब वे सूक्ष्मसांपरायपुर की ओर बढ़ रहे हैं। इस भीषण संग्राम में कुंवर अप्रत्याख्यानावरण और कुंवर प्रत्याख्यानावरण अपने सभी महासुभटों सहित

मारे गए। मोह कुल की हास्य, रति आदि सभी किशोर बालाएँ और कुंवर संज्वलन के क्रोध, मान और माया ये तीन महासुभट भी, अन्य सेनानायकों के १६ महासुभटों सहित काल कवलित हो गए। कुंवर संज्वलन के महासुभट लोभ कुमार भी मरणासन्न दशा में है। ..... स्वामी। चारित्रवीर के शुक्ल-ध्यानाग्नि शरों से मोहवाहिनी निःशेष हो चली है। मोहपुरी भी जलकर नष्ट प्रायः हो चुकी है। कुछ कीजिये त्रिलोकाधिपति ! ..... कुछ ..... ।

(तभी कुछ अग्नि बाण मंच पर आते हैं। इससे सभासदों में भगदड़ मच जाती है। बाण लगने से सभी एक-एक कर जलकर गिरने लगते हैं। मंच पर हाहाकार मच जाता है। तभी कुछ बाण एक साथ मंत्री द्वय और मोहराज को लगते हैं। इससे वे भी जलते हुए भूमि पर गिर पड़ते हैं। सेनानायक वेदनीय हाहाकार करता हुआ मंच से एक ओर चला जाता है। तभी पार्श्वध्वनि होती है।)

"चारित्रवीर के ध्यानाग्नि शरों से समूची मोहपुरी जलकर नष्ट हो चुकी है। मोहराज भी अपने परिजनों सहित पृथक्त्व वितर्क वीचार जाति के ध्यानाग्नि-शरों से जलकर भस्म हो गए। चेतनराज ने आगे बढ़कर क्षीण मोहपुर पर अपना अधिकार जमा लिया।"

(तभी नैपथ्य से उँचे स्वर में "महाराज चेतनराज की जय" का विजय-नाद सुनाई पड़ता है।)

— पटाक्षेप —

(छठवाँ-दृश्य)

[सयोगकेवलीपुर में एक उद्यान का दृश्य। मोहराज के सेनानायक आयु, नाम, गोत्र और वेदनीय परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं। सभी सैनिक वेषभूषा में।]

वेदनीय :– उफ ! कैसी भीषण अग्नि थी। सब कुछ स्वाहा हो गया। मोहपुरी जलकर भस्म हो गई। स्मरण करते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

गोत्र :– सच कहते हैं आप। मोहपुरी की प्रजा का हृदयवेधी आर्त्तनाद अभी भी मेरे कानों में गूंज रहा है। .....उफ ! चारित्रवीर ने ध्यानाग्नि – शरों से कैसी घनघोर वर्षा की। .....कोई नहीं बच पाया। क्षपक श्रेणी के नगरों में चारित्रवीर का युद्ध कौशल देखते ही बनता था। एक लोभ कुमार ने अवश्य अन्तिम श्वाँस तक सूक्ष्मसांपरायपुर में शत्रु-सैन्य से घोर संघर्ष किया। किन्तु अन्त में वह भी चारित्रवीर के सूक्ष्मसांपराय जाति के शरों से अपनी रक्षा न कर सका, और जीवन से हाथ धो बैठा। लोभ कुमार के निःशेष होते ही समूची मोहपुरी धू-धू कर जल उठी। स्वयं महाराज मोहराज पृथक्त्व–वितर्क वीचार जाति के शरों से जलकर भस्म हो गए।.... उफ ! कैसा करुण अन्त हुआ ?

आयु :– (निःश्वास भरकर) महाराज मोहराज ! ..... तीन लोक के अधिपति !! और अन्त समय कोई जल की बूंद भी देने वाला न रहा। ..... (निःश्वास भरता है .....। फिर कुछ स्मरण करता हुआ वेदनीय से).....कुंवर सुकृतकुमार का क्या हुआ ?

वेदनीय :– (निःश्वास लेकर) सूक्ष्मसांपरायपुर में उसका भी करुण अन्त हो गया।

नाम :– (साश्चर्य) क्या ? ..... किन्तु वे तो ज्ञानदेव की दृष्टि से ओझल..... ।

वेदनीय :– (बीच ही में बात काटते हुए) हुआ यह कि अप्रमत्तपुर से सूक्ष्मसांपरायपुर के अन्त तक ज्ञानदेव की दृष्टि से ओझल रहकर बड़ी युक्ति से वह चारित्रवीर के ध्यानाग्नि शरों से अपनी रक्षा करने का जी-तोड़ श्रम करता रहा। इस अवधि में उसने भरसक चेष्टा की कि उसे चेतनराज का

अनुराग प्राप्त हो जाये, किन्तु ज्ञानदेव और चारित्रवीर के पराक्रम ने उसकी सारी चेष्टाएँ विफल कर दीं। विचित्र विडम्बना थी। एक ओर तो चारित्रवीर के भीषण आक्रमण से उसकी देह प्रतिपल क्षीण होती जा रही थी, और दूसरी ओर चेतनराज की निकटता से उसका अन्तर-बल क्षण-प्रतिक्षण बढ़ता जा रहा था। ..... किन्तु वह बुझते दिये की बढ़ी हुई लौ थी। काल मुँह बांए सामने खड़ा था।..... (गला भर आता है, बोला नहीं जाता। नेत्र सजल हो जाते हैं। कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा जाता है। फिर भरे गले से आहत स्वर में.....) बन्धुओं, एक बात तो है कि वह धुन का बड़ा पक्का था।

गोत्र :– आप.....आपका तात्पर्य ?

वेदनीय :– (आँसू पोंछता हुआ) सूक्ष्मसांपरायपुर में जब लोभ कुमार ने उससे चेतनराज का संसर्ग छोड़ देने का अनुरोध किया, तब दृढ़तापूर्वक दो टूक उत्तर देते हुए उसने कहा था..... "मैंने आजीवन चेतनराज के संग रहने की प्रतिज्ञा की है। मृत्यु का आलिंगन भी करना पड़े तब भी मैं प्रतिज्ञा भंग नहीं करूँगा। निर्लज्ज और कायर कहलाकर जीवित रहने की अपेक्षा कर्त्तव्य की बलि वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर देना मैं अधिक गौरवयुक्त मानता हूँ।" ..... और ..... थोड़े अन्तराल पश्चात ही चारित्रवीर के ध्यानाग्निशरों से..... (सिसकने लगता है। कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा जाता है।)

गोत्र :– (मौन तोड़ते हुए) कुंवर – श्री मोहकुल के गौरव थे। अपने बलिदान से उन्होंने मृत्यु को भी गौरवान्वित होने का दुर्लभ अवसर प्रदान किया। ..... (कुछ ठहरकर, फिर स्मरण-सा करते हुए) हमारे वरिष्ठ सेनानायक ज्ञानावरण, दर्शनावरण आदि भी तो..... ।

वेदनीय :– (बीच ही में) उनका भी प्राणान्त..... ।

गोत्र :– (बात काटकर, लगभग चीखता हुआ आश्चर्य के स्वर में) क्या ? उनका भी प्राणान्त..... ।

वेदनीय :– हाँ ! महाराज मोहराज का दुःखद अवसान होते ही चेतनराज ने शीघ्र ही क्षीण मोहपुर पहुँचकर अपना एक छत्र आधिपत्य जमा लिया। वहाँ उनकी अनेक सुषुप्त शक्तियाँ मानों जाग उठीं। ज्ञानदेव, दर्शन श्री और

वीर्यवर ने सोल्हास सेनानायक ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय को लक्ष्य बनाकर प्रचण्ड धावा बोल दिया। भीषण युद्ध हुआ। चारित्रवीर का पराक्रम पूरी पराकाष्ठा पर था। उन्होंने यथाख्यात जाति के दिव्य आभा वाले तीक्ष्ण बाणों से समूचा रण-क्षेत्र ही पाट दिया। अन्तर्मुहूर्त काल में ही ज्ञानदेव ने सेनानायक ज्ञानावरण को, दर्शनश्री ने सेनानायक दर्शनावरण को, और वीर्यवीर ने सेनानायक अन्तराय को मृत्यु के मुख में पहुँचा दिया और तत्क्षण ही चेतनराज ने परिजनों सहित ससैन्य सयोगकेवलीपुर में प्रवेश किया। यहाँ नौ क्षायिक लब्धियों ने उनकी भावभीनी अगवानी की और वे "अरिहन्त" पद में प्रतिष्ठित हुए।

गोत्र :– (माथे पर हाथ रखकर हताश स्वर में) ओह ! अब हम ही जीवित रहकर क्या करेंगे ?

वेदनीय :– (निःश्वास लेकर) जब तक जीवन शेष है, जीवित तो रहना होगा। इसके सिवा कोई चारा नहीं।

(कुछ क्षणों तक सभी मौन रहते हैं)

आयु :– (मौन तोड़ते हुए) सयोगकेवलीपुर में केवल चेतनराज ही दिखाई पड़ते हैं। ज्ञानदेव, दर्शनश्री, चारित्रवीर आदि दृष्टिगोचर नहीं होते, कहाँ रह गए वे ?

वेदनीय :– यहीं हैं। जहाँ चेतनराज हैं, वहीं उनके ये सब परिजन भी हैं..... (कुछ ठहरकर) ..... मित्रों, सयोगकेवलीपुर में ज्ञानदेव, चारित्रवीर, दर्शनश्री सहित चेतनराज के लगभग सभी परिजनों की अनन्त-अनन्त शक्तियाँ प्रगट हो चुकी हैं। अपनी अनन्तानन्त शक्तियों को समेटे, चेतनराज के ये परिजन उनसे मिलकर परस्पर इतने अभिन्न, अखिन्न और एकाकार-एकरूप हो चुके हैं कि इनमें अब कोई भेद ही नहीं रह गया है।..... (कुछ विचार-सा करते हुए) और बन्धुओं..... इनमें भेद कभी था भी नहीं।

गोत्र :– (आश्चर्य से) भेद कभी था नहीं ? ..... और जो दिखाई पड़ता था।

वेदनीय :– वह मात्र महाराज मोहराज की कूटनीति का चमत्कार था ।......... (कुछ ठहरकर, फिर एकाएक)......... और हाँ, एक बात तो मैं विस्मृत ही कर गया? .... सेनानायक ज्ञानावरण के निःशेष होते ही ज्ञानदेव की आयुधशाला में कोटि-कोटि दिवाकरों से भी अनन्त-गुना तेजस्वी कैवल्य-चक्र उत्पन्न हुआ था । कैवल्य-चक्र का आलोक इतना प्रखर है कि इसके प्रकाश में सम्पूर्ण लोकालोक अपने अतीत, वर्तमान और अनागत सहित प्रति समय चेतनराज को दर्पण में पड़ने वाले प्रतिबिम्ब की भाँति प्रत्यक्ष - प्रगट दृष्टिगोचर होने लगा है । यह देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी अदृश्य चित्रकार ने अपनी भव्य तूलिका से सम्पूर्ण चराचर को ही उनके स्वच्छ हृदय-पटल पर चित्रित कर दिया हो । अथवा तो समूचे ब्रह्माण्ड ने चेतनराज के अन्तःकरण को ही अपना निवास-स्थल बना लिया हो । जगत में अब ऐसा कोई रहस्य नहीं कि जिससे वे अनवगत हों । उनके लिए अब सब कुछ प्रगट है, प्रत्यक्ष है ।

गोत्र :– चेतनराज स्वयं क्या करते हैं ?

वेदनीय :– परिजनों सहित निर्लिप्त भाव से सुख-सागर में निमग्न रहकर निरन्तर ही वीतराग - निर्विकल्प अतीन्द्रिय आनन्दामृत का मधुर रसपान किया करते हैं ।

गोत्र :– क्या उनके मुक्तिपुरी पहुँचने का अभियान अभी भी जारी है ?

वेदनीय :– (सूखी हँसी हँसकर) मुक्तिपुरी तो वे पहुँच ही चुके समझो । मात्र कुछ औपचारिकताएँ शेष हैं ।

नाम :– कैसी औपचारिकताएँ ? .... उनके पूरी होने में किस बात की कमी रह गई है ?

वेदनीय :– (निः श्वास भरकर) .... हमारे अवसान की ।

(कुछ क्षणों तक सभी मौन रहते हैं)

नाम :– (मौन तोड़ते हुए, कुछ उत्साहित सा) क्या यह बात कम महत्त्व की है कि हमारे जीवित रहते, चेतनराज का मुक्तिपुरी पहुँचना संभव नहीं । ....

इसमें सन्देह नहीं कि हमारी शक्ति का मूल स्रोत सूख चुका है। हमारे जीवनाधार, हमारे सर्वस्व महाराज मोहराज आज हमारे बीच नहीं हैं। किन्तु इससे हम हताश होने वाले नहीं। श्वाँस रहते, जीवन के अन्तिम क्षण तक चेतनराज से संघर्ष करते रहेंगे। मृत्यु तो कभी न कभी होनी ही है, पर उसका वरण हम कायरता से नहीं, वीरता से करेंगे।

वेदनीय :- (सेनानायक नाम से) बंधुवर, संकट की इन घड़ियों में आपका अदम्य साहस श्लाघ्नीय है। ..... किन्तु जो यथार्थ है, उसे भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। कैवल्य चक्र का प्रखर आलोक ऐसी चकाचौंध उत्पन्न कर रहा है कि हमें कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। आँखें चौंधिया जाती हैं। ऐसे में शत्रु पर किया गया हमारा प्रत्येक वार विफल होता जा रहा है। विडम्बना की बात तो यह है कि अब हमारे वीर योद्धा ही स्वयं प्रणत-भाव से चेतनराज का अभिवादन-सा करते दृष्टिगोचर हो रहे हैं। कोई उनके चरणों के समीप झुका हुआ है, तो कोई उनकी प्रदक्षिणा करता दिखाई दे रहा है। मुझे स्वयं उनके चारों ओर भव्य समवशरण सभा की रचना करनी पड़ी है। अष्ट-मंगल, अष्ट प्रातिहार्य जैसे दिव्य अतिशय जुटाने को बाध्य होना पड़ा है।

आयु :- मेरे भी तीन महासुभट नरकायु कुमार, तिर्यंचायु कुमार और देवायु कुमार तो अपने असंख्य सैनिकों सहित पहले ही वीर गति पा चुके हैं। रहा महासुभट मनुष्यायुकुमार, सो वह भी चेतनराज के समागम को अपना सौभाग्य मानने लगा है।

नाम :- (दबे स्वर में) ऐसी ही कुछ विवशता मेरे साथ भी है। मेरे ९३ महासुभटों में से १३ तो पूर्व में ही दिवंगत हो चुके हैं। जो जीवित हैं, उनमें से कुछ तो मानों पक्षाघात से पीड़ित हों, ऐसे निपट निष्क्रिय पड़े हुए हैं, और जो रणक्षेत्र में हैं वे भी अपना अवशेष जीवन अब चेतनराज की सेवा में व्यतीत करने में अपनी कुशल मानने लगे हैं। चेतनराज के संयोग में गगन - गमन, मुक्त्याभाव, चतुरास्यत्व, अच्छायत्व, सर्वार्ध मागधी भाषा, परम औदारिक शरीर आदि अनेक प्रकार के अनुपम अतिशय इसी का फल हैं।

गोत्र :– यही दशा मेरे योद्धाओं की भी है, किन्तु ..... (सेनानायक वेदनीय से) बन्धुवर , ये अनेक प्रकार के दिव्य एवं अनुपम अतिशय तो दिवंगत कुंवर सुकृत कुमार के कृत्यों के ही फल हैं न ?..... फिर इनका लाभ तो हमें प्राप्त होना चाहिए।

वेदनीय :– अवश्य होना चाहिए , और लाभ प्राप्त होता भी । वस्तुतः तो ये हमारे शस्त्रास्त्र ही हैं । किन्तु महाराज मोहराज के अभाव में ये चेतनराज का किसी भी प्रकार का अनिष्ट करने का सामर्थ्य नहीं रखते । इसी कारण अब इनसे हमें कोई लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

गोत्र :– (खिन्नतापूर्वक निराश स्वर में) ओह ! जब हमारे शस्त्रास्त्र ही चेतनराज के गले का हार बनते जा रहे हैं तो अब हम किससे आशा करें ? ..... हा दुर्दैव !..... कैसे दुर्दिन देखने पड़ रहे हैं । अब तो यह जीवन ही भार स्वरूप प्रतीत होने लगा है ।.....(सेनानायक आयु से) बंधुवर आप ही कोई उपाय करें । निराशा और हीनता का परिताप अब और नहीं सहा जाता ।

नाम :– (सेनानायक गोत्र से) बहुत अधीर हो रहे हो बंधु ! मत भूलो कि हम त्रिभुवनपति महाराज मोहराज के सेनानायक हैं । ऐसी दीनता हमें शोभा नहीं देती । अभी भी जब तक बंधुवर सेनानायक आयु जीवित हैं, हम करोड़ों वर्षों तक भी चेतनराज को मुक्तिपुरी पहुँचने से रोक सकते हैं ।

गोत्र :– (व्यंग से) ताकि हमें वर्षों तक चेतनराज की सेवा का सुअवसर और प्राप्त हो जाय ?

वेदनीय :– (समझाते हुए) परस्पर विवाद में उलझने से क्या लाभ ? हमारे लिए तो..... ।

(तभी नैपथ्य से "चैतन्य मूर्ति भगवान चेतनराज की जय" का जयघोष सुनाई पड़ता है । जय जयकार का यह स्वर क्षण-प्रतिक्षण तेज होता जाता है । चारों सेनानायक घबराते हुए, मंच से गिरते-पड़ते भाग जाते हैं । तभी पार्श्व में अरिहन्त दशा का छायाचित्र दिखाई पड़ रहा है । "ओम" की ओंकार ध्वनि सुनाई पड़ती है । शनैः शनैः ओंकार ध्वनि का स्वर तेज होता जाता है । बार-बार "ओम-ओम" की मंगल-ध्वनि सुनाई दे रही है । ____ पार्श्व भाग में समवशरण-सभा का दृश्य दृष्टिगोचर होता है । ____ओंकार ध्वनि अविराम चल रही है ।)

— पटाक्षेप —

(सातवाँ-दृश्य)

[सेनानायक वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र सैनिक वेशभूषा में सयोगकेवलीपुर के उपवन में। सभी घबराए हुए, चिन्तित एवं क्षीणकाय दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सभी के मुख मण्डल म्लान हैं, वस्त्राभूषण अस्त-व्यस्त हैं।]

सेनानायक गोत्र :– (आर्त्त स्वर में) ओह ! अब तो कैवल्य-चक्र का प्रखर ताप हमारे लिए असह्य होता जा रहा है। समूची देह ही झुलस गई है। मुख-मण्डल मलिन पड़ गए हैं। शक्ति भी क्षण-प्रतिक्षण क्षीण और क्षीणतर होती जा रही है।

सेनानायक आयु :– (शोकातुर होते हुए) ठीक कहा आपने बंधुवर ! हम पूर्णतः असहाय हो चुके हैं। इस दयनीय दशा से छुटकारे का तो अब एक ही उपाय शेष रह गया है,..... मृत्यु का आलिंगन।

सेनानायक वेदनीय :– (निराश स्वर में) किन्तु वह भी तो हमारी इच्छानुसार संभव नहीं।

सेनानायक गोत्र :– (हताश होकर)..... तो अब क्या किया जाए ?

(कुछ समय तक सन्नाटा छाया रहता है..... तभी नैपथ्य में "ओम" ..... "ओम" ..... "ओम" की ओंकार ध्वनि सुनाई पड़ती है।)

सेनानायक गोत्र :– (सेनानायक नाम से) बंधुवर ..... सुना आपने ! ..... कैवल्य चक्र के आलोक से जगमगाती समवशरण-सभा में खिरती इस निरक्षरी ओंकार ध्वनि को ? ..... उसमें मोहकुल के समूल नाश और मुक्तिपुरी पहुँचने का "उपाय" ध्वनित हो रहा है।..... ('उपाय' शब्द पर विशेष बल देता है।)

सेनानायक आयु :– और इसी से यह निरक्षरी वाणी लोक में "दिव्य-ध्वनि" के नाम से प्रसिद्धि पा रही है।

सेनानायक नाम :– (आर्त्त स्वर में) ओह ! अब तो मैं भी हताश हो चुका बन्धुओं ! ..... कैसी विडम्बना है।..... (रुंधे कण्ठ से) यह

ओंकार-ध्वनि ..... हमारा ही उपक्रम ..... और हमारे ही सर्वनाश का मार्ग प्रशस्त करे। ..... हा दुर्दैव !..... अब तो हृदय में एक ही कामना है..... मृत्यु ..... केवल मृत्यु।

(इसी समय नैपथ्य में चीत्कार भरा हाहाकार सुनाई पड़ता है।)

सेनानायक वेदनीय :- सुनो-सुनो, ऐसा प्रतीत होता है कि चेतनराज ने सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाति जाति के ध्यानाग्नि शरों से हमारे अवशेष योद्धाओं की असंख्य भाग प्रमाण शक्ति नष्ट कर दी है।..... और..... अरे ! (आश्चर्य मिश्रित भय से) .....यह क्या हो रहा है ..... ?

(सभी ऐसा अनुभव करते हैं मानो वे किसी अदृश्य शक्ति से खिंचे चले जा रहे हों।)

सेनानायक आयु :- (घबराए स्वर में) हम ..... हम बरबस कहाँ खिंचे चले जा रहे हैं ..... लगता है कि अब हमारा काल सन्निकट ही है।

(अनायास ही चारों सेनानायक दर्द से कराहने लगते हैं) ओह.....ओह ! आह..... हाय ! कहते और लड़खड़ाते हुए एक ओर को चले जाते हैं। तभी मंच का दूसरा परदा उठता है जहाँ अयोगकेवलीपुर का सुरम्य उद्यान दृष्टिगोचर हो रहा है। तत्क्षण ही नैपथ्य से सामूहिक हाहाकार और भारी आर्त्तनाद सुनाई पड़ता है। इसी समय पार्श्व-ध्वनि सुनाई देती है।)

"अयोग केवलीपुर पहुँचते ही चेतनराज अठारह हजार प्रकार के शील एवं ८४ लाख उत्तर गुण-रत्नों से विभूषित हो गये। उन्होंने व्युपरत क्रिया निवर्त्ति ध्यान से योग निरोध किया और त्रिगुप्ति के बल पर मोहराज के अवशेष चारों सेनानायकों सहित उपान्त समय में प्रथम ७२ और अन्त में १३ ऐसे उनके ८५ योद्धाओं को ससैन्य काल कवलित कर दिया। सेनानायक वेदनीय, गोत्र, नाम और आयु के निःशेष होने पर चेतनराज क्रमशः अव्याबाधत्व, अगुरु-लघुत्व, अवगाहनत्व और सूक्ष्मत्व इन चार विशिष्ट गुणों के स्वामी हो गए। दूसरे ही क्षण वे मुक्तिपुरी पहुँचे, जहाँ चिरकाल से प्रतीक्षारत मुक्ति-सुन्दरी ने वरमाला पहिनाकर उनका हृदय से वरण किया और वे "सिद्ध" पद में प्रतिष्ठित हुए।

इस प्रकार चेतनराज ने सम्पूर्ण मोहवंश को निर्मूल करके त्रिलोक अभिनंदनीय मोक्ष पद प्राप्त किया और त्रिकाल वंदनीय सिद्ध परमात्मा बने।"

(तभी मंच के पार्श्व में सिद्धालय का छायाचित्र दृष्टिगोचर होता है। सिद्ध शिला पर सिद्ध परमात्मा विराजमान हैं और निरन्तर "ओम नमः सिद्धेभ्यः" ____ "ओम नमः सिद्धेभ्यः" की मंगल-ध्वनि सुनाई पड़ती है।____)

— पटाक्षेप —

॥ समाप्त ॥

शुद्धात्मा के ध्येय से सिद्ध जैसा आनन्द

बाहर के संयोग-वियोग में हर्ष-शोक कर उसके वेदन में अज्ञानी ऐसा मूर्छित होता है कि उससे भिन्न निज आत्मा का अस्तित्व ही भूल जाता है। तनिक प्रतिकूलता का दबाव आने पर ऐसा दब जाता है कि मानो आत्मा खो ही गया, किन्तु अरे भाई ! ऐसे संयोग-वियोग या हर्ष-शोक सिद्ध भगवान को नहीं होते, नीचे की दशा में होते हैं। परन्तु वे होने पर भी, "मैं तो उनसे भिन्न ज्ञान स्वभावी सिद्ध समान हूँ" — इस प्रकार शुद्ध आत्मा को ध्येय रूप रखकर उसकी ओर झुकाव कर तो तेरा परिणमन सिद्ध-दशा की ओर हुआ करे और सिद्ध भगवान जैसे अतीन्द्रिय आनन्द का वेदन विकसित होता जाए।

– पूज्य श्री कानजी स्वामी
आत्मधर्म – जुलाई १९९४